कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय

सेतु पाठ्यक्रम

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में दाखिला लेने वाली बालिकाओं के लिए

हिंदी



जेंडर अध्ययन विभाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110016

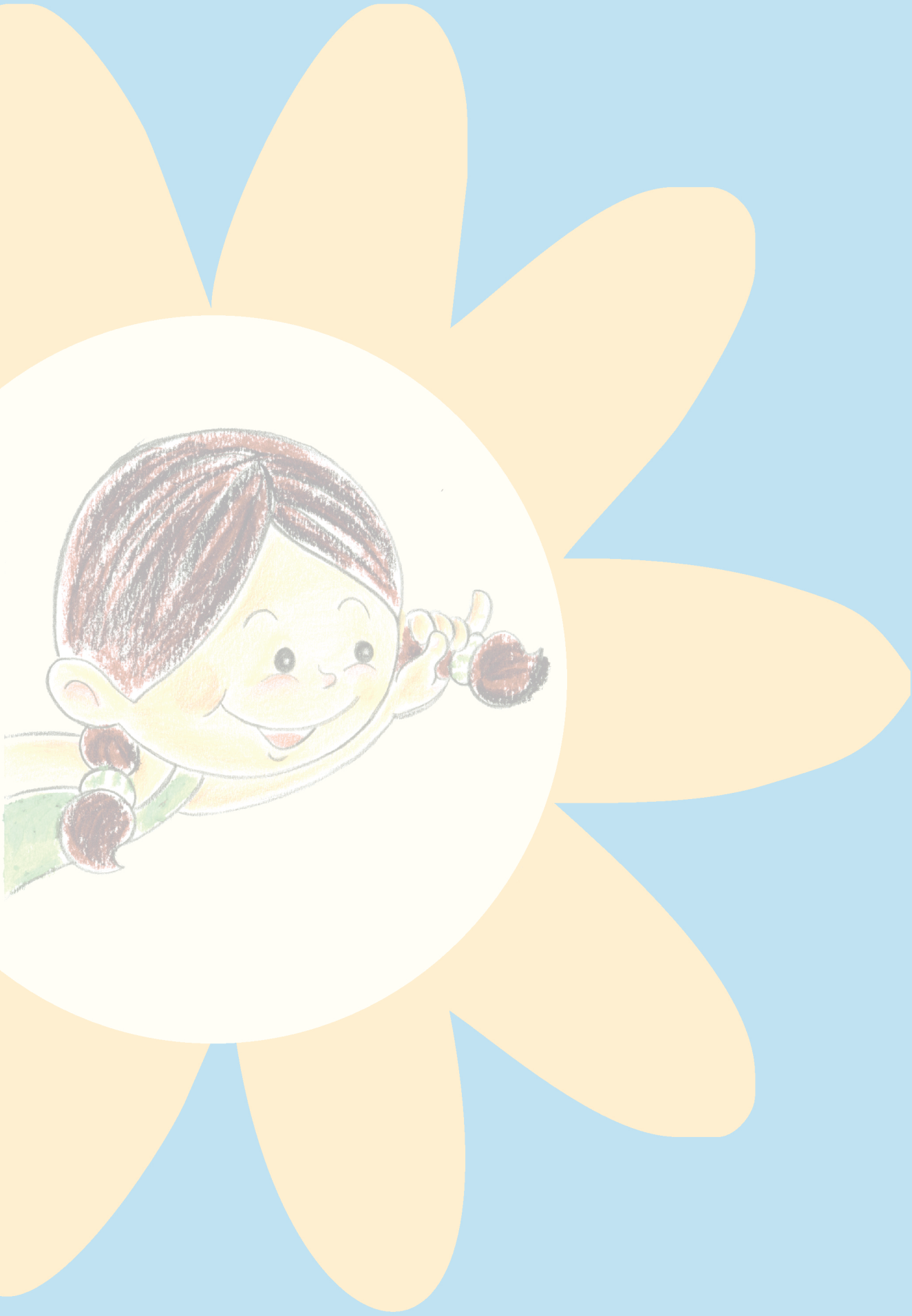

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय

सेतु पाठ्यक्रम

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में दाखिला लेने वाली बालिकाओं के लिए

हिंदी





कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय
सेतु पाठ्यक्रम

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में दाखिला लेने वाली बालिकाओं के लिए

हिंदी



जेंडर अध्ययन विभाग

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

Department of Gender Studies

जेंडर अध्ययन विभाग

एन सी ई आर टी NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



ISBN 978-93-5007-212-7

प्रथम संस्करण

अगस्त 2012 भाद्रपद 1934

पुनर्मुद्रण

फरवरी 2019 फाल्गुन 1940

PD 3T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2012

₹ 150.00

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी,फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम. सिराज अनवर*

मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*

मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अबिनाश कुल्लु*

उत्पादन अधिकारी : *अब्दुल नईम*

आवरण एवं चित्रांकन

ब्ल्यू फिश

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली -110 016 द्वारा प्रकाशित तथा एजुकेशनल स्टोर्स, एस-5, बुलंदशहर रोड इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-I (नज़दीक आर.टी.ओ. ऑफ़िस) गाज़ियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में कहा गया है कि समानता के लिए शिक्षा का एक अनिवार्य कार्य यह है कि सभी सीखने वालों को अपने अधिकारों का दावा करने के साथ ही समाज और राज्यव्यवस्था में योगदान देने हेतु सक्षम बनाएँ। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि अधिकारों और विकल्पों का उपयोग तब तक नहीं किया जा सकता, जब तक कि मूलभूत मानव क्षमताएँ पूरी तरह से विकसित नहीं होतीं। इसलिए अगर हम चाहते हैं कि विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले सभी शिक्षार्थी, विशेषरूप से लड़कियाँ अपना अधिकार प्राप्त करें और सामूहिक जीवन को रूप देने में सक्रिय भूमिका निभाएँ तो उन्हें ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए, जो उन्हें असमान समाजीकरण से हुई हानियों से उबरने की शक्ति दे और उन्हें समानता प्राप्त नागरिक बनने की क्षमताओं का विकास करने के योग्य बनाए।

बालिकाओं को शिक्षा के दायरे में लाना प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के प्रयासों के मूल में रहा है। सर्वशिक्षा अभियान प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का एक राष्ट्रीय अग्रणी कार्यक्रम है, जिसमें लड़कियों, विशेषरूप से वंचित समूहों की लड़कियों को स्कूलों में लाने के विशिष्ट प्रयासों और प्राथमिक स्तर पर शिक्षा में लड़के–लड़कियों की संख्या में असमानता को पाटने की आवश्यकता को समझा गया है। इस संबंध में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी.) की स्थापना की। यह भारत सरकार की नवाचारी और आशाजनक पहल है, जिसका लक्ष्य उन ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों में शिक्षा से वंचित और उपेक्षित लड़कियों का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास करना है, जो इस अभाव को झेल रही हैं। सन् 2004 में एक योजना के रूप में प्रारंभ होकर सन् 2007 में यह सर्वशिक्षा अभियान का एक भाग बन गई। वर्तमान में यह देश के चौबीस राज्यों और एक संघ क्षेत्र में चल रही है।

यह सेतु पाठ्यक्रम मुफ़्त और अनिवार्य शिक्षा के लिए बच्चों के अधिकार के अधिनियम 2009 में बताए गए कुछ सरोकारों को व्यक्त करने में एक महत्वपूर्ण चरण है, विशेषरूप से यह सुनिश्चित करने के संदर्भ में कि निर्बल वर्गों और वंचित समूहों के बच्चों के साथ कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए और उन्हें प्रारंभिक शिक्षा को पूरा करने और उसके लिए पाठ्यसामग्री प्रदान करने से नहीं रोका जाना चाहिए।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा 11–12 अगस्त 2008 को पिछले कुछ वर्षों में के.जी.बी.वी. योजना जनित अनुभवों को बाँटने के लिए एक राष्ट्रीय परामर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस परामर्श कार्यक्रम में विभिन्न अकादमिक क्षेत्रों के विद्वान एक स्थान पर मिले। इस परामर्श कार्यक्रम में के.जी.बी.वी. में प्रवेश पाने वाली लड़कियों के लिए सेतु पाठ्यक्रम और के.जी.बी.वी. शिक्षकों के लिए कौशल को उन्नत बनाने हेतु एक समूह–विशिष्ट शिक्षक प्रशिक्षण पैकेज विकसित करने की पूरी अनुशंसा की गई। इस पृष्ठभूमि में महिला (अब जेंडर) अध्ययन विभाग ने एन.आई.ई. के पाठ्यचर्या संबंधी विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों और अन्य संस्थानों के विशेषज्ञों के सहयोग से अंग्रेज़ी, हिंदी, भूगोल, इतिहास, विज्ञान एवं गणित में सेतु पाठ्यक्रम और शिक्षक प्रशिक्षण पैकेज विकसित करने की पहल की। यह सामग्री एन.सी.एफ.–2005 को ध्यान में रखकर विकसित की गई है और यह एन.सी.ई.आर.टी. की प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है।

यह सेतु पाठ्यक्रम एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा उन बालिकाओं की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने की एक अग्रणी पहल है, जो पढ़ाई छोड़ देने के दो अथवा अधिक वर्षों के अंतराल के बाद विद्यालय में पुनः प्रवेश लेती हैं। इस पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के संदर्भों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल और हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं के सेतु पाठ्यक्रम में दिए गए शैक्षिक उपागमों में सरल भाषा के उपयोग के साथ भागीदारी वाले क्रियाकलापों का उपयोग किया गया है, जिन्हें विभिन्न कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है। सेतु पाठ्यक्रम को एक पाठ्यक्रम के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। इसका उपयोग क्रियाकलापों को संदर्भ के अनुसार अनुकूलित करने, कार्यपत्रिका बनाने, परियोजना कार्य आदि में किया जा सकता है जो उनके शैक्षिक उपागमों को समृद्ध करेगा। इस सामग्री को के.जी.बी.वी. की बालिकाओं की आवश्यकताओं के अनुसार अपनाया और अनुकूलित किया जा सकता है। साथ ही यह सामग्री एक विकासशील उपागम और एक सृजनशील प्रक्रिया के रूप में काम करेगी।

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, पूर्व निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. के निर्देशन और मार्गदर्शन के बिना महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.) इस प्रयास को आगे नहीं बढ़ा सकता था, उन्होंने के.जी.बी.वी. योजना की बालिकाओं की शैक्षिक चुनौतियों को संबोधित करने में वर्तमान सेतु पाठ्यक्रम के महत्त्व की परिकल्पना की थी।

हम समीक्षा समिति की अध्यक्ष डॉ. शारदा जैन, निदेशक, *संधान*, जयपुर और अन्य सदस्यों सिस्टर सबीना, पूर्व राज्य परियोजना निदेशक, महिला समाख्या सोसायटी, पटना, बिहार; सुश्री सीमा भास्करन, राज्य परियोजना निदेशक, महिला समाख्या सोसायटी, केरल और सुश्री अमुक्ता महापात्र, निदेशक, स्कूल स्केप, चेन्नई द्वारा की गई सुविज्ञ समीक्षा और दिए गए सुझावों के लिए उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं। हम मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा गठित मूल्यांकन समूह के सदस्यों सुश्री सरिता मित्तल, निदेशक, ई.ई.8., सुश्री किरण डोगरा, परामर्शदाता जेंडर, *एडसिल* और सुश्री दीप्ता भोग, निदेशक, *निरंतर*, दिल्ली के प्रति उनके संशोधनों और सुझावों हेतु आभारी हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. अपने उत्पादों की गुणवत्ता में क्रमबद्ध सुधार करने और उसे निरंतर उन्नत बनाने के लिए संकल्पबद्ध है। हम इस विषय में उन सभी टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत करेंगे जिनसे हमें संशोधन और परिष्करण में सहायता मिले।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
मार्च 2010

प्राक्कथन

कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय (के.जी.बी.वी.) की लड़कियों के लिए सेतु पाठ्यक्रम का विकास एन.सी.ई.आर.टी. की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के मार्गदर्शी सिद्धातों को ध्यान में रखकर किया गया है, जो किताबी ज्ञान की उस विरासत से अलग है, जो आज भी हमारी व्यवस्था को आकार दे रही है तथा स्कूल, घर और समुदाय के बीच अंतराल बनाए हुए है। विभिन्न विषय क्षेत्रों, जैसे–अंग्रेज़ी, हिंदी, इतिहास, भूगोल, विज्ञान और गणित में यह सामग्री एन.सी.ई.आर.टी. की प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है। सेतु पाठ्यक्रम के ये सभी विषय-क्षेत्र के.जी.बी.वी. की लड़कियों के अधिगम कौशलों को बढ़ाने में सहायता करेंगे और उन्हें उच्च प्राथमिक स्तर में प्रवेश के लिए तैयार करेंगे। सेतु पाठ्यक्रम के.जी.बी.वी. बालिकाओं को प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्तर तक उनके शैक्षिक विकास हेतु पर्याप्त मार्ग उपलब्ध कराएगा। इसके अंतर्गत कक्षा में अन्वेषण और रचनात्मकता हेतु अवसर दिए गए हैं। अंग्रेज़ी और इतिहास में उपयोग की गई द्विभाषी तकनीक लड़कियों को उनके अधिगम और सोचने के कौशलों में काफ़ी आगे ले जाएगी। अधिगम में लचीलापन और विषयों से संबंधित कार्यपत्रक, शिक्षक द्वारा प्रदर्शन, किस्से, कविता पाठ, वर्ग–पहेली, प्रयोग, हस्त कौशल, मौखिक परंपराएँ और विभिन्न विषयों की पाठ्यसामग्री इस पाठ्यक्रम की विशिष्टताएँ हैं।

प्रत्येक विषय क्षेत्र हेतु एन.सी.एफ.–2005 पर आधारित प्राथमिक और उच्च प्राथमिक पाठ्यपुस्तकों से प्रमुख संकल्पनाओं का चयन किया गया है। प्रत्येक संकल्पना को एक अलग प्रकार के क्रियाकलाप द्वारा प्रस्तुत किया गया है, जिसमें किसी प्रकार की परिभाषा या रटकर सीखने वाली सामग्री का समावेश नहीं है। विद्यार्थियों के लिए संकल्पना या धारणा क्रियाकलापों के माध्यम से प्रस्तुत की गई है, जिससे वे उन्हें समझ सकें और उनका विश्लेषण कर सकें। आशा की जाती है कि प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तरों के मध्य सेतु के रूप में काम में ली जाने वाली यह सामग्री विद्यालय छोड़ चुकी बालिकाओं की पढ़ाई संबंधी ज़रूरतों के अपने उद्देश्यों को पूरा करेगी। दिए गए क्रियाकलाप उदाहरण स्वरूप हैं। स्थानीय विशिष्ट संदर्भों पर आधारित वैकल्पिक क्रियाकलाप कराए जा सकते हैं। प्रत्येक क्रियाकलाप में अन्य समरूप स्थानीय विशिष्टता वाले क्रियाकलाप रचने के अवसर हैं और यह आवश्यकता नहीं है कि पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री ही उसमें काम में ली जाए। इसका कार्यक्षेत्र और विस्तृत हो पाएगा, यदि इसमें इस प्रकार के और क्रियाकलापों को स्थान मिल सके।

विभिन्न विषयों में विकसित किया गया सेतु पाठ्यक्रम जेंडर समावेशी है। यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को बताता है। यह सुझावात्मक सामग्री के.जी.बी.वी. बालिकाओं की विविधता और भिन्न संदर्भों को ध्यान में रखते हुए एक विनम्र प्रयास है। सेतु पाठ्यक्रम में दिए गए शैक्षिक अधिगम विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भों में स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की बहुआयामी और विविध ज़रूरतों को संबोधित करने का प्रयास करते हैं। इस सेतु पाठ्यक्रम का प्रयोग और परीक्षण 22 फरवरी से 3 मार्च 2010 तक एन.आई.ई., एन.सी.ई.आर.टी. में नौ राज्यों जैसे–आंध्र प्रदेश, बिहार,

छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से आए चौबीस मुख्य प्रशिक्षकों (मास्टर ट्रेनर) पर किया गया।

मुख्य प्रशिक्षकों (मास्टर ट्रेनर) के प्रशिक्षण की अवधि में दिए गए सुझावों को समावेशित कर लिया गया है। यदि आपके कुछ और भी सुझाव हों, तो उनका स्वागत है।





पुस्तक निर्माण समिति

समिति सदस्य

मालविका राय, *सलाहकार*, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मुकुल प्रियदर्शिनी, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, मिरांडा हाउस, नयी दिल्ली

लता पाण्डे, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली

शर्मिला भगत, *अंकुर*, नयी दिल्ली

शारदा कुमारी, *वरिष्ठ प्रवक्ता*, जिला मंडलीय शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

नीरजा रश्मि, *प्रोफ़ेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, महिला अध्ययन विभाग), एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

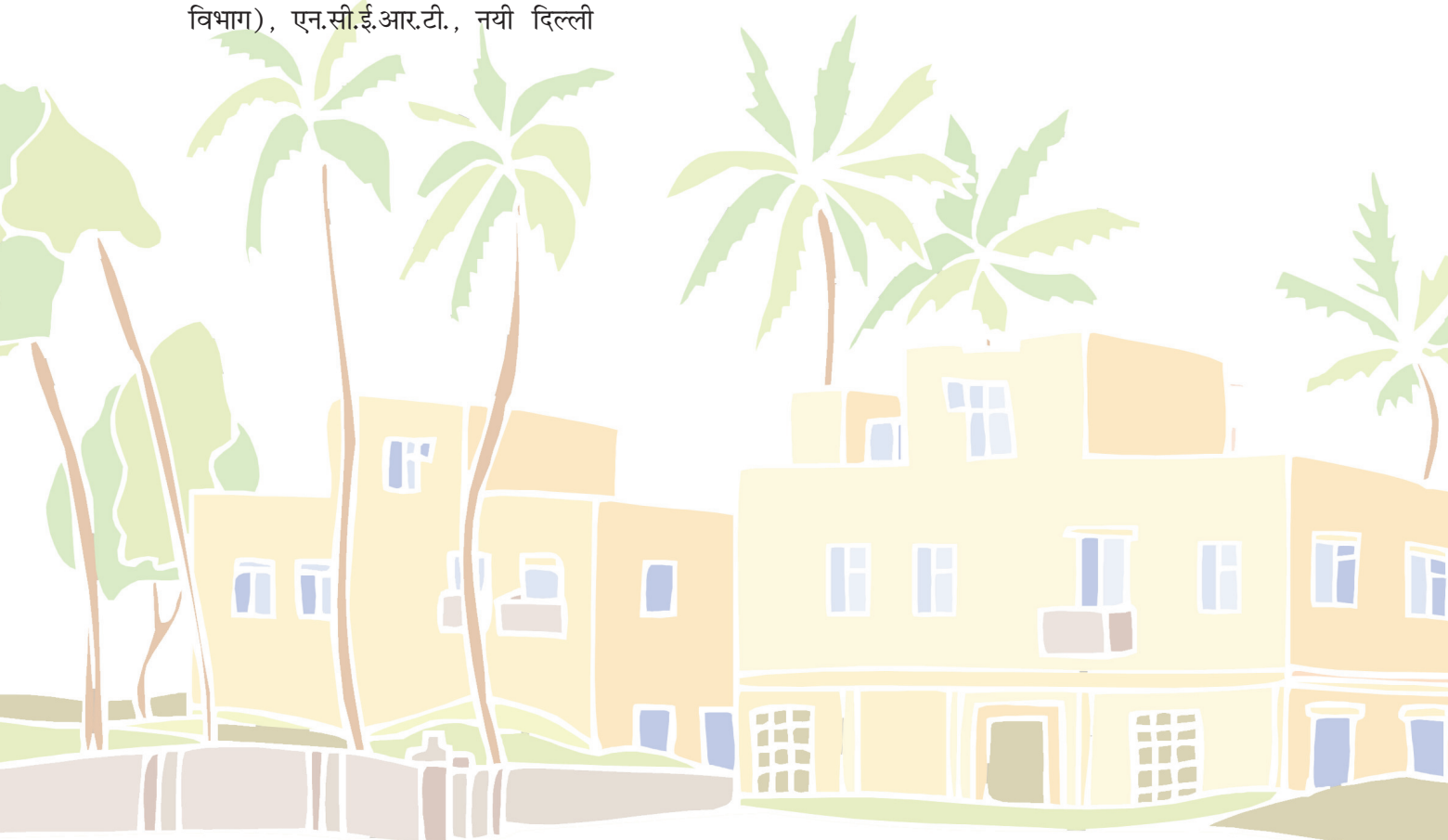



आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) इस सेतु पाठ्यक्रम को बनाने में सम्मिलित व्यक्तियों और संगठनों के बहुमूल्य योगदान के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त करती है।

इस सेतु पाठ्यक्रम का निर्माण प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, *पूर्व निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी. के निर्देशन और मार्गदर्शन से पूर्ण हुआ। प्रोफ़ेसर गौरी श्रीवास्तव, *पूर्व अध्यक्ष*, महिला (अब जेंडर) अध्ययन विभाग तथा *मुख्य समन्वयक*, के.जी.बी.वी. परियोजना के निरंतर प्रयत्न से यह कार्य संभव हुआ।

इस सेतु पाठ्यक्रम के चित्र एवं सज्जा के लिए निधि वाधवा; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* गिरीश गोयल, कमलेश राव; *कंप्यूटर ऑपरेटर* अमित सिंह और *कापी एडीटर* ममता गौड़ के महत्वपूर्ण योगदान के लिए भी परिषद् आभार व्यक्त करती है।

इस सेतु पाठ्यक्रम के प्रकाशन में प्रकाशन विभाग द्वारा प्रदान किए गए सहयोग के लिए महिला (अब जेंडर) अध्ययन विभाग उनके प्रति आभार व्यक्त करता है।

महिला (अब जेंडर) अध्ययन विभाग विशेष रूप से अपने कार्यालय के सभी सदस्यों के सहयोग के लिए उनका आभारी है।





शिक्षक साथियों से

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं को परिस्थितिवश पूर्व में विद्यालय छोड़ने के कारण भले ही भाषा संबंधी विषय ज्ञान पूर्णरूप से न हो लेकिन भाषा का प्रयोग करना वे बखूबी जानती हैं। इसके साथ ही इन बालिकाओं के पास अनुभव का वह संसार है जिसने छोटी उम्र में ही उन्हें दुनिया को देखने की एक पैनी दृष्टि दे दी है। समाज, दुनिया और परिवार की उनकी समझ अब और गहरी हो गई है। इसलिए रचनाओं का एक ऐसा संकलन देना मायने रखता है जिससे ये भावात्मक रूप से और विचारों के स्तर पर जुड़ाव महसूस कर सकें। जुड़ाव जितना गहरा होगा सीखने की प्रक्रिया में इनकी भागेदारी उतनी ही सशक्त एवं अर्थपूर्ण होगी।

भाषा शिक्षण के लिए इस ब्रिज कोर्स हेतु रचनाओं का चयन परिषद् द्वारा प्रकाशित प्राथमिक स्तर की हिंदी की पाठ्यपुस्तकें *रिमझिम* भाग तीन, चार और पाँच से किया गया है। पाठों का चयन उनकी विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया गया है– स्कूलों से उनका एक लंबा अंतराल यानी पढ़ने-लिखने के अवसर का अभाव। संभव है अवसर के इस अभाव के कारण पढ़ने-लिखने में अभी भी उन्हें कठिनाई आती हो। अतः पाठों के क्रम में पहले भाषा की दृष्टि से सरल एवं छोटी रचनाएँ रखी गई हैं। जैसे-जैसे उनकी पढ़ने-लिखने की क्षमता का विकास होता जाएगा, वे क्रमशः लंबी एवं जटिल संरचनाओं वाली रचनाओं से जूझने में सक्षम होंगी।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ने की संस्तुति करती है। रचनाओं के साथ दिए गए अभ्यास तथा गतिविधियाँ बालिकाओं को कक्षा और स्कूल की चारदीवारी से बाहर निकलकर प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने और कुछ करने के अवसर देंगे। इससे वे दुनिया को बेहतर ढंग से समझ तो पाएँगी ही साथ ही साथ अपने अनुभव से कक्षा को और भी समृद्ध करेंगी।

संकलित रचनाएँ जीवन और समाज के उन पहलुओं को दर्शाती हैं जो एक संवेदनशील नज़रिए की माँग करती हैं, चाहे वह लैंगिक भेदभाव से जुड़ी बातें हों या चुनौतीपूर्ण लोगों की जिजीविषा की या फिर हम सबकी ज़िंदगी से जुड़े अन्य अहम मुद्दों की बात जैसे पर्यावरण और शांति। रचनाएँ जैसे – *राख की रस्सी* (तिब्बती लोककथा), *जहाँ चाह वहाँ राह* के ज़रिये कक्षा में बातचीत की प्रक्रिया अवश्य शुरू होगी जो शायद कई प्रकार के सवालों को उठाने और उनके जवाब तलाशने के मौके भी देगी।

भाषा सभी विषयों को साथ में लेकर चलती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बच्चों को ज्ञान का समग्र आनंद देने के लिए विषयों के बीच जुड़ाव की संस्तुति करती है। यही कारण है कि *दान का हिसाब* जैसे पाठ का चयन करने के साथ ही पुस्तक में कई ऐसे अभ्यास और गतिविधियाँ हैं जो गणित, भूगोल, पर्यावरण अध्ययन जैसे विषयों को भाषा सीखने की प्रक्रिया में स्थान देते हैं।

मौखिक बातचीत में एक-दूसरे की बोली समझना बहुत सरल होता है पर वही बोली जब लिखित रूप में सामने आ जाती है तो कई बार शब्दकोश का सहारा लेना ज़रूरी हो जाता है। बालिकाएँ शब्दकोश से पहचान बनाएँ और उसे देखने की आदत डालें इसके लिए पुस्तक के अंत में शब्द-अर्थ शब्दकोश के क्रमानुसार दिए गए हैं। इस काम में आपकी मदद उन्हें शब्दकोश से आत्मीय रिश्ता जोड़ने में सहायक सिद्ध होगी।

इस प्रकार इस ब्रिज कोर्स में विविधता है। यह विविधता विषय-वस्तु और विधाओं दोनों में ही है। विभिन्न विधाओं - कहानी, कविता, नाटक, भेंटवार्ता, निबंध, लोककथा में दी गई पाठ्यसामग्री से निश्चित रूप से बालिकाएँ साहित्य की विभिन्न विधाओं से अवगत हो सकेंगी।

हर भाषा के पीछे अपने कुछ नियम काम करते हैं जिनसे वह भाषा बनती है। अपने आसपास बोली जाने वाली भाषा को सुनते-सुनते बच्चे उसके नियम सहज ही सीख लेते हैं। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में प्रविष्ट बालिकाएँ भले ही व्याकरण की परिभाषाओं से अपरिचित हों लेकिन भाषा का प्रयोग करना उन्हें आता है। इसलिए व्याकरण के नियम जटिल अवधारणाओं के माध्यम से नहीं समझाते हुए रचनाओं के साथ दिए गए अभ्यासों में पिरोए गए हैं ताकि बालिकाओं को व्याकरण सीखना बोझ न लगे और भाषा की बनावट के सार्थक प्रयोग को वे समझ सकें।

भाषा शिक्षण का उद्देश्य भाषा की समझ और अभिव्यक्ति का विकास करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए ऐसा आत्मीय परिवेश ज़रूरी है जिसमें प्रत्येक बालिका अपनी सोच और भावनाओं को बगैर डर और संकोच के व्यक्त कर सके। इस बात का ध्यान विशेष रूप से रहे कि ये बालिकाएँ किन्हीं कारणवश पूर्व में शालात्याग कर चुकी हैं। इसलिए नीचे दिए गए तीन बिंदुओं पर आपका संवेदनशील होना ज़रूरी है–

- सीखने में बालिकाओं का उत्साह जागृत करने और उसे बनाए रखने के लिए ज़रूरी है कि उन्हें अपनी गति से सीखने की छूट मिले क्योंकि बच्चों की सीखने की गति समान नहीं होती। अत: आपको कई अवसरों पर धैर्य रखना होगा।
- बच्चे का परिवेश उसकी भाषा को गढ़ता है। के.जी.बी.वी में दाखिल बालिकाएँ भिन्न-भिन्न परिवेशों से आई हैं। इसलिए बालिकाओं के उच्चारण और शब्दावली पर उनके परिवेश का प्रभाव होना स्वाभाविक है। यह बहुत ज़रूरी है कि हम उनके घर की भाषा और संस्कृति को सहज रूप से स्वीकार करें ताकि उनमें सीखने का आत्मविश्वास और उत्साह पैदा हो सके। पुस्तक में भाषा के कई ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जो राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में दिए गए सुझाव के अनुरूप बहुभाषिकता को एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। बहुभाषिकता हमारे देश की एक सांस्कृतिक विशेषता है जो किसी-न-किसी रूप में प्रत्येक कक्षा में देखी जा सकती है। विभिन्न शोधों आदि के माध्यम से यह बात पूरे विश्व में सिद्ध हो चुकी है कि शिक्षा में मौजूद भाषायी विविधता सोचने, समझने और व्यक्त करने के तरीकों का विस्तार करती है।
- बालिकाओं द्वारा दिए गए उत्तरों और उनमें निहित सोच एवं कल्पना को स्वीकार करना ज़रूरी है। शुरू से ही बच्चों की त्रुटियाँ निकालना, उनकी आलोचना करना और उन्हें दंडित करना शिक्षा के बुनियादी उद्देश्यों को खंडित और ध्वस्त कर देना है। त्रुटियों को सुधारने से पहले उनका विश्लेषण करना ज़रूरी है जिससे यह तय हो सके कि उन पर कब और कैसे ध्यान दिया जाना उपयोगी होगा। बच्चों की भाषा की कई आँचलिक रँगतें अकसर त्रुटियाँ समझ ली जाती हैं। उन्हीं त्रुटियों पर ध्यान दें जो बातचीत तथा समझ में बाधा बन रही हों। साथ ही यह भी तय करना ज़रूरी है कि किस त्रुटि पर कब ध्यान दिया जाए जिससे बालिकाओं को स्वयं उस त्रुटि को अपनी समझ और कोशिश से दूर कर पाने का अवसर मिल सके।

साहित्य का कलाओं से सीधा संबंध होता है। *जहाँ चाह वहाँ राह* पाठ कशीदाकारी के महत्त्व को दर्शाता है। इस पाठ को पढ़ाने के दौरान अपने आस-पास के कारीगरों को बुलाएँ और प्रचलित हस्तकला का व्यावहारिक अनुभव बालिकाओं को दिलवाएँ। इस प्रकार के अनुभव किसी भी अन्य प्रकार के अनुभव के पर्याय नहीं हो सकते।

शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि साहित्य के माध्यम से बालिकाओं में सौंदर्यबोध का विकास करें। जैसे किसी कविता को पढ़ने के बाद उस कविता को कैसे गाया जा सकता है, धुन में कैसे ढाला जा सकता है या कहानी को नाटक का रूप देकर रंगमंच पर अभिनीत करना। इससे कहानी या कविता के भाव पूर्णतया जीवंत हो उठेंगे और उसका अंतर्निहित अर्थ सजीव हो उठेगा।

पाठ्यसामग्री के साथ दिए गए चित्रों की ओर बालिकाओं का ध्यान आकर्षित करें। चित्रों के माध्यम से विभिन्न भाषायी कौशलों के विकास के साथ सौंदर्यबोध का विकास करें।

पठन कौशल के विकास तथा साहित्य पढ़ने में रुचि जागृत करने हेतु बालिकाओं को पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करें। जैसे *स्वामी की दादी* पढ़ाने के दौरान बालिकाओं को आर. के. नारायण द्वारा लिखित *स्वामी और उसके दोस्त* तथा इसी प्रकार की अन्य रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करें। इस संकलन में *एक साथ तीन सुख* तथा *डाकिए की कहानी* रचनाएँ इसी उद्देश्य से सम्मिलित की गई हैं। इन रचनाओं का उद्देश्य बालिकाओं को केवल पढ़ने का आनंद देना है। इस पुस्तक में तारांकित रचनाएँ *डाकिए की कहानी* और *एक साथ तीन सुख* केवल पढ़ने का आनंद देने के लिए दी गई हैं। अतएव इनसे संबंधित किसी भी प्रकार का सवाल न पूछें।

आमतौर पर भाषा को हम सतही नज़र से देखते हैं और उसे पढ़ने-लिखने के कौशल तक ही सीमित मान लेते हैं। दरअसल भाषा ज़िंदगी को समझने और उससे जुड़ने की प्रक्रिया है। भाषा के ही माध्यम से हम अवलोकन, तर्क और विश्लेषण जैसी क्षमताओं को और धार दे पाते हैं। भाषायी दक्षता अपने आप में एक महत्वपूर्ण जीवन-कौशल है जो जीवन की चुनौतियों से निपटने में एक महत्वपूर्ण औज़ार के रूप में काम करता है। हमें अपनी कक्षाओं में भाषा को इस रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए ताकि अन्य विषयों की भाषा को समझने के साथ-साथ ही भाषा इनकी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी बन सके। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं हेतु यह पुस्तक भाषा सीखने की दिशा में निश्चित रूप से एक सेतु का कार्य करेगी।

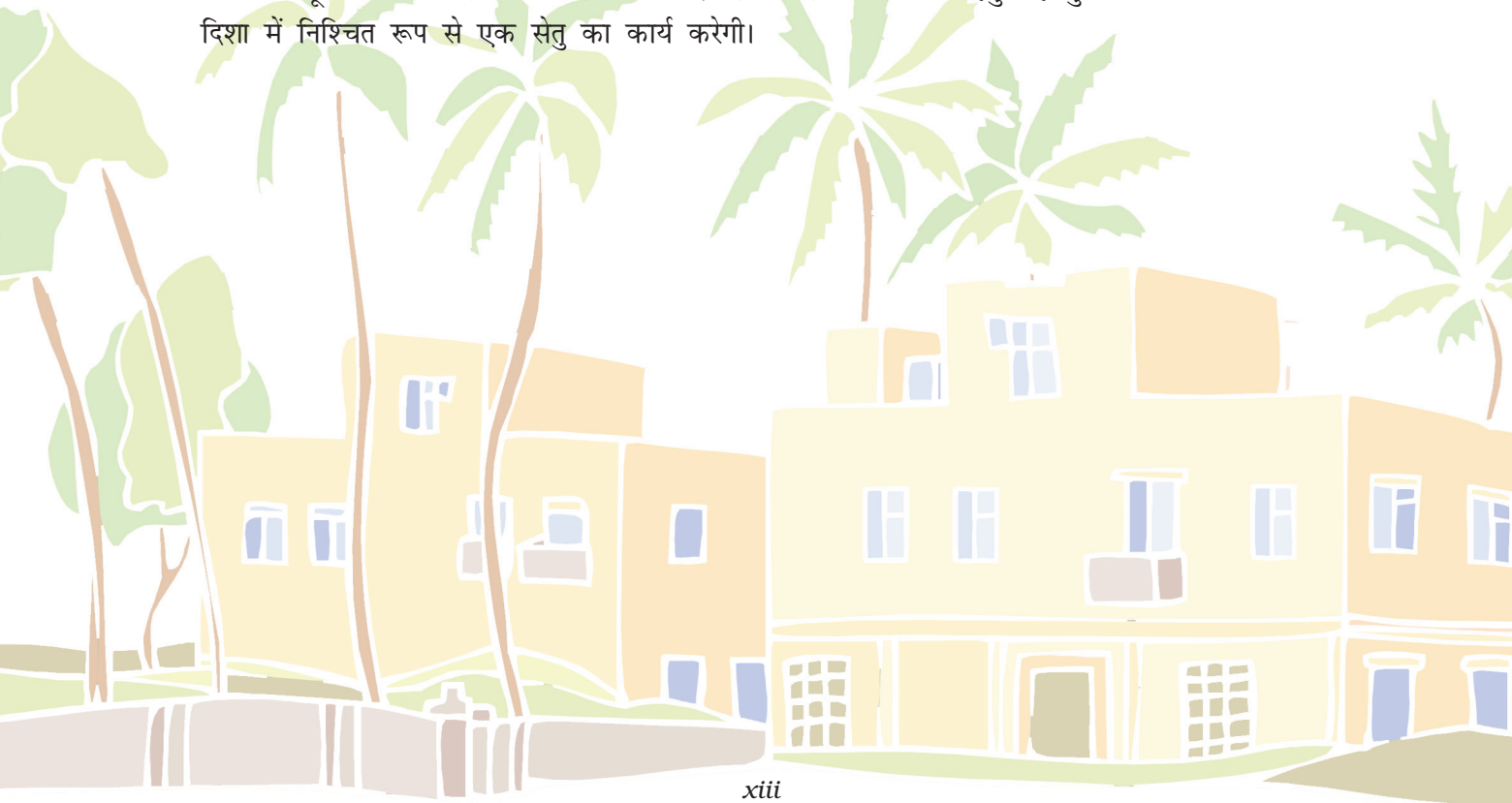



भूमिका

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय के अंतर्गत दाखिला लेने वाली बालिकाओं के लिए परिषद् द्वारा प्रकाशित माध्यमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें रिमझिम भाग तीन, चार और पाँच से किया गया है, पाठों का चयन उनकी विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया गया है- स्कूलों से उनका एक लम्बा अंतराल यानी पढ़ने-लिखने के मौकों का अभाव। संभव है मौकों के इस अभाव के कारण पढ़ने-लिखने में अभी भी उन्हें मुश्किलें आती हों। अत: पाठों के क्रम में पहले भाषा की दृष्टि से सरल एवं छोटी रचनाएँ रखी गई हैं। जैसे-जैसे उनकी पढ़ने-लिखने की क्षमता का विकास होता जाएगा, वे क्रमश: लंबी एवं जटिल संरचनाओं वाली रचनाओं से जूझने में सक्षम होंगी ।

इनके पास अनुभव का वह संसार है जिसने छोटी उम्र में ही उन्हें दुनिया को देखने की एक पैनी नज़र दे दी है। समाज, दुनिया और परिवार की उनकी समझ अब और गहरी हो गई है इसलिए रचनाओं का एक ऐसा संकलन देना मायने रखता है जिससे ये भावनात्मक रूप से और विचारों के स्तर पर जुड़ाव महसूस कर सकें । जुड़ाव जितना गहरा होगा सीखने की प्रक्रिया में इनकी भागेदारी उतनी ही सशक्त एवं अर्थपूर्ण होगी। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) भी यह सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। इससे वे दुनिया को बेहतर ढंग से समझ तो पाएँगी ही, साथ ही साथ अपने अनुभव से कक्षा को और भी समृद्ध करेंगी।

संकलित रचनाएँ जीवन और समाज के उन पहलुओं को दर्शाती हैं जो एक संवेदनशील नज़रिए की माँग करती हैं, चाहे वह लैंगिक भेदभाव से जुड़ी बातें हो या चुनौतीपूर्ण लोगों की जिजीविषा की बात करती हों या फिर हम सबकी ज़िंदगी से जुड़े अन्य अहम मुद्दों की बात जैसे पर्यावरण और शांति। इन रचनाओं के ज़रिये कक्षा में बातचीत की प्रक्रिया अवश्य शुरू होगी जो शायद कई प्रकार के सवालों को उठाने और उनके जवाब तलाशने के मौके भी देगी। ये रचनाएँ जीवन के आनंद और मस्तियों से भी अछूती नहीं हैं।

आमतौर पर भाषा को हम सतही नज़र से देखते हैं और उसे पढ़ने-लिखने के कौशल तक ही सीमित मान लेते हैं। दरअसल भाषा ज़िंदगी को समझने और उससे जुड़ने की प्रक्रिया है। भाषा के ही माध्यम से हम अवलोकन, तर्क और विश्लेषण जैसी क्षमताओं को और धार दे पाते हैं। भाषायी दक्षता अपने आप में एक महत्वपूर्ण जीवन-कौशल है जो जीवन की चुनौतियों से निपटने में एक महत्वपूर्ण औज़ार के रूप में काम करता है। हमें अपनी कक्षाओं में भाषा को इस रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए ताकि अन्य विषयों की भाषा को समझने के साथ-साथ ही भाषा इनकी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी बन सके।

विषय-सूची

	आमुख	*v*
	प्राक्कथन	*vii*
1.	मिर्च का मज़ा	1
2.	हुदहुद	8
3.	मीरा बहन और बाघ	16
4.	राख की रस्सी	22
5.	पापा जब बच्चे थे	28
6.	किरमिच की गेंद	38
7.	स्वतंत्रता की ओर	48
8.	दान का हिसाब	62
9.	बाघ आया उस रात	73
10.	चावल की रोटियाँ	77
✦	एक साथ तीन सुख	87
11.	जहाँ चाह वहाँ राह	89
12.	पानी रे पानी	95
13.	स्वामी की दादी	99
14.	छोटी-सी हमारी नदी	104
✦	डाकिए की कहानी, कुँवरसिंह की जुबानी	107
15.	फ़सलों का त्योहार	111

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

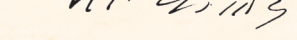

1 मिर्च का मज़ा



एक काबुलीवाले की कहते हैं लोग कहानी,
लाल मिर्च को देख गया भर उसके मुँह में पानी।

सोचा, क्या अच्छे दाने हैं, खाने से बल होगा,
यह ज़रूर इस मौसम का कोई मीठा फल होगा।

एक चवन्नी फेंक और झोली अपनी फैलाकर,
कुँजड़िन से बोला बेचारा ज्यों-त्यों कुछ समझाकर।

लाल-लाल, पतली छीमी हो चीज़ अगर खाने की,
तो हमको दो तोल छीमियाँ फ़कत चार आने की।

हाँ, यह तो सब खाते हैं – कुँजड़िन झट से बोली,
और सेर भर लाल मिर्च से भर दी उसकी झोली।

मगन हुआ काबुली फली का सौदा सस्ता पाके,
लगा चबाने मिर्च बैठकर नदी-किनारे जाके।





मगर, मिर्च ने तुरंत जीभ पर अपना ज़ोर दिखाया,
मुँह सारा जल उठा और आँखों में जल भर आया।

पर, काबुल का मर्द लाल छीमी से क्यों मुख मोड़े?
खर्च हुआ जिस पर उसको क्यों बिना सधाए छोड़े?





आँख पोंछते, दाँत पीसते, रोते और रिसियाते,
वह खाता ही रहा मिर्च की छीमी को सिसियाते।

इतने में आ गया उधर से कोई एक सिपाही,
बोला – बेवकूफ़! क्या खाकर यों कर रहा तबाही?
कहा काबुली ने – मैं हूँ आदमी न ऐसा-वैसा।
जा तू अपनी राह सिपाही, मैं खाता हूँ पैसा!



–रामधारी सिंह दिनकर



कैसे समझाओगी?

- काबुलीवाले को सब्ज़ी बेचने वाली की भाषा अच्छी तरह समझ नहीं आती थी। इसलिए उसे अपनी बात समझाने में बड़ी मुश्किल हुई। चलो, देखते हैं तुम अपनी बात बिना बोले अपने साथी को कैसे समझाती हो? नीचे लिखे वाक्य अलग-अलग पर्चियों में लिख लो। एक पर्ची उठाओ। अब यह बात तुम्हें अपने साथी को बिना कुछ बोले समझानी है—

  ✧ मुझे बहुत सर्दी लग रही है।

  ✧ बिल्ली दूध पी रही है, उसे भगाओ।

  ✧ मेरे दाँत में दर्द है।

  ✧ चलो, बाज़ार चलते हैं।

  ✧ अरे, ये तो बहुत कड़वा है।

  ✧ चोर उधर गया है, चलो उसे पकड़ें।

  ✧ पार्क में चलकर खेलेंगे।

  ✧ मुझे डर लग रहा है।

  ✧ उफ़ ये बदबू कहाँ से आ रही है।

  ✧ अहा! लगता है कहीं हलवा बना है।



सही सवाल

काबुलीवाले ने कहा – अगर ये लाल चीज़ खाने की है, तो मुझे भी दे दो।

सब्ज़ी बेचने वाली ने कहा – हाँ ये तो सब खाते हैं। ले लो।

इस तरह बेचारा काबुलीवाला मिर्च खा बैठा। तुम्हारे हिसाब से काबुलीवाले को मिर्च देखने के बाद क्या पूछना चाहिए था?



जल या जल?

मुँह सारा <u>जल</u> उठा और आँखों में <u>जल</u> भर आया।

यहाँ <u>जल</u> शब्द को दो अर्थों में इस्तेमाल किया गया है।

जल – जलना

जल – पानी

इसी तरह नीचे दिए गए शब्दों के भी दो अर्थ हैं।

इन शब्दों का इस्तेमाल करते हुए एक-एक वाक्य बनाओ पर ध्यान रहे –

- वाक्य में वह शब्द दो बार आना चाहिए।
- दोनों बार उस शब्द का मतलब अलग निकलना चाहिए। (जैसे ऊपर दिए गए वाक्य में <u>जल</u>)

✧ हार – .....

✧ आना – .....

✧ उत्तर – .....

✧ फल – .....

✧ मगर – .....

✧ पर – .....

छाँटो

कविता की वे पंक्तियाँ छाँटकर लिखो जिनसे पता चलता है कि

- काबुलीवाला कुछ शब्द अलग तरीके से बोलता था।

.....

- काबुलीवाला कंजूस था।

.....

- मिर्च बहुत तीखी थी।

.....

- काबुलीवाले को मिर्च के बारे में नहीं पता था।

.....

- काबुलीवाले को 25 पैसे की मिर्च चाहिए थी।

.....



चार आना

- चवन्नी मतलब चार आना।
  चार आना मतलब 25 पैसे।
  तो एक रुपये में कितने पैसे?

अब बताओ –
अठन्नी मतलब ..... आने।
इकन्नी मतलब ..... आना।
दुअन्नी मतलब ..... आने।



तुम कैसे पूछोगी?

तुम बाज़ार गई। दुकानों में बहुत-सी चीज़ें रखी हैं। तुम्हें दूर से ही अपनी मनपसंद चीज़ का दाम पता करना है, पर तुम्हें उस चीज़ का नाम नहीं पता। अब दुकानदार से दाम कैसे पूछोगी?

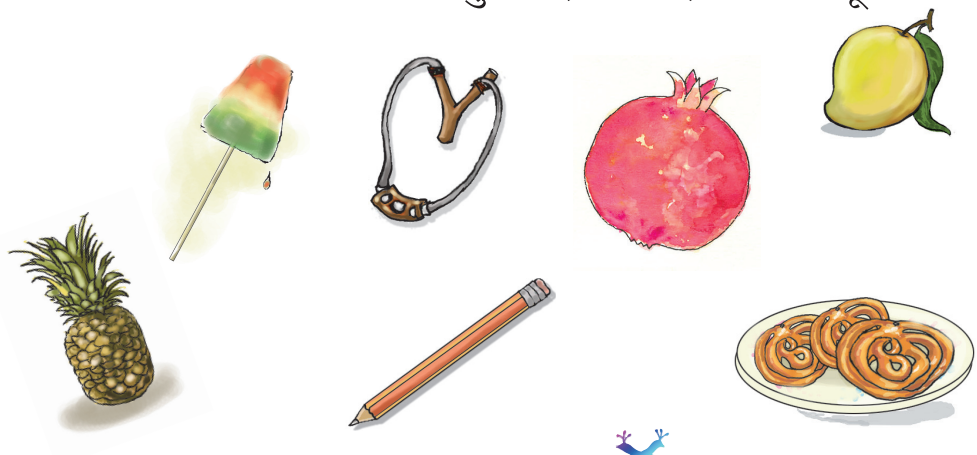





बातचीत के लिए

- काबुलीवाले ने मिर्च को स्वादिष्ट फल क्यों समझ लिया?
- सब्ज़ी बेचने वाली ने क्या सोचकर उसे झोली भर मिर्च दी होगी?
- सारी मिर्चें खाने के बाद काबुलीवाले की क्या हालत हुई होगी?
- अगले दिन सब्ज़ी वाली टमाटर बेच रही थी। क्या काबुलीवाले ने टमाटर खाया होगा?



आगे-पीछे

कुंजड़िन से बोला बेचारा ज्यों-त्यों कुछ समझाकर

इस पंक्ति को ऐसे भी लिख सकते हैं –

बेचारा ज्यों-त्यों कुछ समझाकर कुंजड़िन से बोला।

अब इसी तरह इन पंक्तियों को फिर से लिखो –

- हमको दो तोल छीमियाँ फ़कत चार आने की।

.....

- वह खाता ही रहा मिर्च की छीमी को सिसियाते।

.....

- जा तू अपनी राह सिपाही, मैं खाता हूँ पैसा।

.....

- एक काबुलीवाले की कहते हैं लोग कहानी।

.....



कविता करो

अपने मन से बनाकर एक कविता यहाँ लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....



मुँह में पानी

- लाल-लाल मिर्च देखकर काबुलीवाले के मुँह में पानी आ गया। तुम्हारे मुँह में किन चीज़ों को देखकर या सोचकर पानी आ जाता है?

....

....



2 हुदहुद

हुदहुद को कलगी कैसे मिली

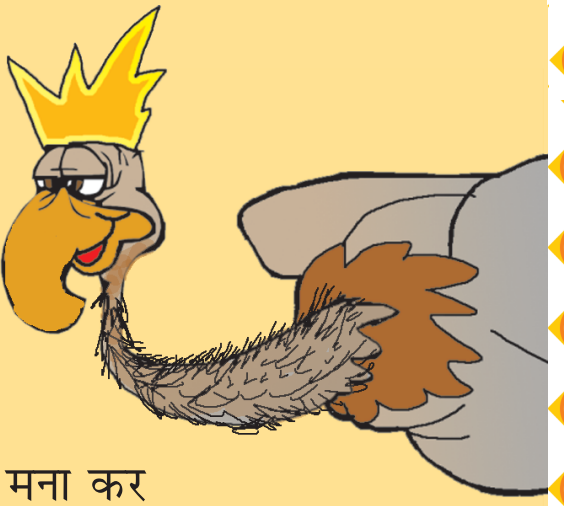

एक बार सुलेमान नाम के बादशाह आकाश में चलने वाले अपने उड़नखटोले पर बैठे कहीं जा रहे थे। बड़ी गर्मी थी। धूप से वह परेशान हो रहे थे। आकाश में उड़ने वाले गिद्धों से उन्होंने कहा कि अपने पंखों से तुम लोग मेरे सिर पर छाया कर दो। पर गिद्धों ने ऐसा करने से मना कर दिया। उन्होंने बहाना बनाते हुए कहा, "हम तो इतने छोटे-छोटे हैं। हमारी गर्दन पर पंख भी नहीं हैं। हम छाया कैसे कर सकते हैं!"

सुलेमान आगे बढ़ गए। कुछ दूर जाने पर उनकी भेंट हुदहुदों के मुखिया से हुई। सुलेमान ने उससे भी मदद माँगी। वह चतुर था। उसने फौरन अपने दल के सभी हुदहुदों को इकट्ठा करके बादशाह सुलेमान के ऊपर छाया कर दी। सुलेमान बोले, "मैंने गिद्धों से भी मदद माँगी थी। वे मेरी मदद कर सकते थे पर उन्होंने मेरी मदद नहीं की। तुम गिद्धों से छोटे तो हो पर चतुर अधिक हो। तुम सबने मिलकर मेरी सहायता की है। मैं

तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हारी कोई इच्छा पूरी करूँगा। बताओ, तुम्हारी क्या इच्छा है?"

मुखिया ने कहा, "हुजूर, मैं अपने सभी साथियों से सलाह करने के बाद अपनी इच्छा बताऊँगा।"

मुखिया ने साथियों से सलाह करने के बाद कहा, "हुजूर! यह वरदान दीजिए कि हमारे सिर पर आज से सोने की कलगी निकल आए।"

बादशाह हँसे और बोले–"मुखिया, इसका फल क्या होगा, यह तुमने सोच लिया है?"

मुखिया बोला "हाँ, महाराज! मैंने खूब परामर्श करके यह वर माँगा है।"

सुलेमान ने प्रार्थना स्वीकार कर ली। सभी हुदहुदों के सिर पर सोने की कलगी निकल आई। लोगों ने सोने की कलगी को देखा, तो वे हुदहुदों के पीछे पड़ गए। तीर से उन्हें मार-मारकर सोना इकट्ठा करने लगे।

हुदहुदों का वंश समाप्त होने पर आ गया। तब मुखिया घबराकर बादशाह सुलेमान के पास पहुँचा और बोला "इस सोने की कलगी के कारण तो हमारा वंश ही समाप्त हो जाएगा।"

सुलेमान ने कहा "मैंने तो शुरू में ही तुम्हें चेतावनी दी थी। खैर, जाओ, आज से तुम्हारे सिर का ताज सोने का नहीं, सुंदर परों का हुआ करेगा।" और तभी से हुदहुदों के सिर पर परों का यह ताज (कलगी) शोभा पा रहा है।

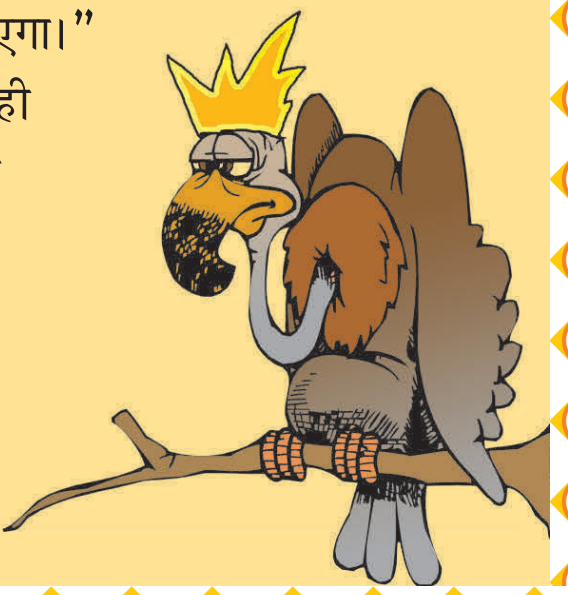



हुदहुद एक बहुत ही सुंदर पक्षी है। इसके शरीर का सबसे सुंदर भाग इसके सिर की कलगी होती है। वैसे तो यह इसे समेटे रहता है। पर जैसे ही किसी तरह की आवाज़ होती है, यह चौकन्ना होकर परों को फैला लेता है। तब यह कलगी देखने में हू-ब-हू किसी सुंदर पंखी जैसी लगने लगती है। इसी कलगी के बारे में तुमने अभी एक सुंदर कहानी भी पढ़ी है।

हुदहुद का सारा शरीर रंग-बिरंगा और चटकीला होता है। पंख काले-काले होते हैं जिन पर मोटी सफ़ेद धारियाँ बनी होती हैं। गर्दन का अगला हिस्सा बादामी रंग का होता है। चोटी भी बादामी रंग की होती है, मगर उसके सिरे काले और सफ़ेद होते हैं। दुम का भीतरी हिस्सा सफ़ेद और बाहरी हिस्सा काले रंग का होता है। चोंच पतली, लंबी तथा तीखी होती है। इस चोंच से यह आसानी से ज़मीन के भीतर छिपे हुए कीड़े मकोड़ों को ढूँढ़ निकालता है। इसकी चोंच नाखून काटने वाली 'नहरनी' से बहुत मिलती है और शायद इसीलिए कहीं-कहीं इसे 'हजामिन' चिड़िया के नाम से भी पुकारते हैं।

हुदहुद हमारे देश के सभी भागों में पाए जाते हैं।



तुमने इसे अपने घर के आसपास अपनी तीखी चोंच से ज़मीन खोदते हुए अवश्य देखा होगा। बोलते समय यह तीन बार 'हुप–हुप–हुप' सा कुछ कहता है, इसीलिए इसे अंग्रेज़ी में 'हूप ऊ' कहा जाता है। हिंदी में इसे हुदहुद कहते हैं। दूब में कीड़ा ढूँढ़ने के कारण हमारे देश में कहीं–कहीं इसे 'पदुबया' भी कहते हैं और सुंदर कलगी की वजह से कुछ देशों में लोग इसे 'शाह सुलेमान' कहकर पुकारते हैं।

मादा हुदहुद तीन से दस तक अंडे देती है। जब तक बच्चे अंडे से बाहर नहीं निकल जाते, वह अंडों पर बैठी रहती है, हटती नहीं। नर वहीं भोजन लाकर उसे खिला जाता है। पर दोनों में से कोई भी घोंसले की सफ़ाई नहीं करता।



संसार के विख्यात पक्षियों में से एक है यह हुदहुद। यह अपनी सुंदरता के लिए तो मशहूर है, पर इसे पालतू नहीं बनाया जा सकता और न ही इसकी बोली में मिठास है।





तुम्हारी समझ

(क) हुदहुद को कहीं 'हजामिन' चिड़िया और कहीं 'पदुबया' के नाम से पुकारते हैं। क्यों?

(ख) हुदहुद की चोंच पतली, लंबी और तीखी होती है। इस बात को ध्यान में रखकर बताओ–

- वे कैसा भोजन खाते होंगे?
- चोंच से वे क्या-क्या काम ले सकते होंगे?



मैंने जाना

पाठ में से ऐसे शब्दों की सूची बनाओ जो पक्षियों के लिए इस्तेमाल होते हैं।

जानती थी	पढ़कर मालूम हुआ	जानना चाहती हूँ	कैसे/कहाँ से पता लगाऊँगी?

पाठ पढ़ने के बाद अपनी कॉपी में एक तालिका तैयार करो और उस तालिका में मालूम की गई जानकारी लिखो।



पहचानें कैसे?

(क) अगर तुम्हें हुदहुद को पहचानने में किसी की मदद करनी है तो तुम उसे कौन-सी बातें बताओगी? चार-पाँच वाक्यों में लिखो।

(ख) अब कौवे या कबूतर को पहचानने के लिए चार-पाँच बिंदु लिखो। यह लिखने के लिए तुम्हें इन पक्षियों को कुछ समय तक बहुत गौर से देखना होगा।



तरह-तरह के नाम

तुम्हारे आसपास कौन-कौन से पक्षी पाए जाते हैं, उनके नामों की सूची बनाओ। तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तों के घर की भाषा में इन्हें क्या कहते हैं? जिन पक्षियों के नाम तुम्हें पता नहीं हैं, उनके नाम तुम्हें पता करने होंगे।



बातचीत

तुमने हुदहुद से जुड़ी एक कहानी पढ़ी है। उस कहानी को बातचीत के रूप में लिखो। नीचे हमने इस बातचीत को तुम्हारे लिए शुरू कर दिया है-

शाह सुलेमान – अरे भाई गिद्ध! ज़रा मेरी बात तो सुनो।

गिद्ध (उड़ते-उड़ते) – कहिए, मगर ज़रा जल्दी से।

शाह सुलेमान – .....

गिद्ध – .....

तुम अपने दोस्तों के साथ बातचीत को कक्षा में नाटक के रूप में प्रस्तुत कर सकती हो।



रंगा-रंग

(क) *हुदहुद का सारा शरीर रंग-बिरंगा और चटकीला होता है।*

हुदहुद का रंग चटकीला बताया गया है। रंग कैसे हैं– यह बताने के लिए कुछ शब्दों का इस्तेमाल किया जा सकता है। जैसे, **फीके** रंग, **चटकीले** रंग आदि।

बताओ कि ऐसे रंग किन-किन चीज़ों के होते हैं।

रंग का नाम	इस रंग की चीज़ों के नाम
गहरा.....	.....
फीका.....	.....
भड़कीला.....	.....
सुनहरा.....	.....

(ख) *यूनी ने **आसमानी** रंग की कमीज़ पहनी है।*

'आसमानी' रंग का नाम कैसे बना होगा? सोचो।

ऐसे ही कुछ और रंगों के नाम लिखो जो किसी चीज़ के नाम पर पड़े हैं।

....

....

....

....

(संकेत- फल, सब्ज़ी, पत्तों आदि के नामों पर)

शब्द एक-अर्थ अनेक

- शाह की **भेंट** हुदहुदों के मुखिया से हुई।
- मुझे मेरी बहन ने एक बहुत सुंदर **भेंट** दी।

ऊपर वाले वाक्य में भेंट का मतलब **मुलाकात** से है, नीचे वाले वाक्य में **उपहार** से। तुम भी कोई ऐसे चार शब्द सोचो जिनके दो मतलब निकलते हों। उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

(क) .....

.....

(ख) .....

.....

(ग) .....

.....

(घ) .....

.....

नाम

हुदहुद *एक बहुत ही सुंदर* ***पक्षी*** *है।*

हुदहुद और पक्षी, दोनों को ही हम संज्ञा कहते हैं।

अब नीचे दी गई तालिका को आगे बढ़ाओ।

हुदहुद	*पक्षी*
भारत	*देश*
अनार	*फल*
.....	.....
.....	.....

3 मीरा बहन और बाघ

मीरा बहन का जन्म इंग्लैंड में हुआ था। गांधी जी के विचारों का उन पर इतना असर हुआ कि वे अपना घर और अपने माता-पिता को छोड़कर भारत आ गईं और गांधी जी के साथ काम करने लगीं।

आज़ादी के पाँच साल बाद उन्होंने उत्तर प्रदेश के एक पहाड़ी गाँव, गेंवली में गोपाल आश्रम की स्थापना की। उस आश्रम में मीरा बहन का बहुत सारा समय पालतू पशुओं की देखभाल में बीतता था लेकिन गेंवली गाँव के आसपास के जंगलों में बाघ जैसे खतरनाक जानवर भी रहते थे।



पहाड़ी गाँवों में अक्सर बाघ का डर बना रहता है। जंगल कटने के कारण शिकार की तलाश में बाघ कभी-कभी गाँव तक पहुँच जाता है। गेंवली गाँव में एक बार यही हुआ। एक बाघ ने गाँव में घुसकर एक गाय को मार डाला। सुबह होते ही यह खबर पूरे गाँव में फैल गई। गाँव के लोग डरे कि यह बाघ कहीं फिर से आकर दूसरे पालतू जानवरों और किसी आदमी को ही अपना शिकार न बना ले। गाँव के लोग गोपाल आश्रम गए और उन लोगों ने मीरा बहन को अपनी चिंता बताई।

गाँव के लोगों ने अंत में तय किया कि बाघ को कैद कर लिया जाए। उसे कैद करने के लिए उन्होंने एक पिंजड़ा बनाया। पिंजड़े के अंदर एक बकरी बाँधी। योजना यह थी कि बकरी का मिमियाना सुनकर बाघ पिंजड़े की तरफ़ आएगा। पिंजड़े का दरवाज़ा इस प्रकार खुला हुआ बनाया गया था कि बाघ के अंदर घुसते ही वह दरवाज़ा झटके से बंद हो जाए। शाम होने तक पिंजड़े को ऐसी जगह पर रख दिया गया जहाँ बाघ अक्सर दिखाई देता था। यह जगह मीरा बहन के गोपाल आश्रम से ज़्यादा दूर नहीं थी।

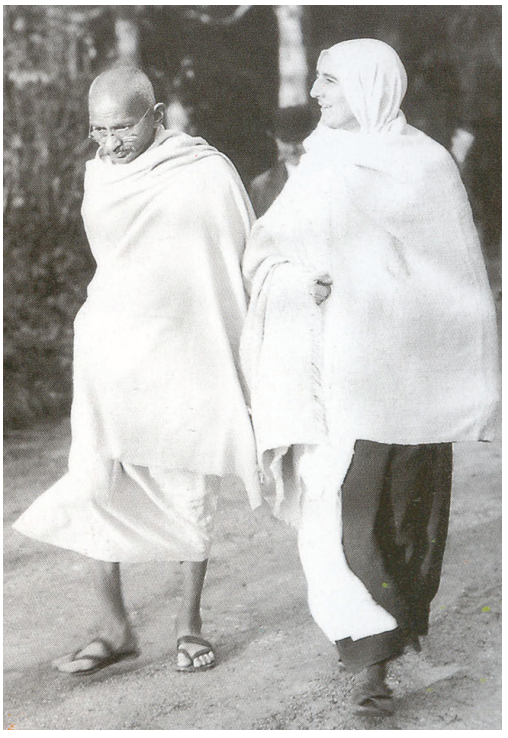

मीरा बहन और बाघ

रात बीती। सुबह की रोशनी होते ही लोग पिंजड़ा देखने निकल पड़े। उन्होंने दूर से देखा कि पिंजड़े का दरवाज़ा बंद है। वे यह सोचकर बहुत खुश हुए कि बाघ ज़रूर पिंजड़े में फँस गया होगा

लेकिन जब वे पिंजड़े के पास पहुँचे तो क्या देखते हैं – पिंजड़े में बाघ नहीं था!

लोग चकित थे – बाघ के अंदर गए बिना पिंजड़ा बंद कैसे हो गया? लोग मीरा बहन के पास पहुँचे। लोगों ने सोचा कि गोपाल आश्रम पास में ही था, इसलिए शायद मीरा बहन को मालूम हो कि रात में क्या हुआ। पूछने पर मीरा बहन बोलीं –

देखो भाई, मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं सोचती रही कि आखिर बाघ को धोखा देकर हम क्यों फँसाएँ। इसलिए मैं गई और पिंजड़े का दरवाज़ा बंद कर आई।

कहानी से

- कहानी में बाघ को खतरनाक जानवर बताया गया है। नीचे दी गई सूची में सबसे खतरनाक चीज़ तुम्हारी समझ में क्या है और क्यों?

चाकू, बिजली, टूटा हुआ काँच, आग

- मीरा बहन की बात सुनकर गाँव के लोगों को निराशा हुई होगी। उन्होंने मीरा बहन से क्या कहा होगा? सोचकर गाँव के लोगों की बातें लिखो।

खतरनाक है या नहीं

गेंवली गाँव के आसपास के जंगलों में बाघ जैसे खतरनाक जानवर भी रहते थे। तुम्हारे हिसाब से नीचे लिखे जंतुओं में से कौन-कौन खतरनाक हो सकते हैं? उन पर गोला लगाओ।

भैंस, चीता, बकरी, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, साँप, बिच्छू, कछुआ, केंचुआ, तिलचट्टा, कबूतर, भालू

जिनके नाम पर तुमने गोला लगाया, वे कब खतरनाक हो सकते हैं?



पिंजड़ा

- चूहा पकड़ने का पिंजड़ा देखकर बताओ कि वह अपने आप कैसे बंद हो जाता है और एक बार कैद हो जाने के बाद चूहा उससे बाहर क्यों नहीं आ पाता?
- गाँव वालों ने बाघ को पिंजड़े में बंद करने की योजना बनाई थी। किसी आज़ाद पशु या पक्षी को पिंजड़े में बंद करके रखना सही है या गलत? क्यों?



क्यों? कैसे

अपने मन से सोचकर लिखो, ऐसा कैसे किया होगा?

- बाघ की खबर पूरे गाँव में फैल गई। कैसे?
- लोग मीरा बहन के पास पहुँचे। क्यों?
- पिंजड़ा बिना बाघ के बंद हो गया। कैसे?

बकरी कहे कहानी

सोचो, अगर यह कहानी बकरी सुनाती, तो क्या-क्या बताती। उसकी कहानी मज़ेदार होती न?

बकरी अपनी कहानी में क्या-क्या बताती?



चलो, पकड़ें

गाँववालों ने बाघ को पकड़ने के लिए एक योजना बनाई थी। कक्कू के घर में रोज़ बिल्ली आकर दूध पी जाती है। कक्कू की मदद करने के लिए कोई योजना बनाओ।

पाठ से आगे

ये सभी चित्र किसी एक व्यक्ति से जुड़े हुए हैं? पता करो कौन?

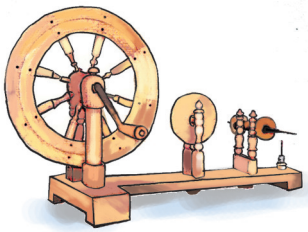



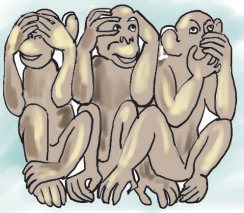







कौन क्या है?

- बाघ, गाय, बकरी, हाथी और हिरण जानवर हैं। नीचे लिखी हुई चीज़ें क्या हैं? खाली जगहों में लिखो।

✧ अगरतला, अल्मोड़ा, रायपुर, कोच्चि, वडोदरा .....

✧ जलेबी, लड्डू, मैसूरपाक, कलाकंद, पेड़ा .....

✧ नर्मदा, कावेरी, सतलुज, ब्रह्मपुत्र, यमुना .....

✧ बरगद, नारियल, पीपल, चीड़, नीम .....

✧ गेहूँ, बाजरा, चावल, रागी, मक्का .....

✧ कुर्ता, साड़ी, फ़िरन, लहँगा, कमीज़ .....



कोयल कू-कू, बकरी में-में

जानवरों की बोलियाँ तो तुमने सुनी ही होंगी। कोयल की बोली को जैसे कूकना कहते हैं और मक्खी की बोली को भिनभिनाना, वैसे ही अन्य जानवरों की बोलियों के भी नाम हैं।

नीचे दिए गए खाने में एक तरफ़ जानवरों के नाम हैं, दूसरी तरफ़ बोलियों के। ढूँढ़ निकालो कौन-सी बोली किसकी है?

जानवर	बोलियाँ
भैंस	मिमियाना
घोड़ा	रँभाना
हाथी	चिंघाड़ना
बकरी	हिनहिनाना

जानवर	बोलियाँ
शेर	रेंकना
गधा	रँभाना
गाय	भौंकना
कुत्ता	दहाड़ना



ठीक करो

हवाई जहाज़ आसमान उड़ रहा है।

तुम्हें यह वाक्य कुछ अटपटा लग रहा होगा। इस वाक्य को फिर से पढ़ो।

हवाई जहाज़ आसमान <u>में</u> उड़ रहा है।

- अब इसी तरह इन वाक्यों को ठीक करो।
  - ✧ धूप बैठकर ढोकला खाया।
  - ✧ पुतुल काम करने मना कर दिया।
  - ✧ लता सब मूँगफली खिलाई।
  - ✧ पहाड़ी गाँवों बाघ डर बना रहता है।
- अब वे सभी शब्द फिर से लिखो जिन्हें तुमने जोड़ा है।



4 राख की रस्सी

लोनपो गार तिब्बत के बत्तीसवें राजा सौनगवसैन गांपो के मंत्री थे। वे अपनी चालाकी और हाज़िरजवाबी के लिए दूर-दूर तक मशहूर थे। कोई उनके सामने टिकता न था। चैन से ज़िंदगी चल रही थी। मगर जब से उनका बेटा बड़ा हुआ था उनके लिए चिंता का विषय बना हुआ था। कारण यह था कि वह बहुत भोला था। होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी। लोनपो गार ने सोचा, "मेरा बेटा बहुत सीधा-सादा है। मेरे बाद इसका काम कैसे चलेगा!"

एक दिन लोनपो गार ने अपने बेटे को सौ भेड़ें देते हुए कहा, "तुम इन्हें लेकर शहर जाओ। मगर इन्हें मारना या बेचना नहीं। इन्हें वापस लाना सौ जौ के बोरों के साथ वरना मैं तुम्हें घर में नहीं घुसने दूँगा।" इसके बाद उन्होंने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया।

लोनपो गार का बेटा शहर पहुँच गया। मगर इतने बोरे जौ खरीदने के लिए उसके पास रुपये ही कहाँ थे? वह इस समस्या पर सोचने-विचारने के लिए सड़क किनारे बैठ गया। मगर कोई हल उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था। वह बहुत दुखी था। तभी एक लड़की उसके सामने आ खड़ी हुई। "क्या बात है तुम इतने दुखी क्यों हो?" लोनपो गार के बेटे ने अपना हाल कह सुनाया। "इसमें इतना दुखी होने की कोई बात नहीं। मैं इसका हल निकाल देती हूँ।" इतना कहकर लड़की ने भेड़ों के

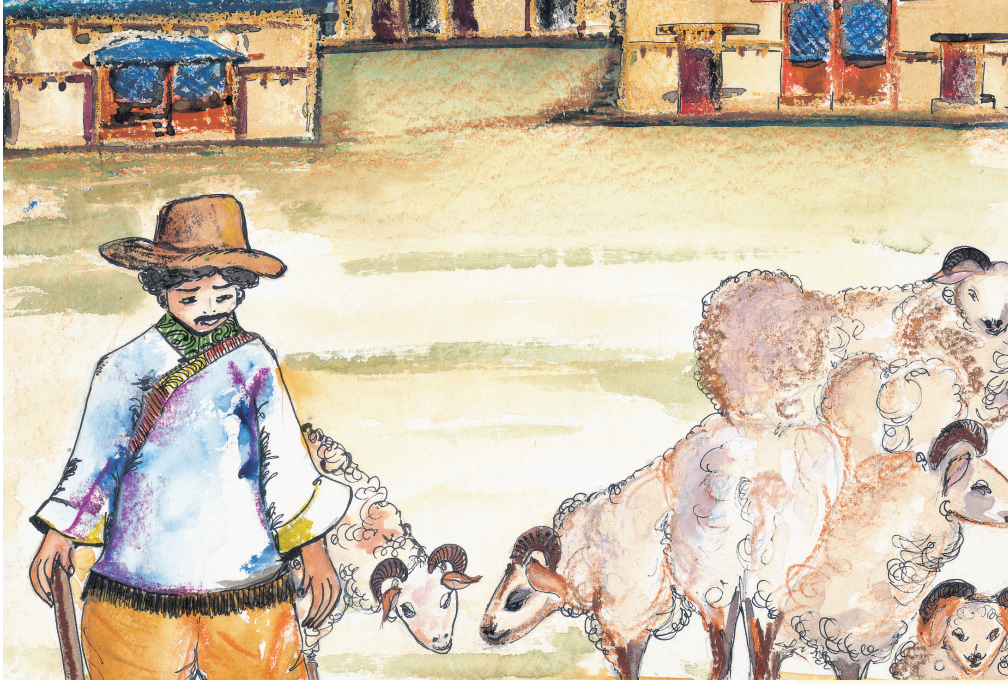

बाल उतारे और उन्हें बाज़ार में बेच दिया। जो रुपये मिले उनसे जौ के सौ बोरे खरीद कर उसे घर वापस भेज दिया।

लोनपो गार के बेटे को लगा कि उसके पिता बहुत खुश होंगे। मगर उसकी आपबीती पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। वे उठकर कमरे से बाहर चले गए। दूसरे दिन उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा, "पिछली बार भेड़ों के बाल उतारकर बेचना मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आया। अब तुम दोबारा उन्हीं भेड़ों को लेकर जाओ। उनके साथ जौ के सौ बोरे लेकर ही लौटना।"

एक बार फिर निराश लोनपो गार का बेटा शहर में उसी जगह जा बैठा। न जाने क्यों उसे यकीन था कि वह लड़की उसकी मदद के लिए ज़रूर आएगी। और हुआ भी कुछ ऐसा ही, वह लड़की आई। उससे उसने अपनी मुश्किल कह सुनाई, "अब तो बिना जौ के सौ बोरों के मेरे पिता मुझे घर में नहीं घुसने देंगे।" लड़की सोचकर बोली, "एक तरीका है।" उसने भेड़ों के सींग काट लिए। उन्हें बेचकर जो रुपये मिले उनसे सौ बोरे जौ खरीदे। बोरे लोनपो गार के बेटे को सौंपकर लड़की ने उसे घर भेज दिया।

भेड़ें और जौ के बोरे पिता के हवाले करते हुए लोनपो गार का बेटा खुश था। उसने विजयी भाव से सारी कहानी कह सुनाई। सुनकर लोनपो गार बोले, "उस लड़की से कहो कि हमें नौ हाथ लंबी राख की रस्सी बनाकर दे।" उनके बेटे ने लड़की के पास जाकर पिता का संदेश दोहरा दिया। लड़की ने एक शर्त रखी, "मैं रस्सी बना तो दूँगी मगर तुम्हारे पिता को वह गले में पहननी होगी।" लोनपो गार ने सोचा, ऐसी रस्सी बनाना ही असंभव है इसलिए लड़की की शर्त मंज़ूर कर ली।

अगले दिन लड़की ने नौ हाथ लंबी रस्सी ली। उसे पत्थर के सिल पर रखा और जला दिया। रस्सी जल गई, मगर रस्सी के आकार की राख बच गई। इसे वह सिल समेत लोनपो गार के पास ले गई और उसे पहनने के लिए कहा।



अपनी बात

लोनपो गार रस्सी देखकर चकित रह गए। वे जानते थे कि राख की रस्सी को गले में पहनना तो दूर, उठाना भी मुश्किल है। हाथ लगाते ही वह टूट जाएगी। लड़की की समझदारी के सामने उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई। बिना वक्त गँवाए लोनपो गार ने अपने बेटे की शादी का प्रस्ताव लड़की के सामने रख दिया। धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गई।

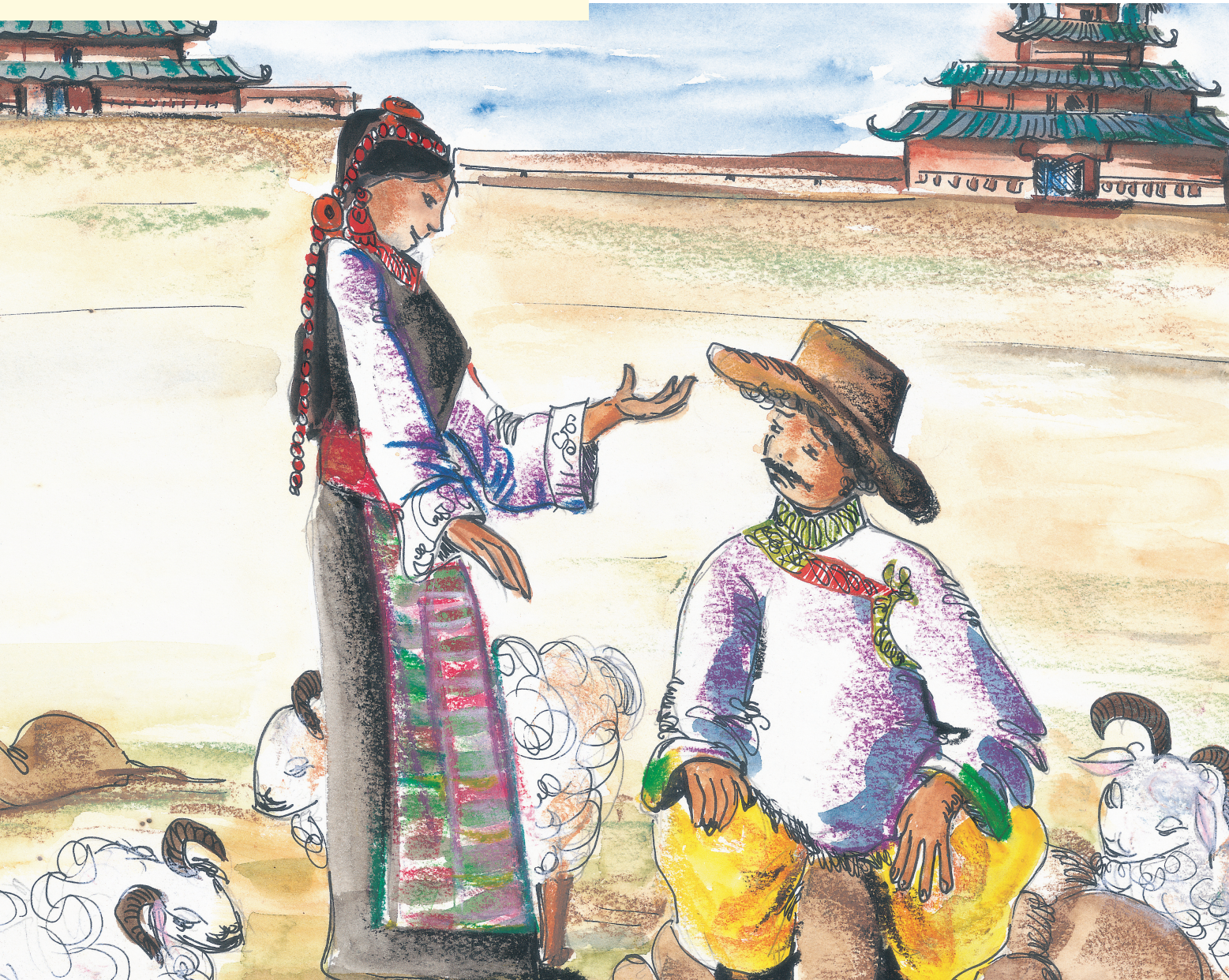

भोला-भाला

1. तिब्बत के मंत्री अपने बेटे के भोलेपन से चिंतित रहते थे।
   (क) तुम्हारे विचार से वे किन-किन बातों के बारे में सोचकर परेशान होते थे?
   (ख) तुम तिब्बत के मंत्री की जगह होती तो क्या उपाय करतीं?

शहर की तरफ़

1. "मंत्री ने अपने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया।"
   (क) मंत्री ने अपने बेटे को शहर क्यों भेजा था?
   (ख) उसने अपने बेटे को भेड़ों के साथ शहर में ही क्यों भेजा?
   (ग) तुम्हारे घर के बड़े लोग पहले कहाँ रहते थे? घर में पता करो। आस-पड़ोस में भी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में पता करो जो किसी दूसरी जगह जाकर बस गया हो। उनसे बातचीत करो और जानने की कोशिश करो कि क्या वे अपने निर्णय से खुश हैं। क्यों? एक पुरुष, एक महिला और एक बच्चे से बात करो। यह भी पूछो कि उन्होंने वह जगह क्यों छोड़ दी?

2. 'जौ' एक तरह का अनाज है जिसे कई तरह से इस्तेमाल किया जाता है। इसकी रोटी बनाई जाती है, सत्तू बनाया जाता है और सूखा भूनकर भी खाया जाता है। अपने घर में और स्कूल में बातचीत करके कुछ और अनाजों के नाम पता करो।

गेहूँ	जौ
.....	.....
.....	.....

3. गेहूँ और जौ अनाज होते हैं और ये तीनों शब्द संज्ञा हैं। 'गेहूँ' और 'जौ' अलग-अलग किस्म के अनाजों के नाम हैं इसलिए ये दोनों व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं और 'अनाज' जातिवाचक संज्ञा है। इसी प्रकार 'रिमझिम' व्यक्तिवाचक संज्ञा है और 'पाठ्यपुस्तक' जातिवाचक संज्ञा है।
   (क) नीचे दी गई संज्ञाओं का वर्गीकरण इन दो प्रकार की संज्ञाओं में करो–

लेह	धातु	शेरवानी	भोजन
ताँबा	खिचड़ी	शहर	वेशभूषा

   (ख) ऊपर लिखी हर जातिवाचक संज्ञा के लिए तीन-तीन व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ खुद सोचकर लिखो।

तुम सेर, मैं सवा सेर

1. इस लड़की का तो सभी लोहा मान गए। था न सचमुच नहले पर दहला! तुम्हें भी यही करना होगा।

तुम ऐसा कोई काम ढूँढ़ो जिसे करने के लिए सूझबूझ की ज़रूरत हो। उसे एक कागज़ में लिखो और तुम सभी अपनी-अपनी चिट को एक डिब्बे में डाल दो। डिब्बे को बीच में रखकर उसके चारों ओर गोलाई में बैठ जाओ। अब एक-एक करके आओ, उस डिब्बे से एक चिट निकालकर पढ़ो और उसके लिए कोई उपाय सुझाओ। जो बच्ची सबसे ज़्यादा उपाय सुझाएगी वह तुम्हारी कक्षा की 'बीरबल' होंगी।

2. मंत्री ने बेटे से कहा, "पिछली बार भेड़ों के बाल उतार कर बेचना मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आया।"
   क्या मंत्री को सचमुच यह बात पसंद नहीं आई थी? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

सींग और जौ

पहली बार में मंत्री के बेटे ने भेड़ों के बाल बेच दिए और दूसरी बार में भेड़ों के सींग बेच डाले। जिन लोगों ने ये चीज़ें खरीदी होंगी, उन्होंने भेड़ों के बालों और सींगों का क्या किया होगा? अपनी कल्पना से बताओ।

बात को कहने के तरीके

1. नीचे कहानी से कुछ वाक्य दिए गए हैं। इन बातों को तुम और किस तरह से कह सकती हो—
   (क) चैन से ज़िंदगी चल रही थी।
   (ख) होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी।
   (ग) मैं इसका हल निकाल देती हूँ।
   (घ) उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई।
2. 'लोनपो गार का बेटा होशियार नहीं था।'
   (क) 'होशियार' और 'चालाक' में क्या फ़र्क होता है? किस आधार पर किसी को तुम चालाक या होशियार कह सकती हो? इसी प्रकार 'भोला' और 'बुद्धू' के बारे में भी सोचो और कक्षा में चर्चा करो।
   (ख) लड़की को तुम 'समझदार' कहोगी या बुद्धिमान? क्यों?



नाम दो

कहानी में लोनपो गार के बेटे और लड़की को कोई नाम नहीं दिया गया है। नीचे तिब्बत

में बच्चों के नामकरण के बारे में बताया गया है। यह परिचय पढ़ो और मनपसंद नाम छाँटकर बेटे और लड़की को कोई नाम दो।

नायिमा, डावा, मिगमार, लाखपा, नुखू, फू दोरजे—ये क्या हैं? कोई खाने की चीज़ या घूमने की जगहों के नाम। जी नहीं, ये हैं तिब्बती बच्चों के कुछ नाम। ये सारे नाम तिब्बत में शुभ माने जाते हैं। 'नायिमा' नाम दिया जाता है रविवार को जन्म लेने वाले बच्चों को। मानते हैं कि इससे बच्चे को उस दिन के देवता सूरज जैसी शक्ति मिलेगी और जब-जब उसका नाम पुकारा जाएगा, यह शक्ति बढ़ती जाएगी। सोमवार को जन्म लेने वाले बच्चों का नाम 'डावा' रखा जाता है। यह लड़का-लड़की दोनों का नाम हो सकता है। तिब्बती भाषा में डावा के दो मतलब होते हैं, सोमवार और चाँद। यानी डावा चाँद जैसी रोशनी फैलाएगी और अँधेरा दूर करेगी। तिब्बत में बुद्ध के स्त्री-पुरुष रूपों पर भी नामकरण करते हैं खासकर दोलमा नाम बहुत मिलता है। यह बुद्ध के स्त्री रूप तारा का ही तिब्बती नाम है।

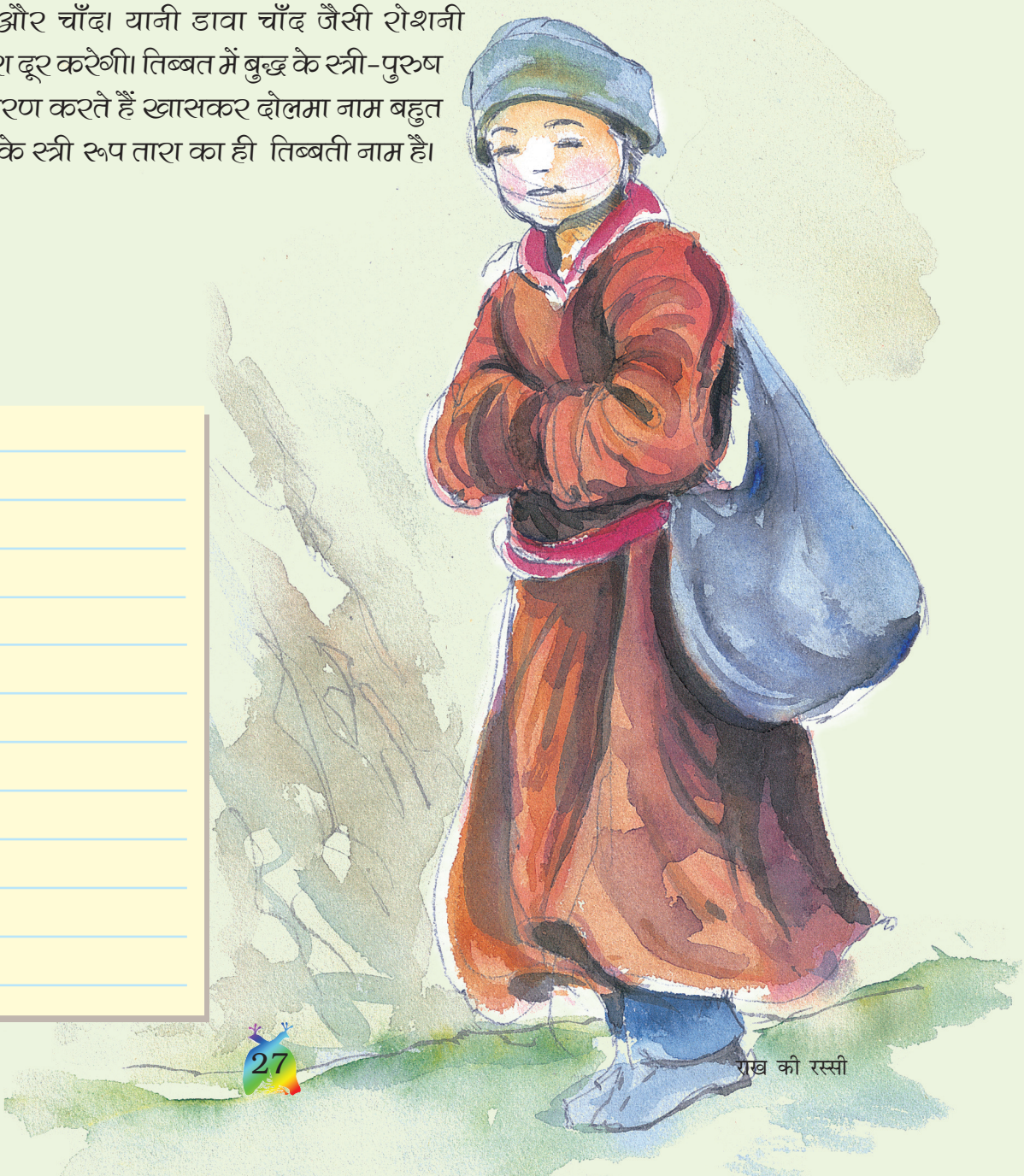

5 पापा जब बच्चे थे



पापा जब छोटे थे, तो उनसे अक्सर पूछा जाता था, "बड़े होकर तुम क्या बनना चाहते हो?" पापा के पास जवाब हमेशा तैयार होता। मगर उनका जवाब हर बार अलग-अलग होता था।

शुरू-शुरू में पापा चौकीदार बनना चाहते थे। उन्हें यह सोचना बहुत अच्छा लगता था कि जब सारा शहर सोता है, चौकीदार जागता है। उन्हें यह सोचना भी अच्छा लगता था कि जब हर कोई सोया हुआ हो, वह खूब शोर मचा सकते हैं। उन्हें पक्का यकीन था कि बड़े होकर वह चौकीदार ही बनेंगे।

लेकिन एक दिन अपने चटकदार हरे ठेले को लिए आइसक्रीम वाला आ गया। भई वाह! पापा आइसक्रीम वाला बनेंगे। वह ठेले को लेकर घूम भी सकते हैं और जितना मन चाहे उतनी आइसक्रीम भी खा सकते हैं।

पापा ने सोचा, "मैं एक आइसक्रीम बेचूँगा तो एक खुद खाऊँगा। छोटे बच्चों को तो मैं मुफ़्त में आइसक्रीम दिया करूँगा।"

जब पापा के माता-पिता ने यह सुना कि वह आइसक्रीम बेचनेवाला बनना चाहते हैं, तो उन्हें बहुत हैरानी हुई। उन्हें यह बात बहुत मज़ेदार लगी और वे खूब हँसे लेकिन पापा इसी बात पर अड़े रहे कि वह यही काम करेंगे।

फिर एक दिन रेलवे स्टेशन पर पापा ने एक अजीब आदमी को देखा। यह आदमी इंजनों और डिब्बों से खेल रहा था। लेकिन यह डिब्बे और इंजन खिलौने नहीं बल्कि असली थे, असली! कभी वह प्लेटफ़ार्म पर उछल कर आ जाता तो कभी डिब्बों के नीचे चला जाता। वह कोई बहुत अजीब और मज़ेदार खेल खेल रहा था।

पापा ने पूछा, "यह कौन है?"

उन्हें बताया गया, "यह शंटिंग करने वाला है।"

"शंटिंग किसे कहते हैं?" पापा ने पूछा।

"जब रेलगाड़ी अपनी यात्रा पूरी कर लेती है तो उसे अगली यात्रा के लिए तैयार करना होता है। रेलगाड़ी की साफ़-सफ़ाई की जाती है। इंजन को घुमाकर ईंधन-पानी भरा जाता है। इसे शंटिंग कहते हैं।" पापा को बताया गया।

बस, पापा को पता चल गया कि वह क्या बनेंगे! वह तो रेलगाड़ी के डिब्बों की शंटिंग करेंगे! इससे भी ज़्यादा मज़ेदार और क्या हो सकता है? ज़ाहिर है कि कुछ भी नहीं। जब पापा ने कहा कि वह शंटिंग करने वाला बनेंगे तो किसी ने उनसे पूछा, "मगर तुम तो कहते थे कि तुम आइसक्रीम बेचने का काम करोगे! अब आइसक्रीम बेचने के काम का क्या होगा?"

यह सचमुच समस्या थी। पापा ने शंटिंग करने वाला बनने की सोच ली थी, मगर आइसक्रीम बेचने का चटकदार हरा ठेला भी वह नहीं गँवाना चाहते थे। आखिर उन्होंने रास्ता निकाल लिया।



पापा ने जवाब दिया, "मैं शंटिंग करने वाला और आइसक्रीम बेचने वाला दोनों बनूँगा।"

सबको बहुत अचंभा हुआ। उन्होंने पूछा, "तुम दोनों काम एक साथ कैसे करोगे?"

पापा ने कहा, "इसमें क्या मुश्किल है। आइसक्रीम मैं सुबह बेचा करूँगा। कुछ देर आइसक्रीम बेचने के बाद मैं स्टेशन चला जाया करूँगा। वहाँ मैं कुछ डिब्बों की शंटिंग करूँगा और फिर जाकर कुछ आइसक्रीम और बेच आऊँगा। इसके बाद मैं फिर स्टेशन चला जाऊँगा। कुछ डिब्बों की शंटिंग कर लूँगा, इसके बाद जाकर फिर कुछ आइसक्रीम और बेच लूँगा। इसमें ज़्यादा मुश्किल नहीं होगी क्योंकि अपना ठेला मैं स्टेशन के पास ही खड़ा करूँगा और इसलिए गाड़ियों के लिए मुझे ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ेगा।"

सब लोग फिर हँस पड़े। पापा गुस्से में आकर बोले, "अगर तुम मेरी हँसी उड़ाओगे तो मैं साथ में चौकीदार भी बन जाऊँगा। आखिर रात में करने के लिए होता ही क्या है!"

सभी कुछ तय हो गया, लेकिन एक दिन पापा को वायुयान चालक बनने की सूझी। इसके बाद उन्होंने अभिनेता बनने की सोची। इसके अलावा वह

जहाज़ी भी बनना चाहते थे। कम से कम वह चरवाहा बनकर लाठी हिलाते हुए गायों के पीछे घूमते हुए अपने दिन बिताना तो चाहते ही थे।

अंत में एक दिन उन्होंने तय किया कि वह असल में जो बनना चाहते हैं वह है कुत्ता। उस दिन वह दिन भर चारों हाथ-पैरों पर इधर-उधर भागते हुए अजनबियों पर भौंकते रहे। एक बूढ़ी महिला ने उनके सिर को सहलाना चाहा तो पापा ने उन्हें काटने की कोशिश तक की! पापा ने भौंकना तो बड़ी अच्छी तरह से सीख लिया लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी वह अपने पैर से कान के पीछे खुजाना नहीं सीख पाए। उन्होंने सोचा कि अगर वह बाहर जाकर अपने पालतू कुत्ते के साथ बैठ जाएँ, तो शायद वह कान के पीछे खुजाना ज़्यादा जल्दी सीख जाएँगे। पापा कुत्ते के पास जाकर बैठ गए। उसी वक्त एक अजनबी फ़ौजी अफ़सर उधर से निकला। वह खड़ा होकर पापा को देखने लगा। वह उन्हें कुछ देर तक देखता रहा और फिर उसने पूछा, "यह तुम क्या कर रहे हो?"

पापा ने जवाब दिया, "मैं कुत्ता बनना सीख रहा हूँ।"

तब फ़ौजी ने पूछा, "तुम कुत्ता बनना क्यों चाहते हो?"

पापा ने कहा, "क्योंकि मैं काफ़ी दिन तक इनसान बनकर रह चुका हूँ।"



अफ़सर ने कहा, "बात तो सही है। पर क्या तुम जानते भी हो कि इनसान किसे कहते हैं?"

पापा ने पूछा, "मुझे तो नहीं पता। आप ही बता दीजिए।"

अफ़सर ने कहा, "इसके बारे में तुम अपने आप सोचो!"

अफ़सर वहाँ से चला गया। वह न तो

हँसा और न मुसकुराया। पापा सोचने लगे। वह सोचते ही रहे। अफ़सर ने उन्हें कोई बात भी नहीं समझाई थी पर अचानक ही यह बात पापा की समझ में आ गई कि वह रोज़-रोज़ अपना इरादा नहीं बदल सकते। अगली बार जब उनसे यही सवाल पूछा गया तो उन्हें अफ़सर की याद आ गई, और उन्होंने कहा, "मैं इनसान बनना चाहता हूँ।"

इस बार कोई भी नहीं हँसा और पापा समझ गए कि यही सबसे अच्छा जवाब है। आज भी वह यही समझते हैं। पहली बात तो यही है कि हमें अच्छा इंसान बनना चाहिए।

–अलेक्सांद्र रस्किन

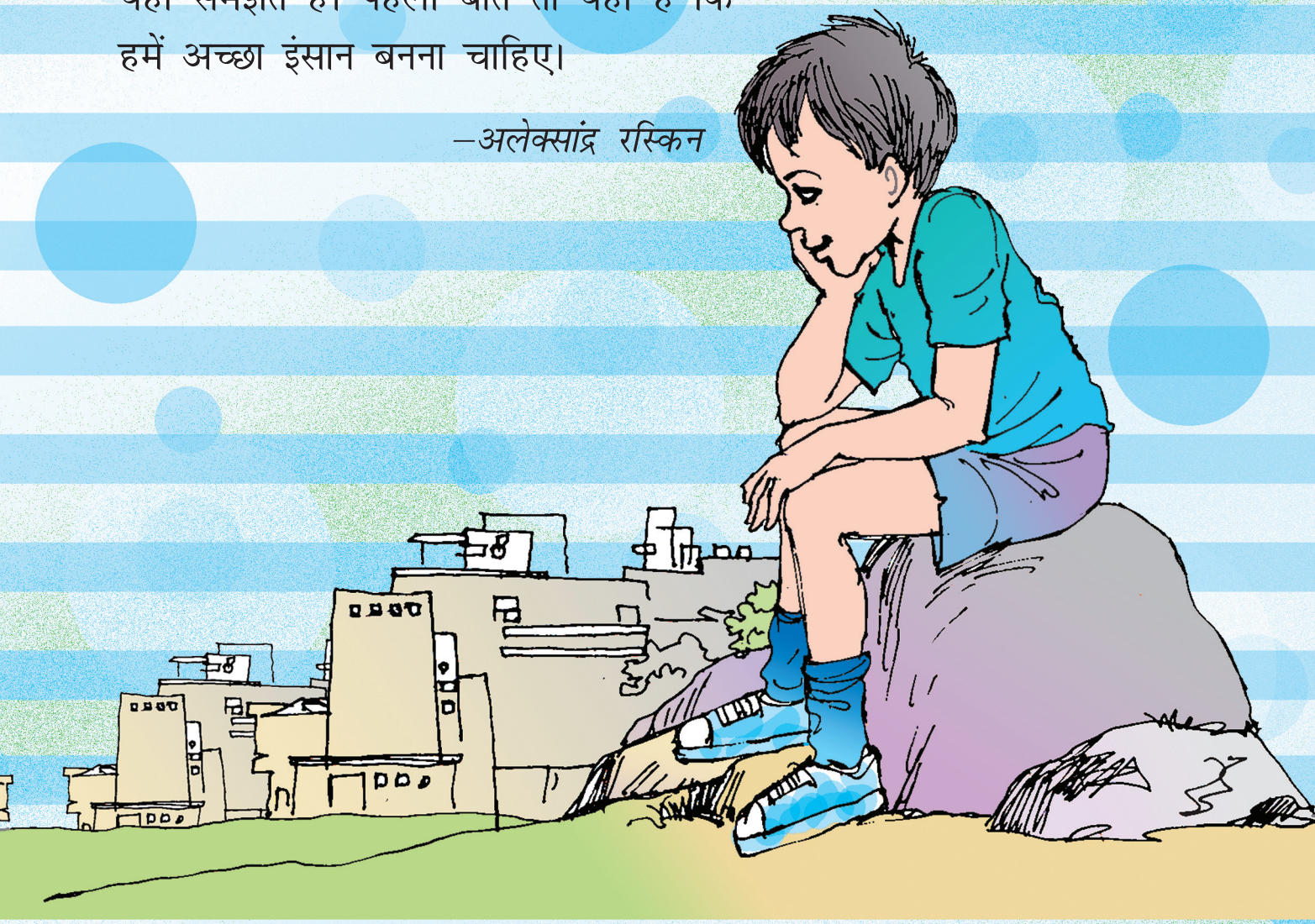



तुम्हारी बात

(क) पापा ने जितने काम सोचे, उनमें से तुम्हें सबसे दिलचस्प काम कौन-सा लगता है? क्यों?

(ख) क्या तुम्हें भी घर में बताया जाता है कि तुम्हें बड़े होकर क्या काम करना है? कौन-कौन कहता है? क्या कहता है?

(ग) अपने मम्मी या पापा से पता करो कि वे जब बच्चे थे तब बड़े होकर क्या-क्या करने की सोचते थे।

(घ) अपने घर के किसी भी एक सदस्य से उसके काम के बारे में जानकारी हासिल करो।

- पता करो उनके काम को किस नाम से जाना जाता है?
- उस काम को अच्छी तरह करने के लिए कौन-कौन सी बातें मालूम होनी चाहिए?
- उन्हें अपने काम में किन बातों से परेशानी होती है?



कहानी से आगे

शुरू-शुरू में पापा चौकीदार बनना चाहते थे।

(क) चौकीदार रात को भी काम करते हैं। इसके अलावा और कौन-कौन से कामों में रात को जागना पड़ता है?

पापा कई तरह के काम करना चाहते थे।

(ख) क्या तुम किसी व्यक्ति को जानते हो जो एक से ज़्यादा तरह के काम करता है? उस व्यक्ति के बारे में बताओ।



आओ खेलें-*शेखचिल्ली कहता है*

पापा अपने पैर से कान के पीछे नहीं खुजा पाते थे। आओ देखें, तुम कौन-कौन से काम कर सकती हो! एक खेल खेलते हैं। खेल का नाम



है—**शेखचिल्ली कहता है**। तुममें से एक बनेगा शेखचिल्ली। जो शेखचिल्ली कहेगा, बाकी सबको वैसे ही करना है।

शेखचिल्ली इस तरह के आदेश दे सकता है—

- शेखचिल्ली कहता है— अपने दाएँ हाथ को सिर के पीछे से ले जाकर नाक को पकड़ो।
- अपने दाएँ हाथ को दाईं टाँग के नीचे से ले जाकर दायाँ कान पकड़ो।
- शेखचिल्ली कहता है— खड़े होकर झुको।
- अपने हाथों से पैरों को छुओ।
- सिर अपने घुटनों से लगाओ।

ध्यान रहे, तुम्हें केवल वही आदेश मानना है जिसके साथ जुड़ा हो— शेखचिल्ली कहता है। अगर तुमने कोई और आदेश मान लिया तो तुम खेल से बाहर हो जाओगे।



सोच-विचार

अफ़सर के जाने के बाद पापा बहुत सोचते रहे। बताओ, वह क्या-क्या सोच रहे होंगे? सही (✓) का निशान लगाओ।

- यह अफ़सर आखिर है कौन?
- अब मैं रोज़-रोज़ अपना इरादा नहीं बदल सकता।
- कुत्ता बनना बड़ा कठिन काम है।
- ये फ़ौजी अफ़सर मुझ पर हँसा क्यों नहीं, बाकी सब तो हँसते हैं।
- इस अफ़सर को कुत्ता बनना नहीं आता। इसीलिए मुझे बहका रहा है।
- .....
- .....



अगर.....

पापा ने कहा, "अपना ठेला मैं स्टेशन के पास ही खड़ा करूँगा।"

(क) अगर तुम पापा की जगह होतीं तो ठेला कहाँ लगातीं? ऐसा तुमने क्यों तय किया?

(ख) अगर तुम रेल से सफ़र करोगी तो तुम्हें प्लेटफ़ॉर्म और रेलगाड़ी में कौन-कौन लोग नज़र आएँगे?



परिवार

पापा के पापा को दादा कहते हैं। इन्हें तुम अपने घर में क्या कहकर बुलाओगी?

पापा के पापा	.....	माँ के पापा	.....
पापा की माँ	.....	माँ की माँ	.....
पापा के बड़े भाई	.....	माँ के भाई	.....
पापा की बहन	.....	माँ की बहन	.....
पापा के छोटे भाई	.....	माँ की बहन के पति	.....



एक शब्द के बदले दूसरा

पापा को वायुयान चालक बनने की सूझी। इसके बाद ***उन्होंने*** *अभिनेता बनने की सोची। इसके अलावा* ***वह*** *जहाज़ी भी बनना चाहते थे।*

ऊपर के वाक्यों में **उन्होंने** और **वह** का इस्तेमाल **पापा** की जगह पर हुआ है। हम अक्सर एक ही शब्द को दोहराने की बजाय उसकी जगह किसी दूसरे शब्द का इस्तेमाल करते हैं। ***मैं, तुम, इस*** भी ऐसे ही शब्द हैं।

(क) पाठ में से ऐसे शब्दों के पाँच उदाहरण छाँटो।

(ख) इनकी मदद से वाक्य बनाओ।



कौन-किसमें तेज़

सभी बच्चे और बड़े किसी न किसी काम में माहिर होते हैं। कोई साइकिल चलाने में होशियार होता है तो कोई चित्र बनाने में तेज़ होता है। तुम्हारे दोस्तों और परिवार में कौन किस काम में माहिर है? उनके नाम लिखो।

- जो बढ़िया कहानी गढ़ सकते हैं .....
- जो खूबसूरत कढ़ाई कर सकते हैं .....
- जो कलाबाज़ियाँ खा सकते हैं .....
- जो दूसरों की बढ़िया नकल उतार सकते हैं .....
- जो हाथ से बढ़िया स्वेटर बुन सकते हैं .....
- जो सबके सामने किसी चीज़ के बारे में दो मिनट तक बता सकते हैं .....
- जो कठिन पहेलियाँ सुलझा सकते हैं .....
- जो खुलकर ज़ोर से हँस सकते हैं .....
- जो तरह-तरह की आवाज़ें बना सकते हैं .....
- जो अंदाज़े से ही चीज़ों का सही माप या वज़न बता सकते हैं .....
- जो बढ़िया अभिनय कर सकते हैं .....
- जो बेकार पड़ी चीज़ों से सुंदर चीज़ें बना सकते हैं .....

तुम किन-किन चीज़ों में माहिर हो, यह भी बताओ।

.....

.....

.....

.....

.....

कैसे थे पापा

नीचे लिखी पंक्तियाँ पढ़ो। इन पंक्तियों के आधार पर बताओ कि तुम पापा के बारे में क्या सोचती हो?

(क) पापा के पास जवाब हमेशा तैयार होता था।
ऐसा लगता है कि *पापा बहुत चतुर थे*।

(ख) पापा का जवाब हमेशा अलग-अलग होता था।
ऐसा लगता है कि .....

(ग) मैं छोटे बच्चों को मुफ़्त में आइसक्रीम दिया करूँगा।
ऐसा लगता है कि .....

(घ) रात में करने के लिए होता ही क्या है? रात में मैं चौकीदारी करूँगा।
ऐसा लगता है कि .....



6 किरमिच की गेंद

गर्मी की छुट्टियाँ थीं। दोपहर के समय दिनेश घर में बैठा कोई कहानी पढ़ रहा था। तभी पेड़ के पत्तों को हिलाती हुई कोई वस्तु धम से घर के पीछे वाले बगीचे में गिरी। दिनेश आवाज़ से पहचान गया कि वह वस्तु क्या हो सकती है। वह एकदम से उठकर बरामदे की चिक सरका कर बगीचे की ओर भागा।

"अरे अरे, बेटा कहाँ जा रहा है? बाहर लू चल रही है।" दिनेश की माँ मशीन चलाते-चलाते एकदम ज़ोर से बोलीं। परंतु दिनेश रुका नहीं। उसने पैरों में चप्पल भी नहीं पहनी। जून का महीना था। धरती तवे की तरह तप रही थी। पर दिनेश को पैरों के जलने की भी चिंता नहीं थी। वह जहाँ से आवाज़ आई थी, उसी ओर भाग चला।

सामने की क्यारी में भिंडियों के ऊँचे-ऊँचे पौधे थे। एक ओर सीताफल की घनी बेल फैली हुई थी। क्यारियों के चारों ओर हरे-हरे केले के वृक्ष लहरा रहे थे। दिनेश ने जल्दी-जल्दी भिंडियों के पौधों को उलटना-पलटना आरंभ किया। जब वहाँ कुछ नहीं मिला तो उसने सारी सीताफल की बेल छान मारी।

बराबर में ही घूँस ने गड्ढे बना रखे थे। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते जब उसकी निगाह उधर गई तो उसने देखा कि गड्ढे के ऊपर ही एक बिलकुल नई चमचमाती किरमिच की गेंद पड़ी है।

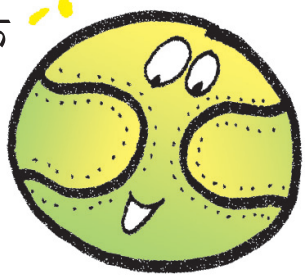

दिनेश ने हाथ बढ़ा कर गेंद उठा ली। लगता था जैसे किसी ने उसे आज ही बाज़ार से खरीदा है। उसने उसे

उलट-पलटकर देखा परंतु कुछ भी समझ में नहीं आया। नज़र उठाकर उसने पास की तिमंज़िली इमारत की ओर देखा कि हो सकता है किसी बच्चे ने इसे ऊपर से फेंका हो परंतु उस इमारत के इस ओर खुलने वाले सभी दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद थे। छत की मुँडेर से लेकर नीचे तक तेज़ धूप चिलचिला रही थी।

फिर कौन खरीद सकता है नई गेंद? दिनेश ने सुधीर, अनिल, अरविंद, आनंद, दीपक—सभी के नाम मन में दोहराए। यदि गेंद खरीदी भी है तो इस दोपहरी में इसे नीचे कौन फेंकेगा!

हो न हो, यह गेंद बाहर से ही आई है। उसने सड़क पर बने गोल चक्कर के बगीचे की ओर देखा परंतु वहाँ पर केवल दो-चार गायें ही दिखाई पड़ीं जो पेड़ों के नीचे सुस्ता रही थीं। उसे ध्यान आया कि जाने कितनी बार अपने मोहल्ले के बच्चों की गेंदें किक्रेट खेलते हुए दूर चली गईं और फिर कभी नहीं मिलीं। एक बार तो एक गेंद एक चलते हुए ट्रक में भी जा पड़ी थी।

तभी भीतर से माँ की आवाज़ आई, "अरे दिनेश, तू सुनेगा नहीं? सब अपने-अपने घरों में सो रहे हैं और तू धूप में घूम रहा है।"

दिनेश गेंद को हाथ में लिए हुए भीतर आ गया। ठंडे फर्श पर बिछी चटाई पर वह लेट गया और सोचने लगा—भले ही यह गेंद मोहल्ले में से किसी की न हो, परंतु ईमानदारी इसी में है कि एक बार सबसे पूछ लिया जाए।

गर्मी की छुट्टियाँ थीं। बच्चों ने खेलने की सुविधा को ध्यान में रखते हुए एक क्लब बनाया हुआ था। उस क्लब में सभी बच्चों के लिए बल्ले थे और गेंद खरीदने के लिए वे आपस में क्लब का चंदा देकर पैसे इकट्ठा कर लेते थे।

शाम को सारे बच्चे इकट्ठा हुए। दिनेश ने सभी से पूछा, "मुझे एक गेंद मिली है। अगर तुममें से किसी की गेंद खो गई हो, तो वह गेंद की पहचान बताकर गेंद मुझसे ले सकता है।"

तभी अनिल बोला, "गेंद तो मेरी खो गई है।"

"कब खोई थी तेरी गेंद?"

"यही कोई चार महीने पहले।"

"तो वह गेंद तेरी नहीं है", दिनेश ने कहा।

"फिर वह मेरी होगी", सुधीर ने तुरंत उस पर अपना अधिकार जताते हुए कहा।

"वह कैसे", दिनेश ने पूछा।

"तू मुझे गेंद दिखा दे, मैं अपनी निशानी बता दूँगा।"

"वाह! यह कैसे हो सकता है?" दिनेश बोला, "गेंद देखकर निशानी बताना कौन-सा कठिन है! बिना देखे बता, तब जानूँ।"

तभी ऊपर से दीपक उतर आया। दीपक अपना मतलब सिद्ध करने तथा अवसर पड़ने पर सभी को मित्र बना लेने में चतुर था। गेंद की बात सुनकर दीपक बोला, "गेंद मेरी है।"

"कैसे तेरी है?" सभी ने एक साथ पूछा, "कल ही तो तू कह रहा था कि इस बार तेरे पापा तुझे गेंद लाने के लिए पैसे नहीं दे रहे हैं।"

"मेरी गेंद तो पाँच महीने पहले खोई थी", दीपक ने कहा, "जब बड़े भैया की शादी हुई थी न, तभी सुनील ने मेरी गेंद छत पर से नीचे फेंक दी थी।"

दिनेश अच्छी तरह जानता था कि यह गेंद दीपक की नहीं है। दीपक की गेंद पाँच महीने पहले खोई थी। और यह कभी हो ही नहीं सकता कि गेंद पाँच-छह महीने पड़ी रहे और उस पर मिट्टी का एक भी दाग न लगे।



दीपक ने कहा, "मैं कुछ नहीं जानता। गेंद मेरी है। वह मेरी है और सिर्फ़ मेरी है।"

"अरे, जा जा, बड़ा आया गेंदवाला! क्या सबूत है कि यही गेंद नीचे फेंकी थी", अनिल ने पूछा।

दीपक ने कहा, "हाँ, सबूत है। मुझे गेंद दिखा दो, मैं फ़ौरन बता दूँगा।"

दिनेश ने देखा कि झगड़ा बढ़ रहा है। गेंद हथियाने के लिए दीपक सुधीर और सुनील का सहारा ले रहा है।

वह जानता था कि यदि गेंद दीपक के पास चली गई तो ये तीनों मिलकर खेलेंगे।

"अच्छा मैं गेंद ला रहा हूँ। परंतु जब तक पक्का सबूत नहीं मिलेगा, मैं किसी को दूँगा नहीं", दिनेश ने कहा।



गेंद आ गई। दीपक उसे देखते ही बोला, "यह मेरी है, यही है मेरी गेंद। यह लाल रंग का निशान मेरी ही गेंद पर था।"

"वाह! सभी गेंदों पर ऐसे ही निशान होते हैं", अनिल ने दिनेश का साथ देते हुए कहा।

दीपक ने फिर ज़ोर लगाया, "मैं अपने पापा से कहलवा सकता हूँ कि गेंद मेरी है।"

"अरे जा, ऐसे तो मैं अपने बड़े भाई से कहलवा सकता हूँ कि गेंद दिनेश की है!" अनिल ने कहा।

"कुछ भी हो गेंद मेरी है", दीपक ने उसे धरती पर मारते हुए कहा "धरती पर टप्पा पड़ते हुए मेरी गेंद में से ऐसी ही आवाज़ आती थी।"

"मेरे साथ बाज़ार चल। दुकानों पर जितनी गेंदें हैं, सभी के टप्पे की आवाज़ ऐसी ही होगी", अनिल ने फिर उसकी बात काट दी।

"अच्छी बात है, तो मैं इसे सड़क पर फेंक दूँगा। देखूँ कैसे कोई खेलेगा!" दीपक ने जैसे ही गेंद को सड़क पर फेंकने के लिए हाथ उठाया कि अनिल और दिनेश ने उसे पकड़ लिया। अब दीपक ने रुआँसे होते हुए अपना अंतिम हथियार आज़माया। बोला, "या तो गेंद मुझे दे दो, नहीं तो मैं इसके पैसे सुनील से लूँगा।"

अब तो सुनील, दीपक और सुधीर का गुट मज़बूत होने लगा था। तीनों का ही कहना था कि गेंद दीपक की है और उसे ही मिलनी चाहिए।

दिनेश तब तक चुप था। वास्तव में दिनेश का मन उस समय सबके साथ मिलकर उस गेंद से खेलने को कर रहा था। बोला, "अब चुप भी रहो झगड़ा बाद में कर लेंगे। अपने-अपने बल्ले ले आओ, पहले खेल लें।"

पाँच मिनट के भीतर ही खेल आरंभ हो गया। दिनेश बल्लेबाजी कर रहा था। अभी दो-चार बार ही खेला था कि वह चमकदार नई गेंद एकदम ज़ोर से उछली और दरवाज़ा पार कर सड़क पर जाते हुए एक स्कूटर में बनी सामान रखने की जालीदार टोकरी में जा गिरी। स्कूटर वाले को शायद पता भी नहीं चला। तेज़ी से चलते हुए स्कूटर के साथ गेंद भी चली गई।



बच्चे पहले तो चिल्लाते हुए स्कूटर के पीछे भागे, परंतु जल्दी ही सब रुक गए। वे समझ गए थे कि स्कूटर के पीछे भागना बेकार है। एक पल के लिए सभी ने एक-दूसरे की ओर देखा और फिर सभी ठहाका मार कर हँस पड़े।

—शांताकुमारी जैन

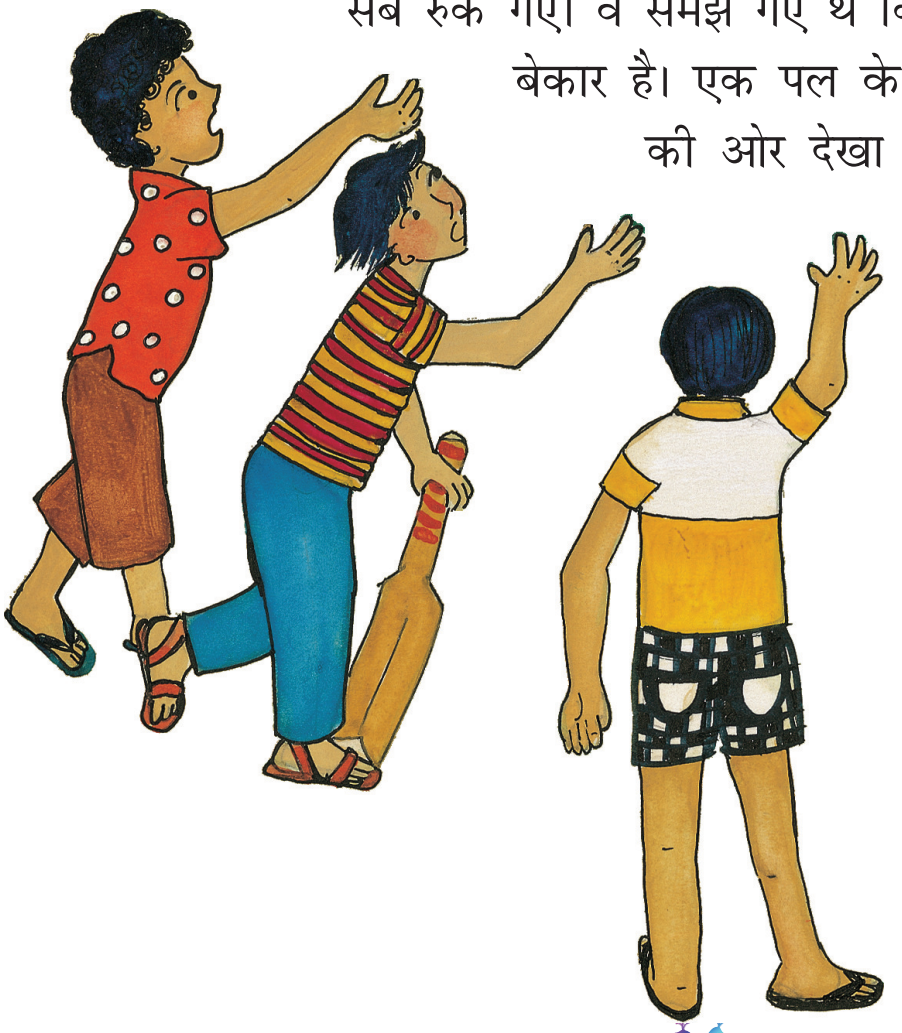



कहानी की बात

(क) *दिनेश की माँ मशीन चलाते-चलाते बोलीं, "बेटा, कहाँ जा रहे हो?"*

- दिनेश की माँ कौन-सी मशीन चला रही होंगी?
- तुमने इस मशीन को कहाँ-कहाँ देखा है?



(ख) *दिनेश ने सारी सीताफल की बेल छान मारी।*

- दिनेश क्या खोज रहा था?
- दिनेश को कैसे पता चला होगा कि क्यारी में वही चीज़ गिरी है?

(ग) *दिनेश अच्छी तरह जानता था कि गेंद दीपक की नहीं है।*

- दिनेश को यह बात कैसे पता चली कि गेंद दीपक की हो ही नहीं सकती?
- दीपक बार-बार गेंद को अपनी क्यों बता रहा होगा?



गेंद किसकी

(क) दीपक ने गेंद को अपना बताने के लिए उसके बारे में कौन-कौन सी बातें बताईं?

(ख) अगर दीपक और दिनेश गेंद के बारे में फ़ैसला करवाने तुम्हारे पास आते, तो तुम गेंद किसे देतीं? यह भी बताओ कि तुम यह फ़ैसला किन बातों को ध्यान में रखकर करतीं?



गेंद की कहानी

गेंद स्कूटर के साथ कहीं चली गई।

उसके बाद गेंद के साथ क्या-क्या हुआ होगा? सोचकर बताओ।



पहचान

मान लो तुम्हारा कोई खिलौना घर में ही कहीं खो गया है। तुमने अपने साथियों को घर पर बुलाया है ताकि सब मिलकर उसे खोज लें।
तुम अपने खिलौने की पहचान के लिए अपने साथियों को कौन-कौन सी बातें बताओगी? लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....



कहाँ

सामने की क्यारी में भिंडियों के ऊँचे-ऊँचे पौधे थे।

एक ओर सीताफल की घनी बेल फैली हुई थी।

सीताफल की बेल होती है और भिंडी का पौधा। बताओ और कौन-कौन सी सब्ज़ियाँ बेल और पौधे पर लगती हैं?

बेल	पौधा
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....



तरह-तरह की गेंदें

गेंदों के अनेक रंग-रूप होते हैं। अलग-अलग खेलों में अलग-अलग प्रकार की गेंदों का इस्तेमाल किया जाता है। नीचे दी गई जगह में खेलों के अनुसार गेंदों की सूची बनाओ।

क्रिकेट	*किरमिच*
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....



खोजो आस-पास

दिनेश चिक सरका कर बरामदे की ओर भागा।

(क) चिक पर्दे का काम करती है पर चिक और पर्दे में फ़र्क होता है। इन दोनों में क्या अंतर है? समूह में चर्चा करो।

इसी तरह पता लगाओ कि इन शब्दों में क्या अंतर है?

- टहनी-तना
- पेड़-पौधा
- घूँस-चूहा
- मुँडेर-चारदीवारी

(ख) चिक सरकंडे से भी बनती है और तीलियों से भी।
सरकंडे से और क्या-क्या बनता है? अपने आसपास पता करो और लिखो।

....

....



क्लब बनाएँ

मान लो तुम्हें अपने स्कूल में एक क्लब बनाना है जो स्कूल में खेल-कूद के कार्यक्रमों की तैयारी करेगा।

- इस क्लब में शामिल होने और इसको चलाने आदि के बारे में नियम सोचकर लिखो।
- तुम्हारे विचार से इस क्लब को अच्छी तरह चलाने के लिए नियमों की ज़रूरत है या नहीं? अपने जवाब का कारण भी बताओ।



एक, दो, तीन

दिनेश ने <u>तिमंज़िली इमारत</u> की ओर देखा।

जिस इमारत में तीन मंज़िलें हों, उसे तिमंज़िली इमारत कहते हैं।

बताओ, इन्हें क्या कहेंगे?

- जिस मकान में दो मंज़िलें हों .....
- जिस स्कूटर में दो पहिए हों .....
- जिस झंडे में तीन रंग हों .....
- जिस जगह पर चार राहें मिलती हों .....
- जिस स्कूटर में तीन पहिए हों .....



सब्ज़ी एक नाम अनेक

एक ही सब्ज़ी या फल के नाम अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग होते हैं। नीचे ऐसे कुछ नाम दिए गए हैं।

सीताफल	*कांदा*	*बटाटा*	*अमरूद*	*तोरी*	*शरीफ़ा*
काशीफल	*बैंगन*	*नेनुआ*	*तरबूज*	*कुम्हड़ा*	*घीया*

- बताओ कि तुम्हारे घर, शहर या कस्बे में इनमें से कौन-कौन से शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं?
- बाकी नामों का इस्तेमाल किन-किन स्थानों पर होता है? पता करो।





7 स्वतंत्रता की ओर



धनी को पता था कि आश्रम में कोई बड़ी योजना बन रही है, पर उसे कोई कुछ न बताता। "वे सब समझते हैं कि मैं नौ साल का हूँ इसलिए मैं बुद्धू हूँ। पर मैं बुद्धू नहीं हूँ!" धनी मन ही मन बड़बड़ाया।

धनी और उसके माता-पिता, बड़ी खास जगह में रहते थे— अहमदाबाद के पास, महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में। जहाँ पूरे भारत से लोग रहने आते थे। गांधी जी की तरह वे सब भी भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे। जब वे आश्रम में ठहरते तो चरखों पर खादी का सूत कातते, भजन गाते और गांधी जी की बातें सुनते।

साबरमती में सबको कोई न कोई काम करना होता— खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना, कुएँ से पानी लाना, गाय और बकरियों का दूध दुहना और सब्ज़ी उगाना। धनी का काम था बिन्नी की देखभाल करना। बिन्नी, आश्रम की एक बकरी थी। धनी को अपना काम पसंद था क्योंकि बिन्नी उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी। धनी को उससे बातें करना अच्छा लगता था।



उस दिन सुबह, धनी बिन्नी को हरी घास खिला कर, उसके बर्तन में पानी डालते हुए



बोला, "कोई बात ज़रूर है बिन्नी! वे सब गांधी जी के कमरे में बैठकर बातें करते हैं। कोई योजना बनाई जा रही है। मैं सब समझता हूँ।"

बिन्नी ने घास चबाते हुए सिर हिलाया, जैसे कि वह धनी की बात समझ रही हो। धनी को भूख लगी। कूदती-फाँदती बिन्नी को लेकर वह रसोईघर की तरफ़ चला। उसकी माँ चूल्हा फूँक रही थीं और कमरे में धुआँ भर रहा था।



"अम्मा, क्या गांधी जी कहीं जा रहे हैं?" उसने पूछा।

खाँसते हुए माँ बोलीं, "वे सब यात्रा पर जा रहे हैं।"

"यात्रा? कहाँ जा रहे हैं?" धनी ने सवाल किया।

"समुद्र के पास कहीं। अब सवाल पूछना बंद करो और जाओ यहाँ से धनी!" अम्मा ज़रा गुस्से से बोलीं, "पहले मुझे खाना पकाने दो।"

धनी सब्ज़ी की क्यारियों की तरफ़ निकल गया जहाँ बूढ़ा बिंदा आलू खोद रहा था। "बिंदा चाचा," धनी उनके पास बैठ गया, "आप भी यात्रा पर जा रहे हैं क्या?" बिंदा ने सिर हिलाकर मना किया। उसके कुछ बोलने से पहले धनी ने उतावले होकर पूछा, "कौन जा रहे हैं? कहाँ जा रहे हैं? क्या हो रहा है?"

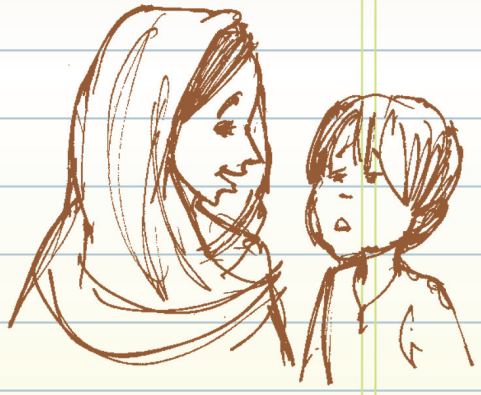



बिंदा ने खोदना रोक दिया और कहा, "तुम्हारे सब सवालों के जवाब दूँगा पर पहले इस बकरी को बाँधो! मेरा सारा पालक चबा रही है!"

धनी बिन्नी को खींच कर ले गया और पास के नींबू के पेड़ से बाँध दिया। फिर बिंदा ने उसे यात्रा के बारे में बताया। गांधी जी और उनके कुछ साथी गुजरात में पैदल चलते हुए, दांडी नाम की जगह पर समुद्र के पास पहुँचेंगे। गाँवों और शहरों से होते हुए पूरा महीना चलेंगे। दांडी पहुँच कर वे नमक बनाएँगे।



"नमक?" धनी चौंक कर उठ बैठा, "नमक क्यों बनाएँगे? वह तो किसी भी दुकान से खरीदा जा सकता है।"

"हाँ, मुझे मालूम है।" बिंदा हँसा," पर महात्मा जी की एक योजना है। यह तो तुम्हें पता ही है कि वह किसी बात के विरोध में ही यात्रा करते हैं या जुलूस निकालते हैं, है न?"

"हाँ, बिलकुल सही। मैं जानता हूँ। वे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ सत्याग्रह के जुलूस निकालते हैं जिससे कि उनके खिलाफ़ लड़ सकें और भारत स्वतंत्र हो जाए। पर नमक को लेकर विरोध क्यों कर रहे हैं? यह तो समझदारी वाली बात नहीं है।"



"बिलकुल, धनी! क्या तुम्हें पता है कि हमें नमक पर 'कर' देना पड़ता है?"



"अच्छा।" धनी हैरान रह गया।

"नमक की ज़रूरत सभी को है... इसका मतलब है कि हर भारतवासी, गरीब से गरीब भी, यह कर देता है," बिंदा चाचा ने आगे समझाया।



"लेकिन यह तो सरासर अन्याय है!" धनी की आँखों में गुस्सा था।

"हाँ, यह अन्याय है। इतना ही नहीं, भारतीय लोगों को नमक बनाने की मनाही है। महात्मा जी ने ब्रिटिश सरकार को कर हटाने को कहा पर उन्होंने यह बात ठुकरा दी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया है कि वे दांडी चल कर जाएँगे और समुद्र के पानी से नमक बनाएँगे।"

"एक महीने तक पैदल चलेंगे!" धनी सोच कर परेशान हो रहा था। "गांधी जी तो थक जाएँगे। वे दांडी बस या ट्रेन से क्यों नहीं जा सकते?"

"क्योंकि, यदि वे इस लंबी यात्रा पर दांडी तक पैदल जाएँगे तो यह खबर फैलेगी। अखबारों में फ़ोटो





छपेंगी, रेडियो पर रिपोर्ट जाएगी! और पूरी दुनिया के लोग यह जान जाएँगे कि हम अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं। और ब्रिटिश सरकार के लिए यह बड़ी शर्म की बात होगी।"

"गांधी जी, बड़े ही अक्लमंद हैं, हैं न?" धनी की आँखें चमकीं।

बिंदा ने हँसकर कहा, "हाँ, वह तो हैं ही।"

दोपहर को जब आश्रम में थोड़ी शांति छाई, धनी अपने पिता को ढूँढ़ने निकला। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर चरखा कात रहे थे।

"पिता जी, क्या आप और अम्मा दांडी यात्रा पर जा रहे हैं?" धनी ने सीधे काम की बात पूछी।

"मैं जा रहा हूँ। तुम और अम्मा यहीं रहोगे।"

"मैं भी आपके साथ चल रहा हूँ।"

"बेकार की बात मत करो धनी! तुम इतना लंबा नहीं चल पाओगे। आश्रम के नौजवान ही जा रहे हैं।"

धनी ने हठ पकड़ ली, "मैं नौ साल का हूँ और आपसे तेज़ दौड़ सकता हूँ।"

धनी के पिता ने चरखा रोक कर बड़े धीरज से समझाया, "सिर्फ़ वे लोग जाएँगे जिन्हें महात्मा जी ने खुद चुना है।"

"ठीक है! मैं उन्हीं से बात करूँगा। वह ज़रूर हाँ कहेंगे!" धनी खड़े होकर बोला और वहाँ से चल दिया।

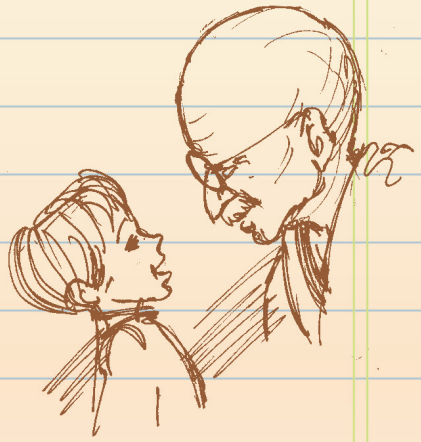

गांधी जी बड़े व्यस्त रहते थे। उन्हें अकेले पकड़ पाना आसान नहीं था। पर धनी को वह समय मालूम था जब उन्हें बात सुनने का समय होगा–रोज़ सुबह, वह आश्रम में पैदल घूमते थे।

अगले दिन जैसे ही सूरज निकला, धनी बिस्तर छोड़कर गांधी जी को ढूँढ़ने निकला। वे गौशाला में गायों को देख रहे थे। फिर वह सब्ज़ी के बगीचे में मटर और बंदगोभी देखते हुए बिंदा से बात करने लगे। धनी और बिन्नी लगातार उनके पीछे–पीछे चल रहे थे।

अंत में, गांधी जी अपनी झोंपड़ी की ओर चले। बरामदे में चरखे के पास बैठ कर उन्होंने धनी को पुकारा, "यहाँ आओ, बेटा!"

धनी दौड़कर उनके पास पहुँचा। बिन्नी भी साथ में कूदती हुई आई।

"तुम्हारा क्या नाम है, बेटा?"

"धनी, बापू।"

"और यह तुम्हारी बकरी है?"





"जी हाँ, यह मेरी दोस्त बिन्नी है, जिसका दूध आप रोज़ सुबह पीते हैं", धनी गर्व से मुस्कराया, "मैं इसकी देखभाल करता हूँ।"

"बहुत अच्छा!" गांधी जी ने हाथ हिलाकर कहा, "अब यह बताओ धनी कि तुम और बिन्नी सुबह से मेरे पीछे क्यों घूम रहे हो?"

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था", धनी थोड़ा घबराया। "क्या मैं आपके साथ दांडी चल सकता हूँ?" हिम्मत करके उसने कह डाला।

गांधी जी मुस्कुराए, "तुम अभी छोटे हो बेटा! दांडी तो बहुत दूर है! सिर्फ़ तुम्हारे पिता जैसे नौजवान ही मेरे साथ चल पाएँगे।"

"पर आप तो नौजवान नहीं हैं", धनी बोला, "आप नहीं थक जाएँगे?"

"मैं बहुत अच्छे से चलता हूँ", गांधी जी ने कहा।

"मैं भी बहुत अच्छे से चलता हूँ", धनी भी अड़ गया।

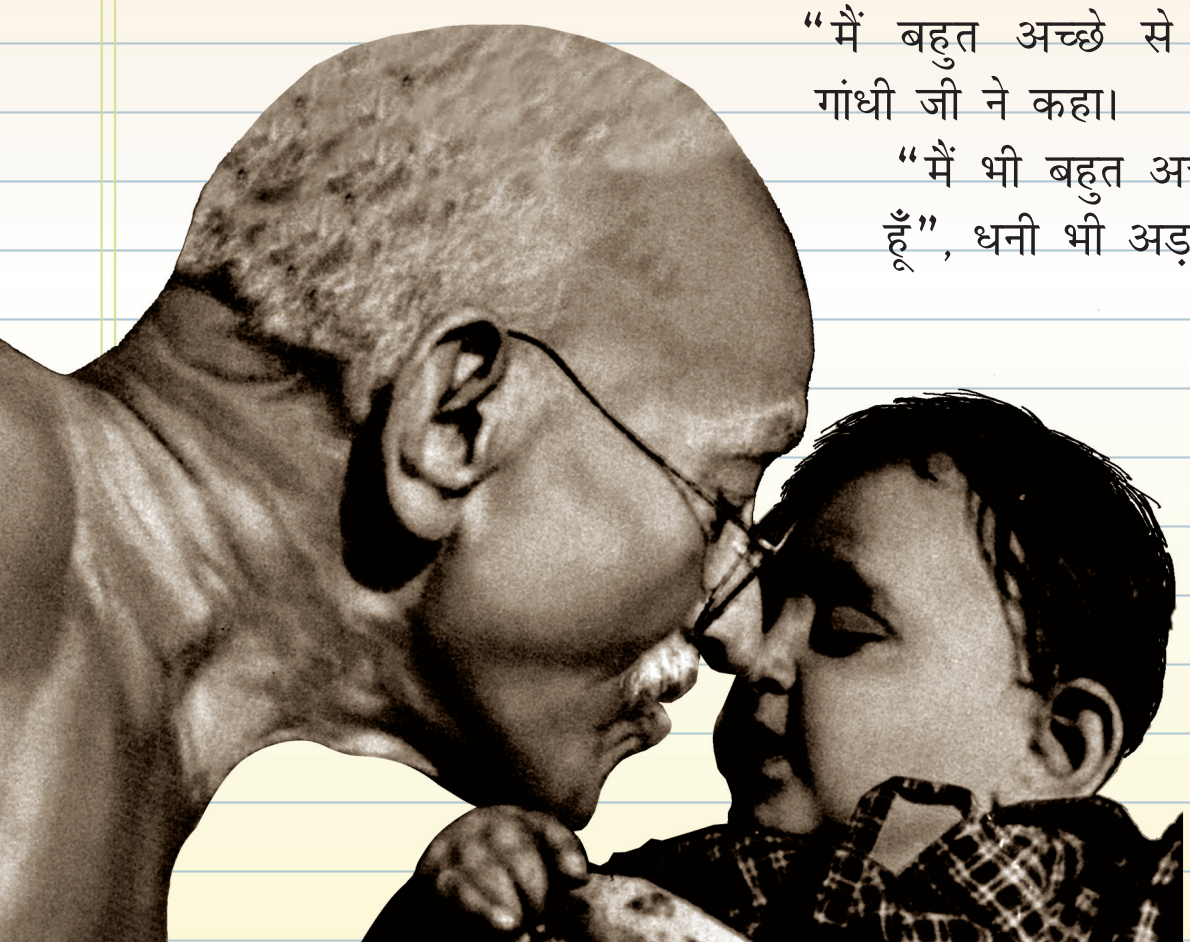



"हाँ, ठीक बात है", कुछ सोचकर गांधी जी बोले, "मगर एक समस्या है। अगर तुम मेरे साथ जाओगे तो बिन्नी को कौन देखेगा? इतना चलने के बाद, मैं तो कमज़ोर हो जाऊँगा। इसलिए, जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"



"हूँ... यह बात तो ठीक है, बिन्नी तभी खाती है, जब मैं उसे खिलाता हूँ", धनी ने प्यार से बिन्नी का सिर सहलाया, "और सिर्फ़ मैं जानता हूँ कि इसे क्या पसंद है।"

"बिलकुल सही। तो क्या तुम आश्रम में रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे?" गांधी जी प्यार से बोले।

"जी, हाँ, करूँगा", धनी बोला, "बिन्नी और मैं आपका इंतज़ार करेंगे।"

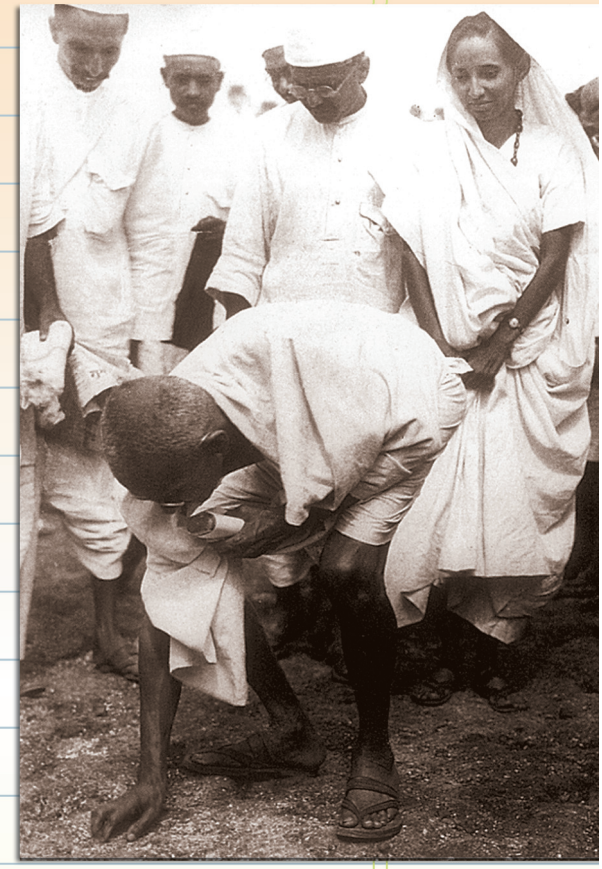

–सुभद्रा सेनगुप्ता

अनुवाद : मनीषा चौधरी

प्यारे बापू

इस कहानी को पढ़कर तुम्हें बापू के बारे में कई बातें पता चली होंगी। उनमें से कोई तीन बातें यहाँ लिखो।

- .....

  .....

- .....

  .....

- .....

  .....

चूल्हा

धनी की माँ चूल्हा फूँक रही थीं।

धनी की माँ खाना पकाने के लिए चूल्हे का इस्तेमाल करती थीं। नीचे कुछ चित्र बने हैं। इनके नाम पता करो और लिखो।

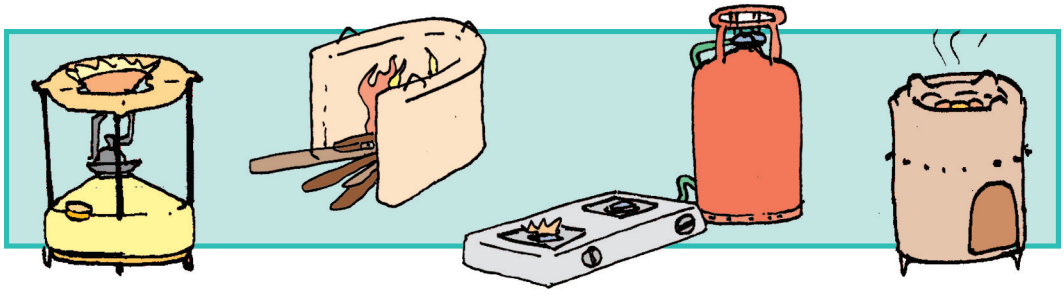

- इनमें कौन-कौन से ईंधन का इस्तेमाल किया जाता है?
- तुम्हारे घर में खाना पकाने के लिए इनमें से किसका इस्तेमाल किया जाता है?



कहानी से आगे

नीचे कहानी में आए कुछ शब्द लिखे हैं। कक्षा में चार-चार के समूह में एक-एक चीज़ के बारे में पता करो–

- स्वतंत्रता
- सत्याग्रह
- खादी
- चरखा

तुम इस काम में अपने दोस्तों से, बड़ों से, शब्दकोश या पुस्तकालय से सहायता ले सकते हो। जानकारी इकट्ठा करने के बाद कक्षा में इसके बारे में बताओ।

आगे की कहानी

गांधी जी ने धनी से कहा, "क्या तुम आश्रम में ही रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे?"
धनी ने गांधी जी की बात मान ली।

जब गांधी जी दांडी यात्रा से लौटे होंगे, तब आश्रम में क्या-क्या हुआ होगा? आगे की कहानी सोचकर लिखो।

कहानी से

(क) धनी ने गांधी जी से सुबह के समय बात करना क्यों ठीक समझा होगा?

(ख) धनी बिन्नी की देखभाल कैसे करता था?

(ग) धनी को यह कैसे महसूस हुआ होगा कि आश्रम में कोई योजना बनाई जा रही है?



कहानी और तुम

(क) धनी यात्रा पर जाने के लिए उत्सुक क्यों था?

- अगर तुम धनी की जगह होते तो क्या तुम यात्रा पर जाने की जिद करते? क्यों?

(ख) गांधी जी ने धनी को न जाने के लिए कैसे मनाया?

- क्या तुम गांधी जी के तर्क से सहमत हो? क्यों?



ताकत के लिए

गांधी जी ने कहा, "जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

बताओ, खूब सारी ताकत और अच्छी सेहत के लिए तुम क्या-क्या खाओगे-पिओगे?

चटपटी अंकुरित दाल	मीठा दूध
गर्म समोसे	रसीला आम
करारे गोलगप्पे	गर्मागर्म साग
कुरकुरी मक्का की रोटी	ठंडी आइसक्रीम
खुशबूदार दाल	रंग-बिरंगी टॉफी
मसालेदार अचार	ठंडा शरबत



विशेषता के शब्द

अभी तुमने जिन खाने-पीने की चीज़ों के नाम पढ़े, उनकी विशेषता बता रहे हैं ये शब्द—

चटपटी, मीठा, गर्म, ठंडा, कुरकुरी आदि

नीचे लिखी चीज़ों की विशेषता बताने वाले शब्द सोचकर लिखो—

..... हलवा ..... पेड़ ..... नमक ..... चींटी

..... पत्थर ..... कुरता ..... चश्मा ..... झंडा

चाँद या बिंदी

नीचे लिखे शब्दों में सही जगह पर ं या ँ लगाओ।

धुआ	कुआ	फूक	कहा
स्वतत्र	बाध	मा	गाव
बदगोभी	इतज़ार	पसद	

किसकी ज़िम्मेदारी?

धनी को बिन्नी की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। इनकी क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ थीं?

- माँ
- पिता
- बिंदा



ऐसे थे बापू

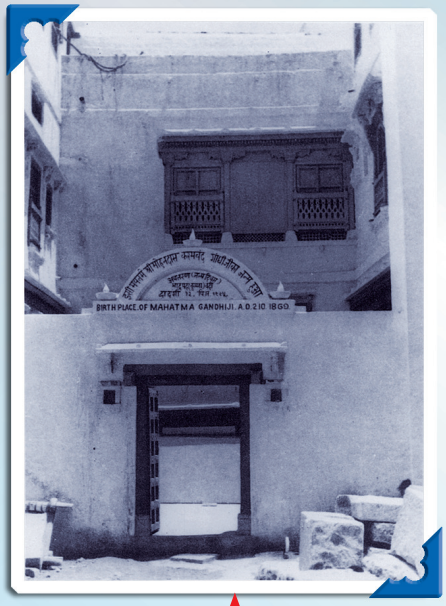

पोरबंदर, यहाँ गांधी जी का जन्म हुआ था



प्राथमिक विद्यालय, राजकोट जहाँ गांधी जी पढ़ते थे।

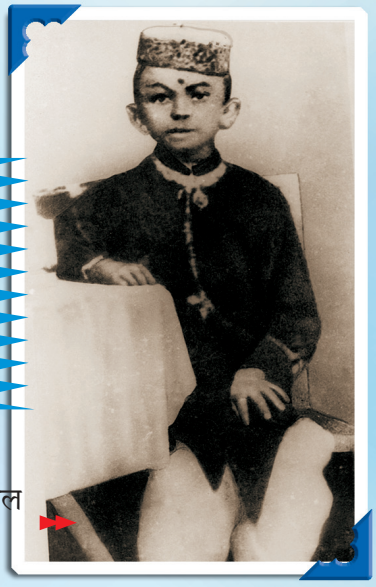

गांधी जी, 7 साल की आयु में



गांधी जी और कस्तूरबा सुबह सैर करते हुए



महात्मा गांधी प्रार्थना सभा में



महात्मा गांधी काम करते हुए

महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर, शांतिनिकेतन में (पश्चिम बंगाल)





महात्मा गांधी तुलसी का पौधा लगाते हुए

महात्मा गांधी लिखते हुए

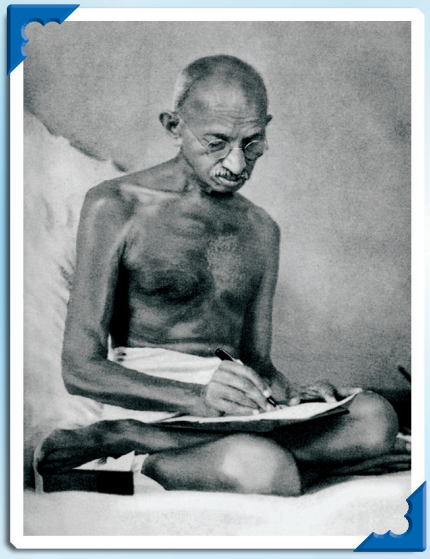

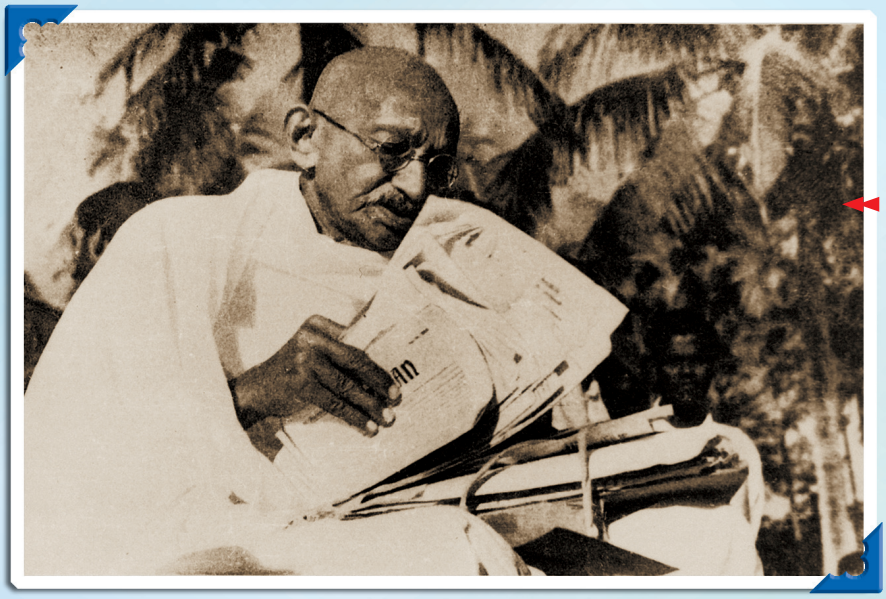

महात्मा गांधी पत्र पढ़ते हुए



8 दान का हिसाब



एक था राजा। राजा जी लकदक कपड़े पहनकर यूँ तो हज़ारों रुपये खर्च करते रहते थे, पर दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

राजसभा में एक से एक नामी लोग आते रहते थे, लेकिन गरीब, दुखी, विद्वान, सज्जन इनमें से कोई भी नहीं आता था क्योंकि वहाँ पर इनका बिलकुल सत्कार नहीं होता था।

एक बार उस देश में अकाल पड़ गया। पूर्वी सीमा के लोग भूखे-प्यासे मरने लगे। राजा के पास खबर आई। वे बोले, ''यह तो भगवान की मार है, इसमें मेरा कोई हाथ नहीं है।''

लोगों ने कहा, "महाराज, राजभंडार से हमारी सहायता करने की कृपा करें, जिससे हम लोग दूसरे देशों से अनाज खरीदकर अपनी जान बचा सकें।"

राजा ने कहा, "आज तुम लोग अकाल से पीड़ित हो, कल पता चलेगा, कहीं भूकंप आया है। परसों सुनूँगा, कहीं के लोग बड़े गरीब हैं, दो वक्त की रोटी नहीं जुटती। इस तरह सभी की सहायता करते-करते जब राजभंडार खत्म हो जाएगा तब खुद मैं ही दिवालिया हो जाऊँगा।"



यह सुनकर सभी निराश होकर लौट गए।

इधर अकाल का प्रकोप फैलता ही जा रहा था। न जाने रोज़ कितने ही लोग भूख से मरने लगे। लोग फिर राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजसभा में गुहार लगाई, "दुहाई महाराज! आपसे ज़्यादा कुछ नहीं चाहते, सिर्फ़ दस हज़ार रुपये हमें दे दें तो हम आधा पेट खाकर भी ज़िंदा रह जाएँगे।"

राजा ने कहा, "दस हज़ार रुपये भी क्या तुम्हें बहुत कम लग रहे हैं? और उतने कष्ट से जीवित रहकर लाभ ही क्या है!"

एक व्यक्ति ने कहा, "भगवान की कृपा से लाखों रुपये राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो। उसमें से एक-आध लोटा ले लेने से महाराज का क्या नुकसान हो जाएगा!"

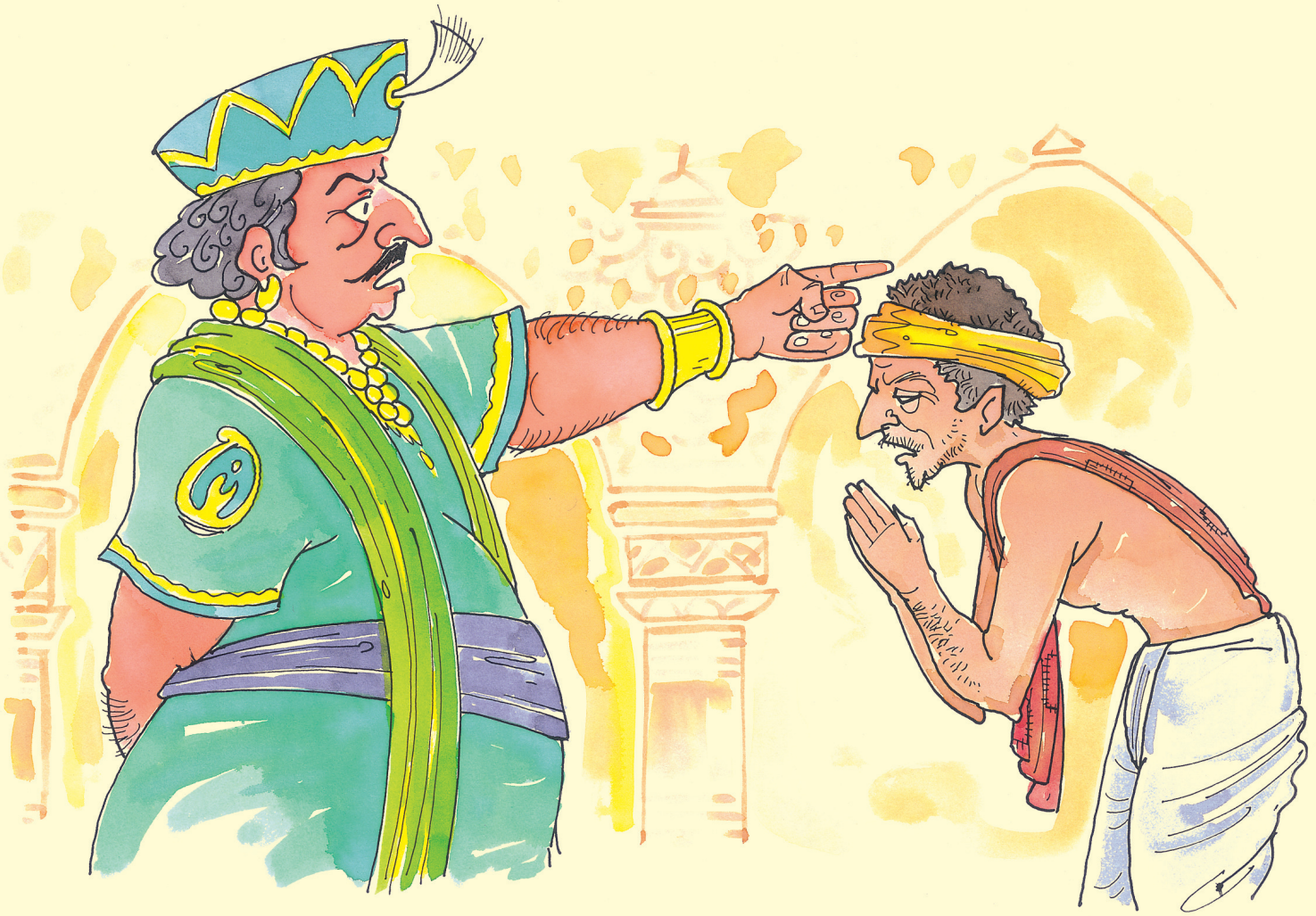

राजा ने कहा, "राजकोष में अधिक धन है तो क्या उसे दोनों हाथों से लुटा दूँ?"

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "महल में प्रतिदिन हज़ारों रुपये इन सुगंधित वस्त्रों, मनोरंजन और महल की सजावट में खर्च होते हैं। यदि इन रुपयों में से ही थोड़ा-सा धन ज़रूरतमंदों को मिल जाए तो उन दुखियों की जान बच जाएगी।"



यह सुनकर राजा को क्रोध आ गया। वह गुस्से से बोला, "खुद भिखारी होकर मुझे उपदेश दे रहे हो? मेरा रुपया है, मैं चाहे उसे उबालकर खाऊँ चाहे तलकर! मेरी मर्ज़ी। तुम अगर इसी तरह बकवास करोगे तो मुश्किल में पड़ जाओगे। इसलिए इसी वक्त तुम चुपचाप खिसक जाओ।''

राजा का क्रोध देखकर लोग वहाँ से चले गए।

राजा हँसते हुए बोला, "छोटे मुँह बड़ी बात! अगर सौ-दो सौ रुपये होते तो एक बार सोच भी सकता था। पहरेदारों की खुराक दो-चार दिन कम कर देता और यह रकम पूरी भी हो जाती। मगर सौ-दो सौ से इन लोगों का पेट नहीं भरेगा, एकदम दस हज़ार माँग बैठे। छोटे लोगों के कारण नाक में दम हो गया है।"

यह सुनकर वहाँ उपस्थित लोग हाँ-हूँ कह कर रह गए। मगर मन ही मन उन्होंने भी सोचा, "राजा ने यह ठीक नहीं किया। जरूरतमंदों की सहायता करना तो राजा का कर्तव्य है।"

दो दिन बाद न जाने कहाँ से एक बूढ़ा संन्यासी राजसभा में आया। उसने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा, "दाता कर्ण महाराज! बड़ी दूर से आपकी प्रसिद्धि सुनकर आया हूँ। संन्यासी की इच्छा भी पूरी कर दें।"

अपनी प्रशंसा सुनकर राजा बोला, "ज़रा पता तो चले तुम्हें क्या चाहिए? यदि थोड़ा कम माँगो तो शायद मिल भी जाए।"

संन्यासी ने कहा, "मैं तो संन्यासी हूँ। मैं अधिक धन का क्या करूँगा! मैं राजकोष से बीस दिन तक बहुत मामूली भिक्षा प्रतिदिन लेना चाहता हूँ। मेरा भिक्षा लेने का नियम इस प्रकार है, मैं पहले दिन जो लेता हूँ, दूसरे दिन उसका दुगुना, फिर तीसरे दिन उसका दुगुना, फिर चौथे दिन तीसरे दिन का दुगुना। इसी तरह से प्रतिदिन दुगुना लेता जाता हूँ। भिक्षा लेने का मेरा यही तरीका है।"



राजा बोला, "तरीका तो समझ गया। मगर पहले दिन कितना लेंगे, यही असली बात है। दो-चार रुपयों से पेट भर जाए तो अच्छी बात है, मगर एकदम से बीस-पचास माँगने लगे, तब तो बीस दिन में काफ़ी बड़ी रकम हो जाएगी।"



संन्यासी ने हँसते हुए कहा, "महाराज, मैं लोभी नहीं हूँ। आज मुझे एक रुपया दीजिए, फिर बीस दिन तक दुगुने करके देते रहने का हुक्म दे दीजिए।"

यह सुनकर राजा, मंत्री और दरबारी सभी की जान में जान आई। राजा ने हुक्म दे दिया कि संन्यासी के कहे अनुसार बीस दिन तक राजकोष से उन्हें भिक्षा दी जाती रहे।

संन्यासी राजा की जय-जयकार करते हुए घर लौट गए।

राजा के आदेश के अनुसार राजभंडारी प्रतिदिन हिसाब करके संन्यासी को भिक्षा देने लगा। इस तरह दो दिन बीते, दस दिन बीते। दो सप्ताह तक भिक्षा देने के बाद भंडारी ने हिसाब करके देखा कि दान में काफ़ी धन निकला जा रहा है। यह देखकर उन्हें उलझन महसूस होने लगी। महाराज तो कभी किसी को इतना दान नहीं देते थे। उसने यह बात मंत्री को बताई।

मंत्री ने कुछ सोचते हुए कहा, "वाकई, यह बात तो पहले ध्यान में ही नहीं आई थी। मगर अब कोई उपाय भी नहीं है। महाराज का हुक्म बदला नहीं जा सकता।"

इसके बाद फिर कुछ दिन बीते। भंडारी फिर हड़बड़ाता हुआ मंत्री के पास पूरा हिसाब लेकर आ गया। हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

वह अपना पसीना पोंछकर, सिर खुजलाकर, दाढ़ी में हाथ फेरते हुए बोला, "यह क्या कह रहे हो! अभी से इतना धन चला गया है! तो फिर बीस दिनों के अंत में कितने रुपये होंगे?

भंडारी बोला, "जी, पूरा हिसाब तो नहीं किया है।"

मंत्री ने कहा, "तो तुरंत बैठकर, अभी पूरा हिसाब करो।"

भंडारी हिसाब करने बैठ गया। मंत्री महाशय अपने माथे पर बर्फ़ की पट्टी लगाकर तेज़ी से पंखा झलवाने लगे।

कुछ ही देर में भंडारी ने पूरा हिसाब कर लिया।

मंत्री ने पूछा, "कुल मिलाकर कितना हुआ?"

भंडारी ने हाथ जोड़कर कहा, "जी, दस लाख अड़तालीस हज़ार पाँच सौ पिचहत्तर रुपये।"

मंत्री गुस्से से बोला, "मज़ाक कर रहे हो?" यदि संन्यासी को इतने रुपये दे दिए तब तो राजकोष खाली हो जाएगा।"



भंडारी ने कहा, "मज़ाक क्यों करूँगा? आप ही हिसाब देख लीजिए।"

यह कहकर उसने हिसाब का कागज़ मंत्री जी को दे दिया। हिसाब देखकर मंत्री जी को चक्कर आ गया। सभी उन्हें सँभालकर बड़ी मुश्किल से राजा के पास ले गए।

राजा ने पूछा, "क्या बात है?"

मंत्री बोले, "महाराज, राजकोष खाली होने जा रहा है।"

राजा ने पूछा, "वह कैसे?"

मंत्री बोले, "महाराज, संन्यासी को आपने भिक्षा देने का हुक्म दिया है।

दान का हिसाब

पहला दिन	1 रुपया
दूसरा दिन	2 रुपये
तीसरा दिन	4 रुपये
चौथा दिन	8 रुपये
पाँचवाँ दिन	16 रुपये
छठा दिन	32 रुपये
सातवाँ दिन	64 रुपये
आठवाँ दिन	128 रुपये
नवाँ दिन	256 रुपये
दसवाँ दिन	512 रुपये
ग्यारहवाँ दिन	1024 रुपये
बारहवाँ दिन	2048 रुपये
तेरहवाँ दिन	4096 रुपये
चौदहवाँ दिन	8192 रुपये
पंद्रहवाँ दिन	16384 रुपये
सोलहवाँ दिन	32768 रुपये
सत्रहवाँ दिन	65536 रुपये
अठारहवाँ दिन	131072 रुपये
उन्नीसवाँ दिन	262144 रुपये
बीसवाँ दिन	524288 रुपये
कुल	**1048575 रुपये**

मगर अब पता चला है कि उन्होंने इस तरह राजकोष से करीब दस लाख रुपये झटकने का उपाय कर लिया है।"

राजा ने गुस्से से कहा, "मैंने इतने रुपये देने का आदेश तो नहीं दिया था। फिर इतने रुपये क्यों दिए जा रहे हैं? भंडारी को बुलाओ।"

मंत्री ने कहा, "जी सब कुछ आपके हुक्म के अनुसार ही हुआ है। आप खुद ही दान का हिसाब देख लीजिए।"

राजा ने उसे एक बार देखा, दो बार देखा, इसके बाद वह बेहोश हो गया। काफ़ी कोशिशों के बाद उनके होश में आ जाने पर लोग संन्यासी को बुलाने दौड़े।

संन्यासी के आते ही राजा रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा। बोला, "दुहाई है संन्यासी महाराज, मुझे इस तरह जान-माल से मत मारिए। जैसे भी हो एक समझौता करके मुझे वचन से मुक्त कर दीजिए।

अगर आपको बीस दिन तक भिक्षा दी गई तो राजकोष खाली हो जाएगा। फिर राज-काज कैसे चलेगा!"

संन्यासी ने गंभीर होकर कहा, "इस राज्य में लोग अकाल से मर रहे हैं। मुझे उनके लिए केवल पचास हज़ार रुपये चाहिए। वह रुपया मिलते ही मैं समझूँगा मुझे मेरी पूरी भिक्षा मिल गई है।"

राजा ने कहा, "परंतु उस दिन एक आदमी ने मुझसे कहा था कि लोगों के लिए दस हज़ार रुपये ही बहुत होंगे।"

संन्यासी ने कहा, "मगर आज मैं कहता हूँ कि पचास हज़ार से एक पैसा कम नहीं लूँगा।"

राजा गिड़गिड़ाया, मंत्री गिड़गिड़ाए, सभी गिड़गिड़ाए। मगर संन्यासी अपने वचन पर डटा रहा। आखिरकार लाचार होकर राजकोष से पचास हज़ार रुपये संन्यासी को देने के बाद ही राजा की जान बची।

पूरे देश में खबर फैल गई कि अकाल के कारण राजकोष से पचास हज़ार रुपये राहत में दिए गए हैं। सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

—सुकुमार राय



कहानी से

(क) राजा किसी को भी दान क्यों नहीं देना चाहता था?

(ख) राजदरबार के लोग मन ही मन राजा को बुरा कहते थे लेकिन वे राजा का विरोध क्यों नहीं कर पाते थे?

(ग) राजसभा में सज्जन और विद्वान लोग क्यों नहीं जाते थे?

(घ) संन्यासी ने सीधे-सीधे शब्दों में भिक्षा क्यों नहीं माँग ली?

(ङ) राजा को संन्यासी के आगे गिड़गिड़ाने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

अंदाज़ अपना-अपना

तुम नीचे दिए गए वाक्यों को किस तरह से कहोगी?

(क) दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

(ख) हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

(ग) संन्यासी की बात सुनकर सभी की जान में जान आई।

(घ) लाखों रुपये राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो।

साथी हाथ बढ़ाना

कभी-कभी कुछ इलाकों में बारिश बिलकुल भी नहीं होती। नदी-नाले, तालाब सब सूख जाते हैं। फ़सलों के लिए पानी नहीं मिलता। खेत सूख जाते हैं। पशु-पक्षी, जानवर, लोग भूखे मरने लगते हैं। ऐसे समय में वहाँ रहने वाले लोगों को मदद की ज़रूरत होती है। तुम भी लोगों की मदद ज़रूर कर सकती हो। सोचकर बताओ तुम अकाल में परेशान लोगों की मदद कैसे करोगी?



ज़िम्मेदारी अपनी-अपनी

तुम्हारे विचार से राजदरबार में किसकी क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ होंगी?

(क) मंत्री

(ख) भंडारी



कर्ण जैसा दानी

सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

पता करो कि–

(क) कर्ण कौन थे?

(ख) कर्ण जैसे दानी का क्या मतलब है?

(ग) दान क्या होता है?

(घ) किन-किन कारणों से लोग दान करते हैं?



कहानी और तुम

(क) राजा राजकोष के धन का उपयोग किन-किन कामों में करता था?

- तुम्हारे घर में जो पैसा आता है वह कहाँ-कहाँ खर्च होता है? पता करके लिखो।

(ख) अकाल के समय लोग राजा से कौन-कौन से काम करवाना चाहते थे?

- तुम अपने स्कूल या घर में क्या-क्या काम करवाना चाहती हो?



कैसा राजा

(क) राजा किसी को दान देना पसंद नहीं करता था।
तुम्हारे विचार से राजा सही था या गलत?
अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

(ख) राजा दान देने के अलावा और किन-किन तरीकों से लोगों की सहायता कर सकता था?

पूर्व और पूर्व

पूर्वी सीमा के लोग भूखे प्यासे मरने लगे।

(क) 'पूर्व' शब्द के दो अर्थ हैं

पूर्व–एक दिशा

पूर्व–पहले।

नीचे ऐसे ही कुछ और शब्द दिए गए हैं जिनके दो-दो अर्थ हैं। इनका प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाओ।

जल .....

.....

मन .....

.....

मगर .....

.....

(ख) नीचे चार दिशाओं के नाम लिखे हैं।

तुम्हारे घर और स्कूल के आसपास इन दिशाओं में क्या-क्या है? तालिका भरो–

दिशा	घर के पास	स्कूल के पास
पूर्व		
पश्चिम		
उत्तर		
दक्षिण		

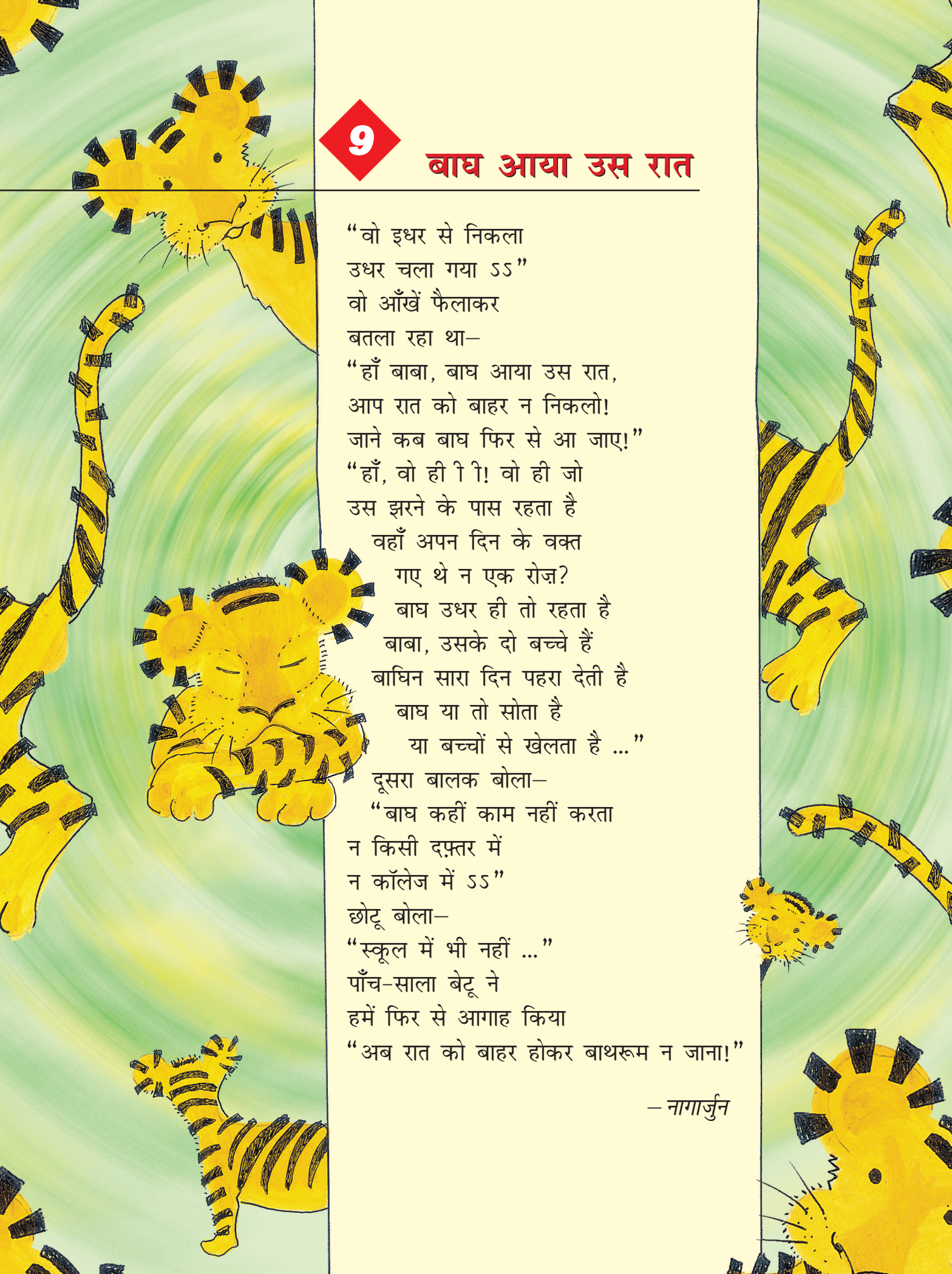

9 बाघ आया उस रात

"वो इधर से निकला
उधर चला गया ऽऽ"
वो आँखें फैलाकर
बतला रहा था–
"हाँ बाबा, बाघ आया उस रात,
आप रात को बाहर न निकलो!
जाने कब बाघ फिर से आ जाए!"
"हाँ, वो ही ी ी! वो ही जो
उस झरने के पास रहता है
वहाँ अपन दिन के वक्त
गए थे न एक रोज़?
बाघ उधर ही तो रहता है
बाबा, उसके दो बच्चे हैं
बाघिन सारा दिन पहरा देती है
बाघ या तो सोता है
या बच्चों से खेलता है ..."
दूसरा बालक बोला–
"बाघ कहीं काम नहीं करता
न किसी दफ़्तर में
न कॉलेज में ऽऽ"
छोटू बोला–
"स्कूल में भी नहीं ..."
पाँच-साला बेटू ने
हमें फिर से आगाह किया
"अब रात को बाहर होकर बाथरूम न जाना!"

– नागार्जुन

बात-बात में

"वो इधर से निकला, उधर चला गया"

(क) यह बात कौन किसे बता रहा होगा?

(ख) तुम्हें यह उत्तर कविता की किन पंक्तियों से पता चला?

खबर तेंदुए की

(क) कक्षा 2 की रिमझिम में अखबार में छपा एक समाचार दिया गया है। साथ में उस समाचार के आधार पर लिखी एक कहानी भी दी गई है। उसे एक बार फिर से पढ़ो।

(ख) अब 'बाघ आया उस रात' कविता के आधार पर एक 'समाचार' लिखो।

(ग) तेंदुए और बाघ में क्या अंतर है? पता करो। इस काम के लिए तुम बड़ों से बातचीत भी कर सकती हो।

उस रात

इस कविता में एक ऐसी रात की बात की गई है जिस रात को कुछ अनोखी घटना घटी थी।

(क) उस रात को कौन-सी अनूठी बात हुई थी?

(ख) तुम्हारे विचार से क्या सचमुच यह बात अनूठी है? क्यों?

(ग) उस रात को और क्या-क्या हुआ होगा? अपने साथियों से बातचीत करके लिखो।

बाघ के काम

"बाघ कहीं काम नहीं करता, न किसी दफ़्तर में, न कॉलेज में"

बाघ दिन भर क्या-क्या करता होगा? कहाँ-कहाँ जाता होगा? अपने साथियों के साथ मिलकर जानकारी एकत्रित करो। फिर चर्चा करके उस पर एक चित्रात्मक पुस्तक तैयार करो। इसे तुम अपने पुस्तकालय में भी रख सकती हो।

आँखें फैलाकर

वो इधर से निकला उधर चला गया

वो आँखें फैलाकर बतला रहा था।

नीचे आँख से जुड़े कुछ और मुहावरे दिए गए हैं, वाक्यों में इनका इस्तेमाल करो।

आँख लगना	आँख दिखाना
आँख मूँदना	आँख बचाना
आँखें भर आना	सिर-आँखों पर बैठाना

शब्दों की दुनिया

(क) पाँच साला बेटू ने हमें फिर से आगाह किया। 'आगाह किया' का मतलब क्या हो सकता है?

- सचेत किया ☐
- मनोरंजन किया ☐
- बताया ☐
- समझाया ☐

(ख) कविता में इनमें से कौन-सा भाव झलकता है?

(ग) किन-किन पंक्तियों/शब्दों से ये भाव व्यक्त हो रहे हैं?

- आश्चर्य
- डर
- अविश्वास



(घ) जब हम कविता के ज़रिये कोई बात कहते हैं तो आम तौर पर शब्दों के क्रम को बदल देते हैं।

- जैसे कविता का शीर्षक "बाघ आया उस रात" गद्य में "उस रात बाघ आया" होगा। ऐसा क्यों किया जाता होगा?
- इस किताब की दूसरी कविताएँ भी पढ़ो और शब्दों के क्रम में आए बदलाव पर गौर करो। ऐसे ही कुछ वाक्यों की सूची भी बनाओ।
- क्या शब्दों के क्रम में बदलाव अखबार की खबरों में भी आता है? नीचे बने कोलाज को देखो और बताओ।





एक साथ तीन सुख

तीन यात्री किसी शहर में से जा रहे थे। तभी एक सिक्का दिखाई दिया।

अहा, सिक्का!

ठीक है! पर क्या खरीदें?

हाँ, हाँ क्यों न हम कुछ खरीदकर आपस में बाँट लें।

हम सबने इसे एक साथ देखा इसलिए यह हम सबका है।

पर मुझे तो प्यास बुझाने के लिए कुछ चाहिए।

ठीक है! पर कई मीठी चीज़ें खरीदेंगे।

मेरा तो मन मीठी चीज़ खाने का कर रहा है।


एक मिठाई ही बहुत है।
मुझे तो कई चीज़ें चाहिए।
मुझे प्यास लगी है।
?
क्या बात है? आप लोग झगड़ क्यों रहे हैं?
तीनों ने बूढ़े को समस्या बताई।
अरे, बस इतनी सी बात! बड़ा आसान सा उपाय है।
कुछ अंगूर खरीद लीजिए।
ये तो मीठे हैं!
ये तो बहुत सारे हैं।
ये मेरी प्यास बुझाएँगे।
उस बुजुर्ग ने हमारी समस्या बड़ी आसानी से हल कर दी।

लुईस फर्नांडिस

10 चावल की रोटियाँ

पात्र-परिचय

कोको	आठ साल का एक बर्मी लड़का, कुछ मोटा
नीनी	नौ साल का बर्मी लड़का, **कोको** का दोस्त
तिन सू	आठ साल का बर्मी लड़का, **कोको** का दोस्त
मिमि	सात साल की बर्मी लड़की, **कोको** की दोस्त
उ बा तुन	जनता की दुकान का प्रबंधक (इसका अभिनय कोई लंबे कद का लड़का नकली मूँछें और चश्मा लगाकर कर सकता है)

(एक सादा कमरा, दीवारों पर बाँस की चटाइयाँ। एक दीवार के सहारे रखी अलमारी। अलमारी के ऊपर एक रेडियो, चाय की केतली, कुछ कप और खाली गुलाबी फूलदान रखा है। कमरे के बीच फ़र्श पर एक चटाई बिछी है जिसके ऊपर कम ऊँचाई वाली गोल मेज़ रखी है। दो दरवाज़े। एक दरवाज़ा पीछे की ओर खुलता है और दूसरा एक किनारे की ओर। पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बाँग देता है। कुत्ता भौंकता है। कहीं प्रार्थना की घंटियाँ बजती हैं। कोको आता है, जम्हाई लेकर अपने को सीधा करता है।)



कोको माता-पिता धान लगाने खेतों में चले गए हैं। जब तक माँ खाना बनाने के लिए लौटकर नहीं आती मुझे घर की देखभाल करनी है। हूँ... ऊँ... ऊँ... देखता हूँ माँ ने नाश्ते में मेरे लिए क्या बनाकर रखा है।





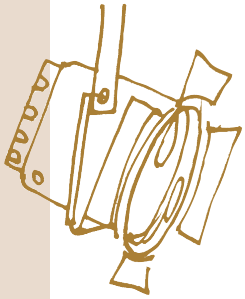

(वह अलमारी की तरफ़ जाता है और उसे खोलकर देखता है। एक तश्तरी निकालकर देखता है कि चावल की चार रोटियाँ हैं। वह होंठों पर जीभ फेरता है और मुस्कुराता है।)

कोको आहा... मज़ा आ गया। चावल की रोटियाँ। मेरी मनपसंद चीज़।

(वह पेट मलता हुआ रोटियों को मेज़ पर रखता है और बैठ जाता है।)

कोको आज तो डटकर नाश्ता होगा।

(वह एक रोटी उठाकर मुँह में डालने लगता है, तभी कोई दरवाज़े पर दस्तक देता है।)

नीनी कोको... ए कोको! दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ नीनी।

कोको गजब हो गया। यह तो भुक्खड़ नीनी है। उसकी नज़र में रोटियाँ पड़ीं तो ज़रूर माँगेगा। मैं इन्हें छिपा देता हूँ।

नीनी दरवाज़ा खोलो कोको, तुम क्या कर रहे हो? इतनी देर लगा दी।



कोको मैं इन्हें कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? *(रेडियो की तरफ़ देखकर)* मैं तश्तरी को रेडियो के पीछे छिपा दूँगा। *(ज़ोर से)* अभी आता हूँ नीनी... ज़रा रुको।

कोको आओ, नीनी। अंदर आ जाओ। *(नीनी अंदर आता है।)*

नीनी दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों लगाई?

कोको कुछ खास नहीं... मैंने अभी-अभी नाश्ता किया और मुँह धोने लगा था। बोलो, सुबह-सुबह कैसे आना हुआ?

नीनी क्या? यह मत कहना कि तुम भूल गए थे। परीक्षा के बारे में रेडियो पर खास सूचना आने वाली है।

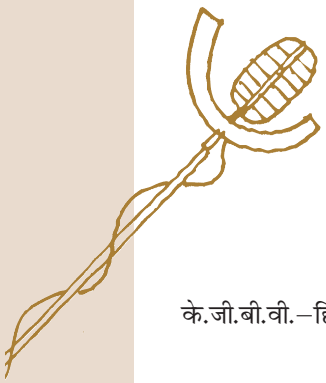

कोको लेकिन तुम्हारे घर भी तो रेडियो है।

नीनी वह खराब है। इसीलिए सोचा तुम्हारे रेडियो पर सुनूँगा।

(नीनी गोल मेज़ के पास बैठ जाता है।)





नीनी रेडियो उठाकर यहीं ले आओ ताकि हम आराम से लेटे-लेटे सुन सकें।

कोको नीनी, हमारे रेडियो में भी कुछ खराबी है।

नीनी आओ, कोशिश करके देखें। मैं उठाकर ले आता हूँ।

(*नीनी अलमारी की तरफ़ जाने लगता है।*)

कोको नहीं, नहीं। नीनी, इसे मत छूना। छुओगे तो करंट लगेगा।

(*नीनी रुक जाता है।*)

नीनी मैंने तो इसे छू ही लिया था। भई, मैं वह खबर ज़रूर सुनना चाहता हूँ। तिन सू के घर जाता हूँ। तुम आओगे?

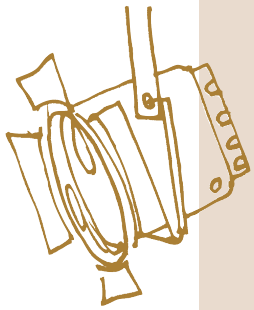

कोको नहीं। अच्छा, फिर मिलेंगे।

(*नीनी तेज़ी से बाहर निकल जाता है।*)

कोको (*गहरी साँस लेकर*) बाल-बाल बचे। अब चलकर नाश्ता किया जाए। मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे हैं।

(*कोको तश्तरी उठाकर मेज़ के पास आता है। एक रोटी उठाकर खाने लगता है, तभी दरवाज़े पर दस्तक सुनाई देती है।*)

कोको (*तश्तरी नीचे रखकर*) जाने अब कौन आ टपका।

मिमि कोको, दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ मिमि।

कोको बाप रे। यह तो मिमि है। उसे चावल की रोटियाँ मेरी ही तरह बहुत अच्छी लगती हैं। और वह हमेशा भूखी होती है। मुझे रोटियाँ छिपा देनी चाहिए। लेकिन कहाँ? वह तो कुछ खाने की चीज़ ढूँढ़ने के लिए सारे कमरे की तलाशी लेगी।



मिमि (*फिर दरवाज़ा खटखटाकर*) कोको, दरवाज़ा खोलो न... इतनी देर क्यों लगा रहे हो?

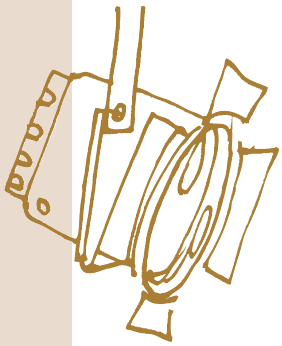

कोको कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? (*कमरे के चारों तरफ़ देखकर*) ठीक, इस फूलदान के अंदर छिपा दूँ।

(*कोको फूलदान में तश्तरी रखकर दरवाज़ा खोलता है। मिमि कागज़ में लिपटा बंडल उठाए कमरे में आती है।*)

मिमि दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों कर दी?

कोको मैंने अभी-अभी नाश्ता किया था और मुँह धोने लगा था। आओ बैठो।

(*कोको और मिमि मेज़ के इर्द-गिर्द बैठते हैं।*)

मिमि मुझे अभी-अभी तुम्हारे माता-पिता मिले। तुम्हारी माताजी ने कहा कि तुम्हारे लिए चावल की कुछ रोटियाँ रखी हैं। मैंने सोचा...

कोको चावल की रोटियाँ? हाँ थीं तो। लेकिन मैंने सब खा लीं।

मिमि एक भी नहीं बची?

कोको सॉरी मिमि, मैंने सब खा लीं। (*हाथ से पेट को मलते हुए*) पेट एकदम भर गया है। लगता है आज तो दोपहर का खाना भी नहीं खाया जाएगा।

मिमि बहुत बुरी बात। मेरी माँ ने केले के पापड़ बनाए थे। मैंने सोचा तुम्हारे साथ बाँटकर खाऊँगी। मैं चार पापड़ लाई हूँ। दो तुम्हारे लिए, दो अपने लिए। सोचा था तुम्हारी चावल की रोटियाँ और मोटे पापड़, दोनों का बढ़िया नाश्ता रहेगा।



(*मिमि कागज़ का बंडल खोलती है और पापड़ निकालती है। वह उन्हें एक तश्तरी में डालकर मेज़ पर रखती है।*)

मिमि गरमागरम हैं और स्वादिष्ट भी। तुम्हारी भी क्या बदकिस्मती है कि तुम्हारा पेट बिलकुल भरा हुआ है और तुम कुछ भी नहीं खा सकते।

कोको (*पापड़ देखकर होठों पर जीभ फेरकर, स्वगत*) मैंने बड़ी गलती की जो उसे बताया कि मेरा पेट भरा हुआ है। लेकिन मैं समझता हूँ कि वह चारों पापड़ तो खा नहीं सकती। शायद दो मेरे लिए छोड़ जाए।



मिमि (*एक पापड़ उठाकर*) क्या इन्हें निगलने के लिए चाय है?



कोको हाँ, हाँ, अलमारी पर है। मैं ले आता हूँ।

(कोको चाय की केतली और दो कप उठा लाता है। मिमि एक कप में चाय डालती है।)



मिमि तुम तो चाय पिओगे नहीं। पेट भरा होगा।

कोको *(स्वगत)* मेरा पेट भूख से गुड़गुड़ कर रहा है। भगवान करे मिमि को यह गुड़गुड़ न सुनाई दे।

मिमि *(पापड़ खाते हुए)* यह कैसी आवाज़ है?

कोको आवाज़? कैसी आवाज़?

मिमि हलकी-सी गड़गड़ाने की आवाज़। यह फिर हुई। सुना तुमने?



कोको यह...? हमारे घर में चूहा घुस आया है। वही यह आवाज़ करता है।

(दरवाज़े पर दस्तक)

कोको कौन?

तिन सू मैं हूँ तिन सू।

(कोको उठने लगता है।)

मिमि तुम बैठे रहो। आराम करो। तुम्हारा पेट बहुत भरा हुआ है। मैं खोलती हूँ।

(मिमि दरवाज़ा खोलती है। तिन सू गेंदे के फूलों का गुच्छा लिए आता है।)

तिन सू आहा! मिमि भी यहाँ है।

मिमि आओ तिन सू।

तिन सू *(मेज़ के पास जाकर)* हैलो कोको। क्या बात है? तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है क्या?

कोको हैलो तिन सू।

(मिमि और तिन सू मेज़ के पास बैठते हैं।)



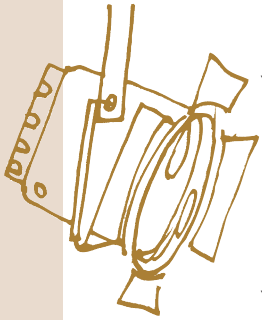

मिमि (*तिन सू से*) वह ठीक हैं। बस, नाश्ते में चावल की रोटियाँ ज़्यादा खा ली हैं।

तिन सू (*केले के पापड़ों की तरफ़ देखकर*) आहा, केले के पापड़!

मिमि मैं कोको के लिए भी ले आई थी। लेकिन चूँकि उसका पेट एकदम भरा हुआ है, तुम इन्हें खत्म करने में मेरी मदद करो।

तिन सू नेकी और पूछ-पूछ? तुम्हारी माँ गाँव में सबसे बढ़िया पापड़ बनाती है।

(*तिन सू एक पापड़ उठाकर खाने लगता है। मिमि उसके लिए कप में चाय डालती है।*)

मिमि (*कप देकर*) यह लो चाय के साथ खाओ।

तिन सू (*चाय की चुस्की लेकर होंठों पर जीभ फिराकर*) बहुत बढ़िया चाय है। मेरी खुशकिस्मती जो इस वक्त यहाँ आ गया।



कोको (*स्वगत*) तुम्हारी खुशकिस्मती और मेरी बदकिस्मती।

(*मिमि और तिन सू एक-एक पापड़ खा लेते हैं और मिमि दूसरा उठाती है।*)

मिमि यह लो तिन सू। एक और खाओ।

तिन सू नहीं, मेरे लिए तो एक ही काफ़ी है।

मिमि आधा तो ले लो। दूसरा आधा में खा लूँगी। एक कोको के लिए रहा। शाम को खा लेगा।

तिन सू तुम ज़ोर डालती हो तो ले लेता हूँ।

कोको (*स्वगत*) चलो, एक तो मेरे लिए छोड़ रहे हैं। मैं भूख से मरा जा रहा हूँ।

तिन सू यह आवाज़ कैसी है?

मिमि यहाँ एक बड़ा चूहा घुस आया है। कोको कहता है, वही यह आवाज़ करता है।

तिन सू ऐसा लगा कि किसी का पेट भूख से गुड़गुड़ा रहा है।

(*तिन सू और मिमि पापड़ खत्म करते हैं*)

मिमि अच्छा, ये फूल कैसे हैं?

तिन सू ओह! मैं तो भूल ही गया था। मेरी माँ ने कहा है कि कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था। उन्होंने ये फूल उस फूलदान में रखने के लिए भेजे हैं। (*इधर-उधर देखता है। उसे*

अलमारी के ऊपर फूलदान दिखाई देता है।) वह रहा फूलदान, अलमारी पर।

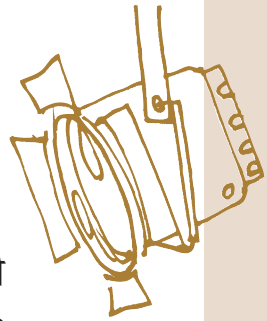

मिमि मुझे दो। मैं इन्हें फूलदान में रख आती हूँ।

(तिन सू उसके हाथ में फूल देता है। वह उठने लगती है।)

कोको नहीं, नहीं, मिमि।

मिमि तुमने तो मुझे डरा ही दिया। क्या बात है?

कोको ये फूल... ये फूल। मेरी माँ को इस फूल से एलर्जी है। जब भी वह यह फूल देखती हैं उनके जिस्म में फुँसियाँ निकल आती हैं।

तिन सू ओह, मुझे इस बात का पता नहीं था। खैर मैं इन फूलों को वापस ले जाऊँगा।

कोको *(चैन की साँस लेकर, स्वगत)* मुझे अपनी रोटियों को बचाने के लिए कितने झूठ बोलने पड़ेंगे।



(दरवाज़े पर दस्तक)

कोको कौन?

उ बा तुन मैं हूँ। दुकान का मैनेजर उ बा तुन।

मिमि *(कोको से)* तुम मत उठो कोको। मैं खोलती हूँ दरवाज़ा। *(ज़ोर से)* अभी आई उ बा तुन चाचा।

(उ बा तुन नीला फूलदान लिए आता है)

उ बा तुन हैलो बच्चो *(मेज़ की तरफ़ देखकर)* लगता है छोटी-मोटी पार्टी चल रही है।

मिमि आओ चाचा, आओ।

(उ बा तुन मेज़ के पास बैठ जाता है)

मिमि चाय लेंगे आप?



उ बा तुन कोई एतराज़ नहीं। बहुत-बहुत शुक्रिया!

(मिमि अलमारी की तरफ़ जाकर कप ले आती है और चाय डालकर उ बा तुन को देती है।)

उ बा तुन *(कप से चुस्की लेकर)* क्या मज़ेदार चाय है। खुशबूदार ताज़गी लाने वाली।

तिन सू चाचा, आपने नाश्ता कर लिया है?

उ बा तुन अभी किया नहीं। मैं सोच रहा था, किसी चाय की दुकान पर रुककर कर लूँगा।

मिमि चाय की दुकान पर जाने की क्या ज़रूरत? आप यह पापड़ ले सकते हैं।

उ बा तुन लेकिन... मैं तुममें से किसी का हिस्सा नहीं मारना चाहता।

तिन सू कोई बात नहीं चाचा। हम सबके पेट तो भर गए हैं।

(उँगली से गले को छूता है।)



उ बा तुन बहुत-बहुत शुक्रिया। अरे, यह आवाज़ कैसी है?

तिन सू यह चूहे की आवाज़ है। अक्सर यह आवाज़ करता है।

उ बा तुन मुझे लगा किसी का पेट भूख से कुलबुला रहा है।

(उ बा तुन पापड़ उठाकर खाने लगता है।)

उ बा तुन कोको, तुम आज बहुत चुप हो। तबियत तो ठीक है?

कोको कुछ नहीं चाचा। मैं बिलकुल ठीक हूँ।

मिमि उसका पेट बहुत भरा हुआ है। नाश्ता बहुत डटकर किया है।

(उ बा तुन पापड़ खत्म करके हाथ से मुँह पोंछता है।)

उ बा तुन कोको, तुम्हारी माँ हमारी दुकान से एक फूलदान लाई थीं *(इधर-उधर देखकर)* हाँ, वह रहा।

कोको क्यों? फूलदान का क्या करना है?

उ बा तुन तुम्हारी माँ ने नीला फूलदान माँगा था। उस वक्त मेरे पास वह रंग नहीं था, इसलिए वह गुलाबी ही ले आईं। उनके जाने के बाद मुझे एक नीला फूलदान मिल गया। मैं उसे बदलने आया हूँ।

(उ बा तुन अलमारी के पास जाकर गुलाबी फूलदान उठा लेता है और उसकी जगह नीला फूलदान रख देता है।)

उ बा तुन *(कोको से)* मुझे यकीन है, तुम्हारी माँ नीला फूलदान देखेंगी तो बहुत खुश होंगी। अब मैं चलूँगा। शुक्रिया और गुडबाई।

मिमि-तिन सू गुडबाई चाचा।

कोको गुडबाई चाचा। *(स्वगत)* और गुडबाई मेरी चावल की रोटियो!



–पी.औंग खिन

अनुवाद: मस्तराम कपूर

मंच और मंचन

एक सादा कमरा, दीवारों पर बाँस की चटाइयाँ। एक दीवार के सहारे रखी अलमारी। अलमारी के ऊपर एक रेडियो, चाय की केतली, कुछ कप और खाली गुलाबी फूलदान रखा है। कमरे के बीच फ़र्श पर एक चटाई बिछी है जिसके ऊपर कम ऊँचाई वाली गोल मेज़ रखी है। दो दरवाज़े। एक दरवाज़ा पीछे की ओर खुलता है और दूसरा एक किनारे की ओर। पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बाँग देता है। कुत्ता भौंकता है। कहीं प्रार्थना की घंटियाँ बजती हैं। कोको आता है, जम्हाई लेकर अपने को सीधा करता है।

ऊपर लिखी पंक्तियों में कोको के घर के एक कमरे का वर्णन किया गया है। दरअसल नाटक के लिए मंच सज्जा कैसी हो यह निर्देश उसके लिए है। तुम इस वर्णन को पढ़कर उस मंच का एक चित्र बनाओ जो ठीक वैसा ही होना चाहिए जैसा कि बताया गया है।

नाटक की बात

1. नाटक में हिस्सा लेने वालों को पात्र कहते हैं। जिन पात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है उन्हें 'मुख्य पात्र' और जिनकी भूमिका ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती है उन्हें 'गौण पात्र' कहते हैं। बताओ इस नाटक में कौन-कौन मुख्य और गौण पात्र हैं?
2. पात्रों को जो बात बोलनी होती है उसे संवाद कहते हैं। क्या तुम किसी एक परिस्थिति के लिए संवाद लिख सकती हो? (इसके लिए तुम टोलियों में भी काम कर सकती हो।) उदाहरण के लिए खो-खो या कबड्डी जैसा कोई खेल-खेलते समय दूसरे दल के खिलाड़ियों से बहस।
3. क्या कभी तुमने कोई चीज़ या बात दूसरों से छिपाई है या छिपाने की कोशिश की है, उस समय क्या-क्या हुआ था?
4. कहते हैं, एक झूठ बोलने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं। क्या तुम्हें नाटक पढ़कर ऐसा लगता है? नाटक की मदद से इस बात को समझाओ।

एक चावल कई-कई रूप

1. कोको की माँ ने उसके लिए चावल की रोटियाँ बनाकर रखी थीं। भारत के विभिन्न प्रांतों में चावल अलग-अलग तरीके से इस्तेमाल किया जाता है-भोजन के हिस्से के रूप में भी और नमकीन और मीठे पकवान के रूप में भी। तुम्हारे प्रांत में चावल का इस्तेमाल कैसे होता है? घर में बातचीत करके पता करो और एक तालिका बनाओ। कक्षा में अपने दोस्तों की तालिका के साथ मिलान करो तो पाओगी कि भाषा, कपड़ों और रहन-सहन के साथ-साथ खान-पान की दृष्टि से भी भारत अनूठा है।
2. अपनी तालिका में से चावल से बनी कोई एक खाने की चीज़ बनाने की विधि पता करो और उसे नीचे दिए गए बिंदुओं के हिसाब से लिखो।
   - सामग्री
   - तैयारी
   - विधि
3. "कोको के माता-पिता धान लगाने के लिए खेतों में गए।"
   "कोको की माँ ने उसके लिए चावल की रोटियाँ बनाईं।"
   एक ही चीज़ के विभिन्न रूपों के अलग-अलग नाम हो सकते हैं। नीचे ऐसे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनमें अंतर बताओ।
   चावल - धान - भात - मुरमुरा - चिउड़ा
   साबुत दाल - धुली दाल - छिलका दाल
   गेहूँ - दलिया - आटा - मैदा - सूजी

के, में, ने, को, से...

"कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था।"
ऊपर लिखे वाक्य में जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है वे वाक्य में शब्दों का आपस में संबंध बताते हैं। नीचे एक मज़ेदार किताब "अनारको के आठ दिन" का एक अंश दिया गया है। उसके खाली स्थानों में इस प्रकार के सही शब्द लिखो।

अनारको एक लड़की है। घर ..... लोग उसे अन्नो कहते हैं। अन्नो नाम छोटा जो है, सो उस ..... हुक्म चलाना आसान होता है। अन्नो, पानी ले आ, अन्नो धूप में मत जाना, अन्नो बाहर अँधेरा है-कहीं मत जा, बारिश ..... भीगना मत, अन्नो! और कोई बाहर ..... घर में आए तो घरवाले कहेंगे-ये हमारी अनारको है, प्यार से हम इसे अन्नो कहते हैं। प्यार ..... हुँ-ह-ह !

आज अनारको सुबह सोकर उठी तो हाँफ रही थी। रात सपने ..... बहुत बारिश हुई। अनारको ..... याद किया और उसे लगा, आज ..... सपने में जितनी बारिश हुई उतनी तो पहले के सपनों ..... कभी नहीं हुई। कभी नहीं। जमके बारिश हुई थी आज .... सपने ..... और जमकर उसमें भीगी थी अनारको। खूब उछली थी, कूदी थी, चारों तरफ़ पानी छिटकाया था और खूब-खूब भीगी थी।

11 जहाँ चाह वहाँ राह

मलमली धोती का बादामी रंग खिल उठा था। किनारों पर कसूती के टाँकों से पिरोई हुई बेल थी। पल्लू पर भरवाँ टाँके अपना कमाल दिखा रहे थे। सुनहरे-रूपहले बेल-बूटों से जान आ गई थी मलमल में। इन बेल-बूटों को सजाया था इला सचानी ने। इला की हिम्मत की अनूठी मिसाल हैं ये कढ़ाई के नमूने।



छब्बीस साल की इला गुजरात के सूरत ज़िले में रहती हैं। उनका बचपन अमरेली ज़िले के राजाकोट गाँव में अपने नाना के यहाँ बीता।

साँझ होते ही मोहल्ले के बच्चे घरों से बाहर आ जाते। कुछ मिट्टी में आड़ी-तिरछी लकीरें खींचते, कुछ कनेर के पत्तों से पिटपिटी बजाते, कुछ गिट्टे खेलते, कुछ इधर-उधर से टूटे-फूटे घड़ों के ठीकरे बटोरकर पिट्ठू खेलते। जब इन खेलों से मन भर जाता तो पेड़ की डालियों पर झूला डालकर ऊँची-ऊँची पेंगे लेते और ऊँचे स्वर में एक साथ गाते-

कच्चे नीम की निंबौरी
सावन जल्दी अइयो रे!

इला गाने में तो उनका साथ देती, पर उनके साथ पेंगे नहीं ले पाती। रस्सी पकड़ने को हाथ बढ़ाती मगर हाथ तो उठते ही नहीं थे। वह चुपचाप एक किनारे बैठ जाती। मन-ही-मन सोचती, "मैं भी ऐसा कुछ क्यों नहीं कर पाती हूँ। बच्चे भी चाहते कि इला किसी-न-किसी तरह तो उनके साथ खेल सके। कभी-कभार वह पकड़म-पकड़ाई और विष-अमृत के खेल में शामिल हो जाती। साथियों के साथ जमकर दौड़ती मगर जब 'धप्पा' करने की बारी आती तो फिर निराश हो जाती। हाथ ही नहीं उठेंगे तो धप्पा कैसे देगी? वह बहुत कोशिश करती पर उसके हाथों ने तो जैसे उसका साथ न देने की ठान रखी हो। इला ने अपने हाथों की इस ज़िद को एक चुनौती माना।

उसने वह सब अपने पैरों से करना सीखा जो हम हाथों से करते हैं। दाल-भात खाना, दूसरों के बाल बनाना, फ़र्श बुहारना, कपड़े धोना, तरकारी काटना यहाँ तक कि तख्ती पर लिखना भी। उसने एक स्कूल में दाखिला ले लिया। दाखिला मिलने में भी उसे परेशानी हुई। कहीं तो उसकी सुरक्षा को लेकर चिंता थी, कहीं उसके काम करने की गति को लेकर। किसी काम को तो वह इतनी फुर्ती से कर जाती कि देखने वाले दंग रह जाते। पर किसी-किसी काम में थोड़ी बहुत परेशानी तो आती ही थी। वह परेशानियों के आगे घुटने टेकने वाली नहीं थी। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। वह दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर पाई। इला को यह मालूम न था कि परीक्षा के लिए उसे अतिरिक्त समय नहीं मिल सकता है। उसे ऐसे व्यक्ति की सुविधा भी मिल सकती थी जो परीक्षा में उसके लिए लिखने का काम कर सके। यह जानकारी इला को समय रहते मिल जाती तो कितना

अच्छा रहता। उसे इस बात का दुख है। पर यहाँ आकर सब कुछ खत्म तो नहीं हो जाता न!

उसकी माँ और दादी कशीदाकारी करती थीं। वह उन्हें सुई में रेशम पिरोने से लेकर बूटियाँ उकेरते हुए देखती। न जाने कब उसने कशीदाकारी करने की ठान ली। यहाँ भी उसने अपने पैर के अँगूठों का सहारा लिया। दोनों अँगूठों के बीच सुई थामकर कच्चा रेशम पिरोना कोई आसान काम नहीं था। पर कहते हैं न, जहाँ चाह वहाँ राह। उसके विश्वास और धैर्य ने कुदरत को भी झुठला दिया।

पंद्रह-सोलह साल की होते-होते इला काठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर हो चुकी थी। किस वस्त्र पर किस तरह के नमूने बनाए जाएँ, कौन-से रंगों से नमूना खिल उठेगा और टाँके कौन-से लगें, यह सब वह समझ गई थी।

एक समय ऐसा भी आया जब उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों की प्रदर्शनी लगी। इन परिधानों में काठियावाड़ के साथ-साथ लखनऊ और बंगाल भी झलक रहा था। इला ने काठियावाड़ी टाँकों के साथ-साथ और कई टाँके भी इस्तेमाल किए थे। पत्तियों को चिकनकारी से सजाया था। डंडियों को कांथा से उभारा था। पशु-पक्षियों की ज्यामितीय आकृतियों को कसूती और ज़ंजीर से उठा रखा था।

पारंपरिक डिज़ाइनों में यह नवीनता सभी को बहुत भाई।

इला के पाँव अब रुकते नहीं हैं। आँखों में चमक, होंठो पर मुस्कान और अनूठा विश्वास लिए वह सुनहरी रूपहली बूटियाँ उकेरते थकती नहीं है।



जहाँ चाह वहाँ राह

1. इला या इला जैसी कोई लड़की यदि तुम्हारी कक्षा में दाखिला लेती तो तुम्हारे मन में कौन-कौन से प्रश्न उठते?
2. इस लेख को पढ़ने के बाद क्या तुम्हारी सोच में कुछ बदलाव आए?

मैं भी कुछ कर सकती हूँ...

1. यदि इला तुम्हारे विद्यालय में आए तो उसे किन-किन कामों में परेशानी आएगी?
2. उसे यह परेशानी न हो इसके लिए अपने विद्यालय में क्या तुम कुछ बदलाव सुझा सकती हो?

प्यारी इला...

इला के बारे में पढ़कर जैसे भाव तुम्हारे मन में उठ रहे हैं उन्हें इला को चिट्ठी लिखकर बताओ। चिट्ठी की रूपरेखा नीचे दी गई है।

.....

.....

.....

प्रिय इला

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

तुम्हारा/तुम्हारी

सवाल हमारे, जवाब तुम्हारे

1. इला को लेकर स्कूल वाले चिंतित क्यों थे? क्या उनका चिंता करना सही था या नहीं? अपने उत्तर का कारण लिखो।
2. इला की कशीदाकारी में खास बात क्या थी?
3. सही के आगे (✓) का निशान लगाओ।
   इला दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर सकी, क्योंकि...
   - परीक्षा के लिए उसने अच्छी तरह तैयारी नहीं की थी।
   - वह परीक्षा पास करना नहीं चाहती थी।
   - लिखने की गति धीमी होने के कारण वह प्रश्न-पत्र पूरे नहीं कर पाती थी।
   - उसको पढ़ाई करना कभी अच्छा लगा ही नहीं।
4. क्या इला अपने पैर के अँगूठे से कुछ भी करना सीख पाती, अगर उसके आस-पास के लोग उसके लिए सभी काम स्वयं कर देते और उसको कुछ करने का मौका नहीं देते?

कशीदाकारी

1. (क) इस पाठ में सिलाई-कढ़ाई से संबंधित कई शब्द आए हैं। उनकी सूची बनाओ। अब देखो कि इस पाठ को पढ़कर तुमने कितने नए शब्द सीखे।

(ख) नीचे दी गई सूची में से किन्हीं दो से संबंधित शब्द (संज्ञा और क्रिया दोनों ही) इकट्ठा करो।

फ़ुटबाल बुनाई (ऊन) बागबानी पतंगबाज़ी

2. एक सादा रूमाल लो या कपड़ा काटकर बनाओ। उस पर नीचे दिए गए टाँकों में से किसी एक टाँके का इस्तेमाल करते हुए बड़ों की मदद से कढ़ाई करो।

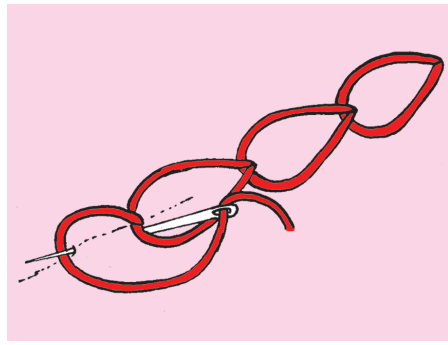

ज़ंजीर

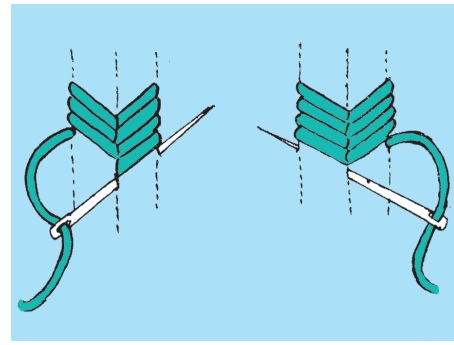

मछली टाँका

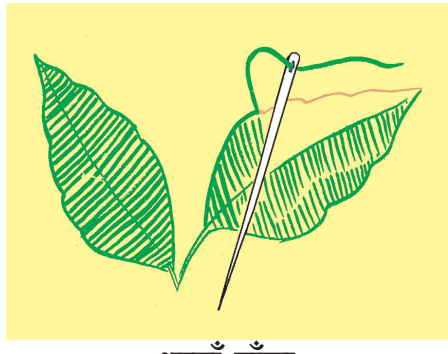

भरवाँ टाँका

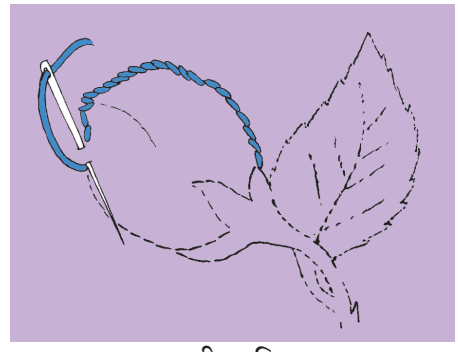

उलटी बखिया

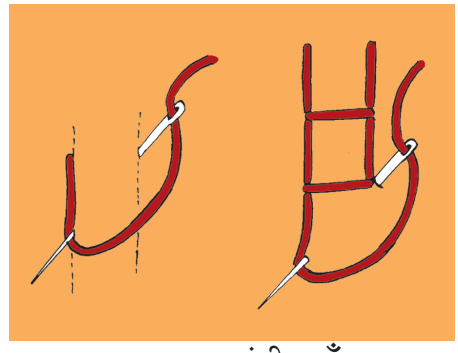

खुला हुआ ज़ंजीर टाँका

ये काम कक्षा की सब-लड़कियाँ करें।

12 पानी रे पानी

कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जाता है हमारा पानी? हमने कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा तो नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा ज़रूर है। भूगोल की किताब पढ़ते समय जल-चक्र जैसी बातें हमें बताई जाती हैं। एक सुंदर-सा चित्र भी होता है, इस पाठ के साथ। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती फिर बरसात की बूँदें और लो फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर। चित्र के दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ़ का पानी लेकर उसी समुद्र में मिलती दिखती है। चित्र में कुछ तीर भी बने रहते हैं। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ़ से शुरू होकर समुद्र में वापिस मिल जाती है। जल-चक्र पूरा हो जाता है।





यह तो हुई जल-चक्र की किताबी बात। पर अब तो हम सबके घरों में, स्कूल में, माता-पिता के दफ़्तरों में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब-सा चक्कर सामने आने लगा है।

नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलो तो उससे पानी के बदले सूँ-सूँ की आवाज़ आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त। कभी देर रात को तो कभी भोर सबेरे। मीठी नींद छोड़कर घर भर की बाल्टियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी-कभी, कहीं-कहीं आपस में तू-तू मैं-मैं भी होने लगती हैं।

रोज़-रोज़ के इन झगड़े-टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाइप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो अपने आस-पास का हक छीनने जैसा काम है। लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई एक घर कर बैठे तो फिर और कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब

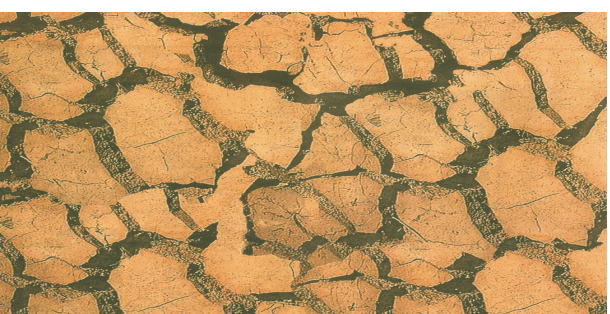

कई चीज़ों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव-शहरों में ही नहीं बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बेंगलुरु जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। यह तो हुई गर्मी के मौसम की बात।

लेकिन बरसात के मौसम में क्या होता है? लो, सब तरफ़ पानी ही बहने लगता है। हमारे-तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।

ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज़्यादा हो जाना, यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

चलो, थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब भी हमें कोई पैसा देता है, हम खुश होकर, दौड़कर उसे झट से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं। एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, कभी सिक्के, तो कभी छोटे-बड़े नोट—सब इसमें धीरे-धीरे जमा होते जाते हैं। फिर जब कभी हमें कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।

हमारी यह धरती भी इसी तरह की खूब बड़ी गुल्लक है। मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे-बड़े तालाब, झील आदि हैं वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी ज़मीन के नीचे छिपे जल के भंडार में धीरे-धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध होता जाता है। पानी का यह खजाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खजाने से हम बरसात का मौसम बीत



जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं।

लेकिन एक दौर ऐसा भी आया जब हम लोग इस छिपे खज़ाने का महत्व भूल गए और ज़मीन के लालच में हमने अपने तालाबों को कचरे से पाटकर, भरकर समतल बना दिया। देखते-ही-देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाज़ार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए।

इस बड़ी गलती की सज़ा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं। इसीलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस-पास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी।

जल-चक्र हम ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भंडार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें तभी हमें ज़रूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं आएगी। यदि हमने जल-चक्र का ठीक उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएँगे।

– अनुपम मिश्र

हक की बात

आज़ादी के बाद (पिछले साठ वर्षों में) दिल्ली में पानी की औसत माँग या खपत लगभग तीन गुना बढ़ गई है। पर झुग्गी बस्तियों को अभी भी औसत खपत का 30 प्रतिशत पानी ही मिल पाता है। जब ज़रूरत के हिसाब से लोगों को पानी नहीं मिलता तो उनके हक छिनते हैं। हमारे समाज में ज़रूरतों से जुड़े और कौन-से मुद्दे हैं जहाँ हमें बराबरी का बँटवारा नहीं दिखाई देता और कई लोगों का हिस्सा छीनकर कुछ लोगों को दे दिया जाता है? कक्षा में और घर पर बड़ों के साथ चर्चा करो।

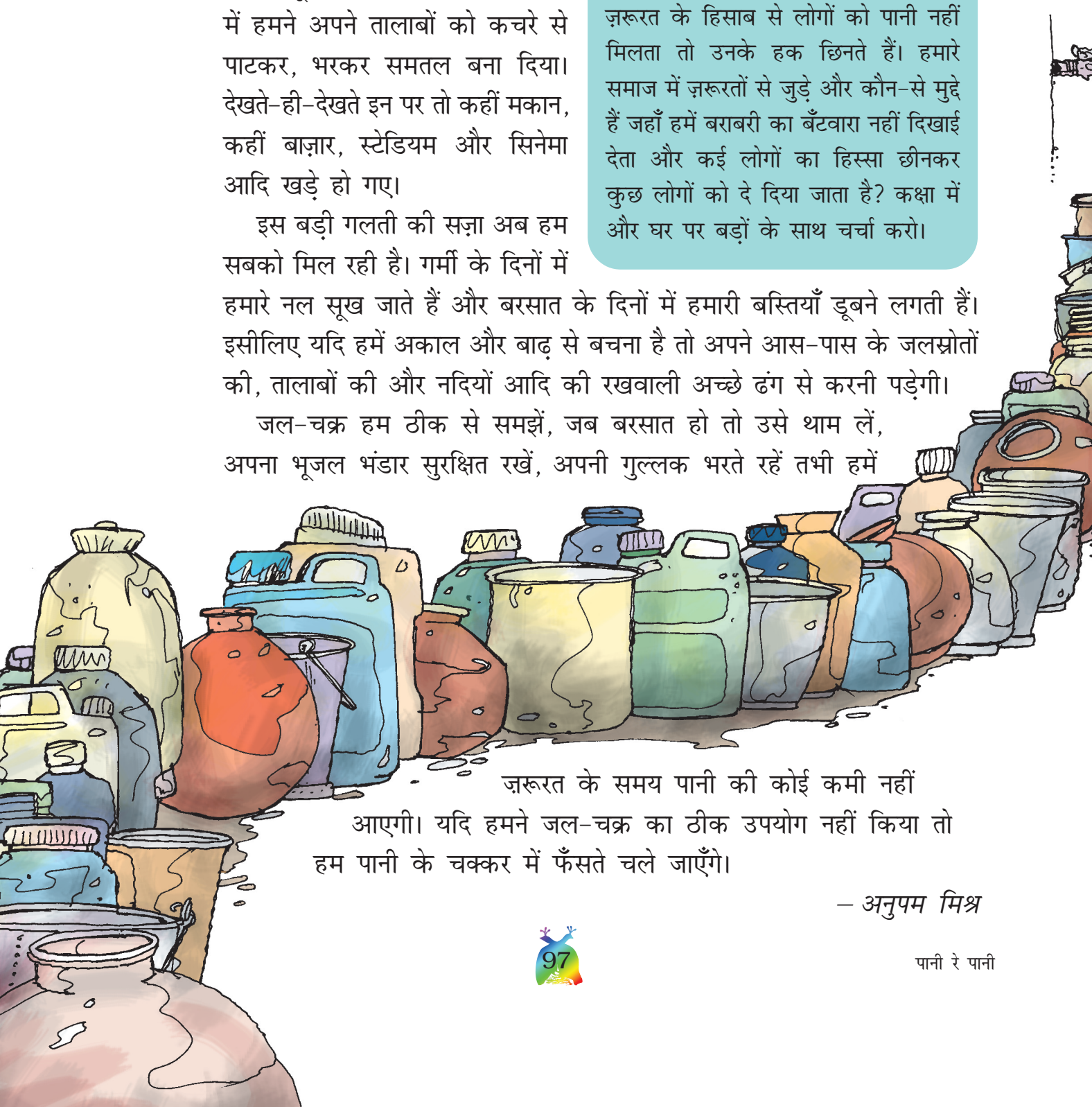

तुम्हारे आस-पास

अपने आस-पास के बड़ों से पूछकर पता लगाओ–

1. तुम्हारे घर में पानी कहाँ से आता है?
2. तुम्हारे घर का मैला पानी बहकर कहाँ जाता है?
3. (क) तुम्हारे इलाके में धरती के अंदर का पानी कितने फ़ीट या कितने हाथ नीचे है?
   (ख) आज से पंद्रह वर्ष पहले यह पानी कितना नीचा था?

अनुमान लगाओ

पाठ के आधार पर बताओ–

1. अपने घर के नल के पाइप में मोटर लगवाना दूसरों का हक छीनने के बराबर है। लेखक ऐसा क्यों मानते हैं?
2. बड़ी संख्या में इमारतें बनने से बाढ़ और अकाल का खतरा कैसे पैदा होता है?
3. धरती की गुल्लक किन-किन साधनों से भरती है?

यदि हाँ तो...

1. क्या तुम्हारे इलाके में कभी बाढ़ आई है? यदि हाँ, तो उसके बारे में लिखो।
2. क्या तुम्हारे घर में पानी कुछ ही घंटों के लिए आता है? यदि हाँ, तो बताओ कि कैसे तुम्हारे परिवार की दिनचर्या नल में पानी आने के साथ बँधी होती है?
3. क्या तुम्हारे मोहल्ले में रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरी करने के लिए लोगों को पानी खरीदना पड़ता है? यदि हाँ, तो बताओ कि तुम्हारे घर में रोज़ औसतन कितने लीटर पानी खरीदा जाता है? इस पर कितना खर्चा होता है?

संकट क्यों?

1. पाठ में पानी के संकट के किस प्रमुख कारण की बात की गई है?
2. पानी के संकट का एक और मुख्य कारण पानी की फ़िज़ूलखर्ची भी है। कक्षा में पाँच-पाँच के समूह में बातचीत करो और बताओ कि अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पानी की बचत करने के लिए तुम क्या-क्या उपाय कर सकती हो?
3. जितना उपलब्ध है, उससे कहीं ज़्यादा खर्च करने से पानी का संकट उत्पन्न होता है। क्या यही बात हम बिजली के संकट के बारे में भी कह सकते हैं?

पानी का चक्कर-भाषा का चक्कर

1. पानी की समस्या या बचत से संबंधित पोस्टर और नारे तैयार करो। यह काम तुम चार-चार के समूह में कर सकती हो।
2. "पानी की बर्बादी, सबकी बर्बादी" इस नारे में 'बर्बादी' शब्द का एक अर्थ है या दो अलग अर्थ हैं? सोचो।
3. पानी हमारी ज़िंदगी में महत्वपूर्ण तो है ही, मुहावरों की दुनिया में भी उसकी खास जगह है। पानी से संबंधित कुछ मुहावरे इकट्ठे करो और उनका उचित संदर्भ में प्रयोग करो।

13 स्वामी की दादी



बैठक और भोजन-कक्ष के बीच, कम हवादार अँधेरे गलियारे की बंद-सी कोठरी में स्वामीनाथन की दादी अपने सारे सामान के साथ रहती थीं। उनका सामान था—पाँच दरियों, तीन चादरों, पाँच तकियों वाला भारी-भरकम बिस्तर, पटसन के रेशे का बना एक वर्गाकार बक्सा और लकड़ी का एक छोटा बक्सा जिसमें ताँबे के सिक्के, इलायची, लौंग और सुपारी पड़े रहते थे।

रात के भोजन के बाद स्वामीनाथन दादी के पास उनकी गोद में सिर रखे लौंग, इलायची की गंध भरे वातावरण में अपने को बहुत प्रसन्न और सुरक्षित महसूस कर रहा था।

बड़ी प्रसन्नता से भरकर वह बोला, "ओह दादी! तुम नहीं जानती, राजम कितनी ऊँची चीज़ है।" उसने दादी को राजम और मणि की पहले दुश्मनी और फिर दोस्ती की कहानी कह सुनाई।

"तुम्हें पता है उसके पास सचमुच की पुलिस की वर्दी है," स्वामीनाथन बोला।

"सच ...? उसे पुलिस की वर्दी क्यों चाहिए?" दादी ने पूछा।

"उसके पिता पुलिस अधीक्षक हैं। वह यहाँ की पुलिस के सबसे बड़े अफ़सर हैं।" दादी काफ़ी प्रभावित हुईं। "उनका सच में काफ़ी बड़ा दफ़्तर होगा।" उन्होंने कहा। फिर उन्होंने उन दिनों की कहानी सुनानी शुरू की जब स्वामीनाथन के दादा रौबदार सब-मजिस्ट्रेट थे, जिनके दफ़्तर में पुलिसवाले काँपते हुए खड़े रहते थे। उनसे डरकर खूँखार से खूँखार डाकू तक भाग खड़े होते थे। स्वामीनाथन अधीर होकर उसकी कहानी खत्म होने का इंतज़ार करने लगा लेकिन दादी बोलती ही गईं, इधर-उधर भटकती हुई और अलग-अलग समय पर घटी घटनाओं को गड्डमड्ड करती हुई।







"बस काफ़ी है दादी" उसने रूखे स्वर में कहा, "मैं तुम्हें राजम के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। जानती हो, उसे गणित में कितने नंबर मिलते हैं?"

"सारे नंबर मिलते होंगे। है न?" दादी ने पूछा।

"अरे नहीं, उसे सौ में से नब्बे मिलते हैं।"

"चलो अच्छा है लेकिन तुम्हें भी मेहनत करके उसकी तरह नंबर लेने चाहिए... तुम्हें पता है तुम्हारे दादा कभी-कभी ऐसे उत्तर लिखते थे कि परीक्षकों को भी चकित कर देते थे। किसी सवाल का जवाब देने में वे दूसरों के मुकाबले दसवाँ हिस्सा वक्त लेते थे। और फिर उनके जवाब इतने शानदार होते थे कि कभी-कभी उनके अध्यापक उन्हें दो सौ नंबर तक दे देते थे।... जब उन्होंने एम.ए. किया तो उन्हें इतना बड़ा मैडल मिला था। मैं कई सालों तक उसे गले में पहनती रही। पता नहीं, मैंने कब उसे उतारा ...। हाँ, जब तुम्हारी बुआ पैदा हुई ...। नहीं, तुम्हारी बुआ नहीं, तुम्हारे पिता। याद आया, तब बच्चा दस दिन का था। अरे नहीं, मैंने पहले ठीक कहा था। तुम्हारी बुआ ही पैदा हुई थीं। पता है, वह मैडल अब कहाँ है? मैंने वह तुम्हारी बुआ को दिया और उस बेवकूफ़ ने उसे गलवाकर चार चूड़ियाँ बनवा लीं। और वह भी इतनी मामूली-सी चूड़ियाँ कि...। मैं हमेशा कहती रही हूँ कि हमारे परिवार में उस जैसा महामूर्ख कोई नहीं, और...।"



"अब बस भी करो दादी! तुम बेकार की पुरानी कहानियाँ सुनाती रहती हो। क्या तुम राजम के बारे में नहीं सुनना चाहतीं?"

"हाँ, हाँ, बोलो।"

"दादी, जब राजम छोटा-सा लड़का था तो उसने शेर मारा था।"

"सच? बड़ा बहादुर लड़का है।"

"तुम यह बात मुझे खुश करने के लिए कह रही हो। तुम्हें यकीन नहीं हुआ होगा।" स्वामीनाथन ने बड़े उत्साह से कहानी शुरू की, "राजम के पिता एक जंगल में डेरा डाले हुए थे। राजम उनके साथ था। अचानक दो शेर उन पर झपटे और एक ने पीछे से हमला करके पिता को गिरा दिया। दूसरे ने राजम का पीछा



किया। राजम एक झाड़ी के पीछे छुप गया और वहीं से गोली चलाकर शेर को मार डाला। दादी! क्या तुम सो गईं?" उसने कहानी खत्म होने पर पूछा।

"नहीं बेटा, सुन रही हूँ।"

"अच्छा बताओ, कितने शेर आए थे?"

"दो शेर राजम पर झपटे थे।" दादी ने जवाब दिया।

स्वामीनाथन दादी के गलत जवाब से चिढ़ गया। "मैं तुम्हें इतनी ज़रूरी बातें बता रहा हूँ और तुम नींद में न जाने क्या-क्या ऊलजलूल कल्पना किए जा रही हो। अब मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगा। मैं जानता हूँ, तुम क्यों ऐसा कर रही हो। तुम राजम को पसंद नहीं करतीं।"



"नहीं, नहीं, वह तो बहुत प्यारा लड़का है।" दादी ने बड़े विश्वास से कहा, उसने राजम को देखा तक नहीं था। स्वामीनाथन खुश हो गया। दूसरे ही क्षण उसके मन में एक नया संदेह पैदा हुआ। "दादी, शायद तुम्हें शेर की कहानी पर विश्वास नहीं हो रहा है।"

"मैं एक-एक शब्द पर विश्वास करती हूँ," दादी ने स्वर में मिठास भरकर कहा। स्वामीनाथन को इससे खुशी हुई, लेकिन उसने चेतावनी के तौर पर जोड़ा, "जो भी उसे झूठा कहेगा वह उसे गोली मार देगा।"

दादी ने इसका समर्थन किया और हरिश्चंद्र की कहानी सुनाने की बात कही जिसने वचन का पालन करने के लिए सिंहासन, पत्नी और बच्चे को खो दिया और अंत में उसे सब कुछ वापस मिल गया। उसने कहानी आधी ही सुनाई थी कि स्वामीनाथन खर्राटे लेने लगा। दादी भी रुक-रुककर बोलने लगीं, फिर वह भी सो गईं।

– आर. के. नारायण

अनुवाद : मस्तराम कपूर



कहानी से

1. "सच? राजम बड़ा बहादुर लड़का है।" स्वामी को क्यों लगा कि दादी ने यह बात उसे खुश करने के लिए कही?
2. मैडल से चूड़ियाँ बनवा लेने पर दादी ने बुआ को महामूर्ख क्यों माना?
3. पाठ के आधार पर दादी या स्वामी के स्वभाव, आदतों आदि के बारे में तुम्हें क्या पता चलता है? किसी एक के बारे में दस-बारह वाक्यों में लिखो।

तुम्हारी समझ से

1. स्वामी ने राजम को 'ऊँची चीज़' माना। क्या तुम स्वामी की राय से सहमत हो? अपने उत्तर के कारण लिखो।
2. स्वामी का अपनी दादी के साथ कैसा रिश्ता था? तीन-चार वाक्यों में लिखो।

कहानी और तुम

1. (क) "स्वामीनाथन के दादा रौबदार सब-मजिस्ट्रेट थे।"
   किसी व्यक्ति का रौब किन बातों से पता चलता है?
   (ख) क्या तुम्हारे आस-पास कोई रौबदार व्यक्ति है? शब्दों के ज़रिये उसका खाका खींचो।
2. "स्वामीनाथन दादी के पास ... बहुत प्रसन्न और सुरक्षित महसूस कर रहा था।"
   तुम कब असुरक्षित महसूस करती हो?
3. तुम इन हालात में कैसा महसूस करती हो —
   (क) दोस्त के घर में (ख) जब तुम पहली बार किसी के घर जाती हो (ग) रेलगाड़ी या बस में किसी सफ़र पर (घ) जब तुम मुख्याध्यापक के कमरे में जाती हो

पता करो

1. सब-मजिस्ट्रेट कौन होता है? क्या वह पुलिस विभाग में होता है?
2. तुम्हारा घर या स्कूल किस थाने के अंतर्गत आता है? थाने में कौन-कौन से पद होते हैं? उन व्यक्तियों के नाम भी पता करो जो इन पदों पर हैं। नीचे दी गई तालिका में इकट्ठा की गई जानकारी को दर्ज करो।

थाने का नाम- . . . . . .

पद	व्यक्ति का नाम
. . . . .	. . . . .
. . . . .	. . . . .
. . . . .	. . . . .

दादी का बक्सा

"उसका (दादी) सामान था—पाँच दरियाँ, तीन चादरें .... लकड़ी का एक छोटा बक्सा जिसमें ताँबे के सिक्के, इलायची, लौंग और सुपारी पड़े रहते थे।"



1. दादी अपने बक्से में इलायची, लौंग और सुपारी क्यों रखती होंगी?
2. क्या तुम्हारे घर में इनका इस्तेमाल होता है? किस-किस तरह से होता है?
3. ताँबे के सिक्के बनाने के लिए किस-किस धातु का इस्तेमाल होता है?
4. सिक्के कौन-कौन सी धातु के बने हो सकते हैं?

शब्दों की बात

नीचे पहले स्तंभ के रेखांकित विशेषणों और दूसरे स्तंभ के शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो। तुम एक से अधिक वाक्यों का सहारा भी ले सकती हो।

ऊलजलूल कल्पना	चेतावनी
रूखा स्वर	मिठास
खूँखार डाकू	समर्थन

नीचे कहानी से कुछ वाक्यों के अंश दिए गए हैं। इनमें जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उनका लिंग पहचानो और लिखो।

पुलिस की वर्दी	काफ़ी बड़ा दफ़्तर
ताँबे के सिक्के	अपने सारे सामान
दसवाँ हिस्सा	उस जैसा महामूर्ख

डाकिए की कहानी, कँवरसिंह की ज़ुबानी

शिमला की माल रोड पर जनरल पोस्ट ऑफ़िस है। उसी पोस्ट ऑफ़िस के एक कमरे में डाक छाँटने का काम चल रहा है। सुबह के 11:30 बजे हैं, खिड़की से गुनगुनी धूप छनकर आ रही है। इस धूप का मज़ा लेते हुए दो पैकर और तीन महिला डाकिया फटाफट डाक छाँटने का काम कर रहे हैं। वहीं पर मैंने सरकार से पुरस्कार पाने वाले डाकिया कँवरसिंह जी से बात की। यही बातचीत आगे दी जा रही है।

- **आपका शुभ नाम?**

  मेरा नाम कँवरसिंह है। मैं हिमाचल प्रदेश के शिमला ज़िले के नेरवा गाँव का निवासी हूँ। मेरी उम्र पैंतालीस साल है।
- **आपके परिवार में कौन-कौन हैं? उनके बारे में कुछ बताइए।**

  मेरे चार बच्चे हैं। तीन लड़कियाँ और एक लड़का। दो लड़कियों की शादी हो चुकी है। मेरा एक और बेटा भी था। वह मेरे गाँव में एक पहाड़ी से लकड़ियाँ लाते हुए गिर गया जिससे उसकी मौत हो गई।
- **आपके बेटे के साथ जो हुआ, उसका हमें बहुत दुख है। आपके इलाके में इस तरह की घटनाएँ क्या अक्सर होती हैं?**

  जी, ऐसी घटनाओं का होना असाधारण नहीं है। यहाँ हर साल तिरछी ढलानों या ढांकों से घास काटते हुए कई औरतें गिर कर मर जाती हैं। फिर भी यहाँ ऐसे ही रास्तों से चलना पड़ता है क्योंकि दूसरे कोई रास्ते होते ही नहीं। हमारे गाँव में अभी तक बस नहीं पहुँच पाती है। हिमाचल में हज़ारों ऐसे गाँव हैं जहाँ पैदल चलकर ही पहुँच सकते हैं।
- **फिर आपके बच्चे पढ़ने कैसे जाते होंगे?**

  मेरे बच्चे गाँव के स्कूल में पढ़ने जाते हैं। स्कूल लगभग पाँच किलोमीटर दूर है। मेरी एक लड़की दसवीं तक पढ़ी है, दूसरी बारहवीं तक। तीसरी लड़की बारहवीं कक्षा में पढ़ रही है। बेटा दसवीं में पढ़ता है।





- **आप जहाँ काम करते हैं वहाँ आपके अलावा और कौन-कौन हैं? क्या आपको डाकिया ही कहकर बुलाते हैं?**
  पहले मैं भारतीय डाक सेवा में ग्रामीण डाक सेवक था। अब मैं पैकर बन गया हूँ। पर हूँ वही नीली वर्दी वाला डाक सेवक।
- **डाक सेवक को करना क्या-क्या होता है?**
  मुझे ! मुझे बहुत कुछ करना होता है। चिट्ठियाँ, रजिस्टरी पत्र, पार्सल, बिल, बूढ़े लोगों की पेंशन आदि छोड़ने गाँव-गाँव जाता हूँ।
- **क्या यह सब अभी भी करना पड़ता है? क्योंकि अब तो सूचना और संदेश देने के बहुत से नए तरीके आ गए हैं।**
  शहरों में भले ही आज संदेश देने के कई साधन आ गए हैं, जैसे फ़ोन, मोबाइल, ई-मेल वगैरह, लेकिन गाँव में तो आज भी संदेश पहुँचाने का सबसे बड़ा ज़रिया डाक ही है। इसलिए गाँव में लोग डाकिए का बड़ा आदर और सम्मान करते हैं। अपनी चिट्ठी आदि पाने के लिए डाकिए का इंतजार करते हैं।
- **हमने सुना है कि हमारी डाक सेवा दुनिया की सबसे बड़ी डाक सेवा है, यह भला कैसे?**
  सुना तो आपने बिलकुल ठीक है। हमारे देश की डाक सेवा आज भी दुनिया की सबसे बड़ी डाक सेवा है और सबसे सस्ती भी। केवल पाँच रुपये में देश के किसी भी कोने में हम चिट्ठी भेज सकते हैं। पोस्टकार्ड तो केवल पचास पैसे का ही है। यानी पचास पैसे में भी हम देश के हर कोने में अपना संदेश भेज सकते हैं।
- **आपको अपनी नौकरी में मज़ा तो बहुत आता होगा।**
  मुझे अपनी नौकरी बहुत अच्छी लगती है। जब मैं दूर नौकरी करने वाले सिपाही का मनीऑर्डर लेकर उसके घर पहुँचाता हूँ तो उसके बूढ़े माँ-बाप का खुशी भरा चेहरा देखते ही बनता है। ऐसे ही जब किसी का रजिस्टरी पत्र पहुँचाता हूँ जिसमें कभी रिज़ल्ट, कभी नियुक्ति पत्र होता है तो लोग बहुत खुश होते हैं। बूढ़े दादा और बूढ़ी नानी तो पेंशन के पैसे मिलने पर बहुत ही खुश होते हैं। छह महीनों तक वे मेरा इसके लिए इंतज़ार करते हैं। हिमाचल में बूढ़े लोगों को पेंशन हर छह महीनों के बाद इकट्ठी ही दी जाती है।



- **आप क्या शुरू से इसी डाकघर में काम कर रहे हैं?**

  शुरू में तो मैंने लाहौल स्पीति ज़िले के किब्बर गाँव में तीन साल तक नौकरी की है। यह हिमाचल का सबसे ऊँचा गाँव है। इसके बाद पाँच साल तक इसी ज़िले के काज़ा में और पाँच साल तक किन्नौर ज़िले में नौकरी की है। उस वक्त इन गाँव में टेलीफोन नहीं थे। बसें भी सिर्फ़ मुख्यालयों तक ही जाती थीं। अभी भी कई ऐसे गाँव हैं जहाँ न तो बस जाती है और न ही वहाँ टेलीफोन है। ऐसी जगह में ग्रामीण डाक सेवक का बहुत मान किया जाता है।

- **आप पहाड़ी इलाके में रहते हैं। ज़ाहिर है डाक पहुँचाना आसान काम तो नहीं होगा।**

  हाँ, मुश्किलें तो आती ही हैं। जब मैं किन्नौर ज़िले के मुख्यालय रिकांगपिओ में नौकरी करता था तो सुबह छह बजे मेरी ड्यूटी शुरू हो जाती थी। मैं छह बजे सुबह शिमला जाने वाली बस में डाक का बोरा रखता था और रात को आठ बजे शिमला से आने वाली बस से डाक का बोरा उतारता था। पैकर को ये सब काम करने पड़ते हैं। किन्नौर और लाहौल स्पीति हिमाचल प्रदेश के बहुत ठंडे तथा ऊँचे जिले हैं। इन ज़िलों में अप्रैल महीने में भी बर्फ़बारी हो जाती है। बर्फ़ में चलते हुए पैरों को ठंड से बचाना पड़ता है। वरना स्नोबाइट हो जाते हैं जिससे पैर नीले पड़ जाते हैं और उनमें गैंगरीन हो जाती है जिससे उँगलियाँ झड़ सकती हैं। इन जिलों में मुझे एक घर से दूसरे घर तक डाक पहुँचाने के लिए लगभग 26 किलोमीटर रोज़ाना चलना पड़ता था। हिमाचल में एक गाँव से दूसरे गाँव की दूरी लगभग चार या पाँच किलोमीटर तक होती है। हिमाचल के गाँव छोटे-छोटे होते हैं। एक गाँव में बस आठ से दस या कभी-कभी छह-सात घर ही होते हैं। इसीलिए चलना काफ़ी पड़ता है। चलना तो खैर हमारी आदत में ही शामिल हो चुका है ग्रामीण डाकिए की ज़िंदगी में तो चलना ही चलना है।



- **आपने बताया था कि पहले आप डाक सेवक थे, अब पैकर हैं, इसके आगे भी कोई प्रमोशन है क्या?**

  पैकर के बाद डाकिया बन सकते हैं बस एक इम्तिहान पास करना पड़ता है। अभी तो काम के हिसाब से हमारा वेतन काफ़ी कम रहता है। सारा दिन कुर्सी पर बैठकर काम करने वाले बाबू का वेतन कहीं ज़्यादा होता है। पैकर का वेतन बाबू के जितना ही हो जाता है। अब तो डाकिए की नौकरी में





लगना भी बहुत मुश्किल हो चुका है। हममें से जितने डाकिए रिटायर हो चुके हैं उनकी जगह नए डाकियों को नहीं रखा जा रहा है। इससे पुराने डाकियों पर काम का बोझ दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। न जाने, आने वाला समय कैसा होगा?

- **काम के दौरान कभी कोई बहुत खास बात हुई हो?**

एक घटना आपको सुनाता हूँ। मेरा तबादला शिमला के जनरल पोस्ट ऑफ़िस में हो गया था। वहाँ मुझे रात के समय रेस्ट हाउस और पोस्ट ऑफ़िस चौकीदारी का काम दिया गया था। यह 1998 की बात है। 29 जनवरी को रात लगभग साढ़े दस बजे का समय था। बाहर से किसी ने पोस्ट ऑफ़िस का दरवाज़ा खटखटाया। मैंने पूछा 'कौन है?' जबाव आया 'दरवाज़ा खोलो तुम से बात करनी है'। मैंने दरवाज़ा खोला तो अचानक पाँच-छह लोग अंदर घुसे और मुझे पीटना शुरू कर दिया। मैंने पूछा क्यों पीट रहे हैं तो उन्होंने कोई जबाव नहीं दिया। सारे ऑफ़िस की लाइटें बंद कर दीं। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता मेरे सिर पर किसी भारी चीज़ से कई बार मारा जिससे मेरा सिर फट गया। मैं लगातार चिल्लाता रहा। उसके बाद मैं बेहोश हो गया और मुझे कुछ भी पता न चला। अगले दिन जब मुझे होश आया तो मैं शिमला के इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज के अस्पताल में दाखिल था। सिर में भयंकर दर्द हो रहा था। उन दिनों मेरा 17 साल का बेटा मेरे साथ ही रहता था। उसी से पता चला कि मेरे चिल्लाने की आवाज़ सुनकर लड़का और ऑफ़िस के दूसरे लोग जो नज़दीक ही रहते थे, दरवाज़ों के शीशे तोड़कर अंदर आए और मुझे अस्पताल पहुँचाया। मेरे सिर पर कई टाँके लगे थे। उसकी वजह से आज भी मेरी एक आँख से दिखाई नहीं देता।

सरकार ने मुझे जान पर खेल कर डाक की चीज़ें बचाने के लिए 'बैस्ट पोस्टमैन' का इनाम दिया। यह इनाम 2004 में मिला। इस इनाम में 500 रुपये और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है। मैं और मेरा परिवार बहुत खुश हुए। आज भी मैं गर्व से कहता हूँ - "मैं बेस्ट पोस्टमैन हूँ।"

–प्रतिमा शर्मा

14 छोटी-सी हमारी नदी

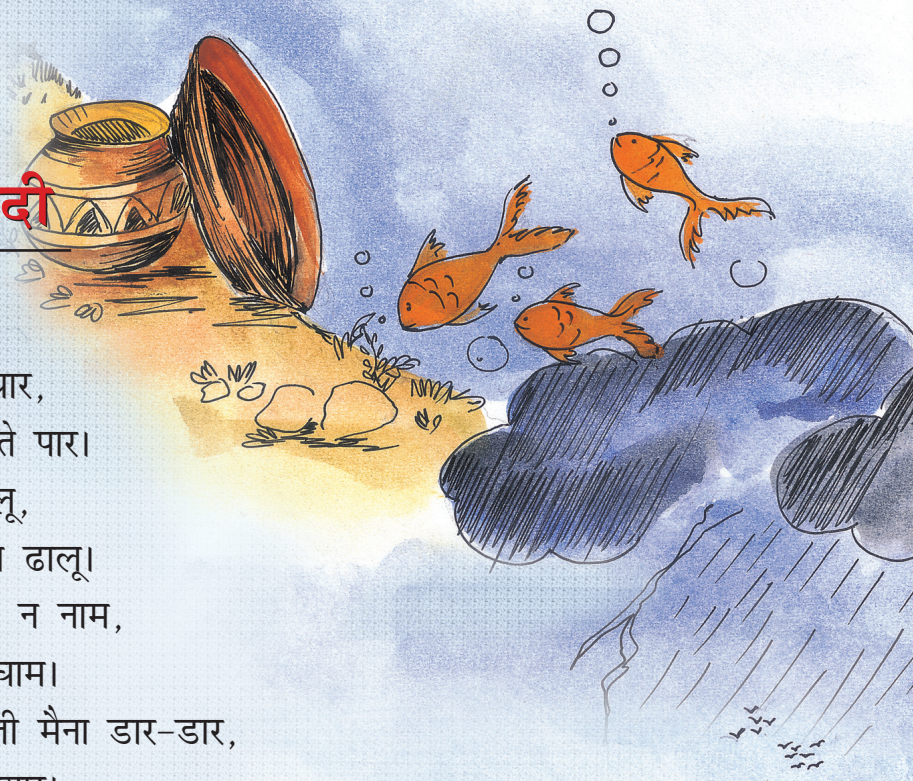

छोटी-सी हमारी नदी टेढ़ी-मेढ़ी धार,
गर्मियों में घुटने भर भिगो कर जाते पार।
पार जाते ढोर-डंगर, बैलगाड़ी चालू,
ऊँचे हैं किनारे इसके, पाट इसका ढालू।
पेटे में झकाझक बालू कीचड़ का न नाम,
काँस फूले एक पार उजले जैसे घाम।
दिन भर किचपिच-किचपिच करती मैना डार-डार,
रातों को हुआँ-हुआँ कर उठते सियार।
अमराई दूजे किनारे और ताड़-वन,
छाँहों-छाँहों टोला बसा है सघन।
कच्चे-बच्चे धार-कछारों पर उछल नहा लें,
गमछों-गमछों पानी भर-भर अंग-अंग पर ढालें।
कभी-कभी वे साँझ-सकारे निबटा कर नहाना,
छोटी-छोटी मछली मारें आँचल का कर छाना।
बहुएँ लोटे-थाल माँजती रगड़-रगड़ कर रेती,
कपड़े धोतीं, घर के कामों के लिए चल देतीं।
जैसे ही आषाढ़ बरसता, भर नदिया उतराती,
मतवाली-सी छूटी चलती तेज़ धार दन्नाती।
वेग और कलकल के मारे उठता है कोलाहल,
गँदले जल में घिरनी-भँवरी भँवराती है चंचल।
दोनों पारों के वन-वन में मच जाता है रोला,
वर्षा के उत्सव में सारा जग उठता है टोला।

-रवींद्रनाथ ठाकुर

तुम्हारी नदी

1. तुम्हारी देखी हुई नदी भी ऐसी ही है या कुछ अलग है? अपनी परिचित नदी के बारे में छूटी हुई जगहों पर लिखो–

   ..... सी हमारी नदी .... धार

   गर्मियों में ...., ... जाते पार

2. कविता में दी गई इन बातों के आधार पर अपनी परिचित नदी के बारे में बताओ–

   • धार • पाट • बालू • कीचड़ • किनारे • बरसात में नदी

3. तुम्हारी परिचित नदी के किनारे क्या-क्या होता है?
4. तुम जहाँ रहते हो, उसके आस-पास कौन-कौन सी नदियाँ हैं? वे कहाँ से निकलती हैं और कहाँ तक जाती हैं? पता करो।

कविता के बाहर

1. इसी किताब में नदी का ज़िक्र और किस पाठ में हुआ है? नदी के बारे में क्या लिखा है?
2. नदी पर कोई और कविता खोजकर पढ़ो और कक्षा में सुनाओ।
3. नदी में नहाने के तुम्हारे क्या अनुभव हैं?
4. क्या तुमने कभी मछली पकड़ी है? अपने अनुभव साथियों के साथ बाँटो।

ये किसकी तरह लगते हैं?

1. नदी की टेढ़ी-मेढ़ी धार?
2. किचपिच -किचपिच करती मैना?
3. उछल-उछल के नदी में नहाते कच्चे-बच्चे?

कविता और चित्र

- कविता के पहले पद को दुबारा पढ़ो। वर्णन पर ध्यान दो। इसे पढ़कर जो चित्र तुम्हारे मन में उभरा उसे बनाओ। बताओ चित्र में तुमने क्या-क्या दर्शाया?

कविता से

1. इस कविता के पद में कौन-कौन से शब्द तुकांत हैं? उन्हें छाँटो।
2. किस शब्द से पता चलता है कि नदी के किनारे जानवर भी जाते थे?
3. इस नदी के तट की क्या खासियत थी?
4. अमराई दूजे किनारे ..... चल देतीं।

   कविता की ये पंक्तियाँ नदी किनारे का जीता-जागता वर्णन करती हैं। तुम भी निम्नलिखित में से किसी एक का वर्णन अपने शब्दों में करो–

   - हफ़्ते में एक बार लगने वाला हाट
   - तुम्हारे शहर या गाँव की सबसे ज़्यादा चहल-पहल वाली जगह

- तुम्हारे घर की खिड़की या दरवाज़े से दिखाई देने वाला बाहर का दृश्य
- ऐसी जगह का दृश्य जहाँ कोई बड़ी इमारत बन रही हो

5. तेज़ गति शोर मोहल्ला धूप किनारा घना

ऊपर लिखे शब्दों के लिए कविता में कुछ खास शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। उन शब्दों को नीचे दिए अक्षरजाल में ढूँढ़ो।

घा	म		वे	
			ग	
		टो		
	रो	ला		पा
स	घ	न		ट

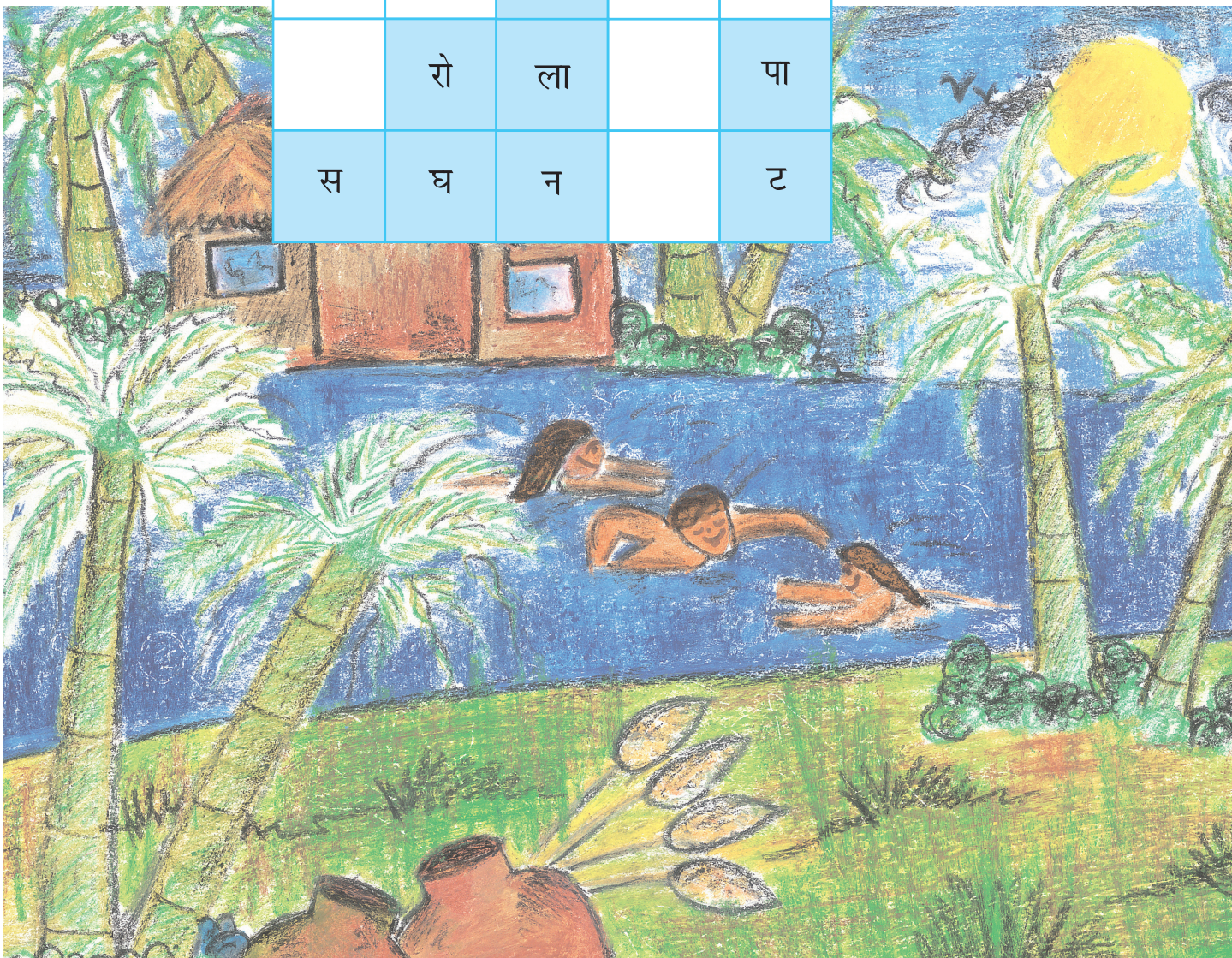

15 फ़सलों के त्योहार

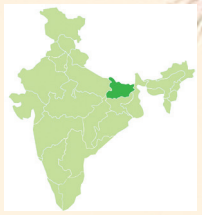

सारा दिन बोरसी के आगे बैठकर हाथ तापते हुए गुज़र जाता है। कहाँ तो खिचड़ी के समय धूप में गरमाहट की शुरुआत होनी चाहिए और यहाँ हम सूरज के इंतज़ार में आस लगाए बैठे हुए हैं। पूरे दस दिन हो गए सूरज लापता है। आज सुबह तो रज़ाई से निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

बाहर देखने से तो समय का अंदाज़ बिलकुल नहीं हो रहा लेकिन घर में हो रही चहल-पहल अब पता चल रही है। रह-रहकर कानों में कभी चाँपाकल के चलने और पानी के गिरने की आवाज़ तो कभी किसी के हाँक लगाने की आवाज़ आ रही थी, "जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?"

"आज ई लोग के उठे के नईखे का? बोल जल्दी तैयार होखस।"

अब तो उठने में ही भलाई है।

नहा-धोकर हम सभी एक कमरे में इकट्ठा हुए। दादा और चाचा ने क्या सफ़ेद चकाचक माँड़ लगी धोती और कुर्ता पहना हुआ है! "खिचड़ी में अइसन ठाड़ हम पहिले कब्बो ना देखनीं सारा देह कनकना दे ता!" पापा ने कहा। शायद आज धोती में उन्हें ठंड कुछ ज़्यादा लग रही है।

सामने मचिया पर खादी की सफ़ेद साड़ी पहने हुए दादी बैठी थीं। आज दादी ने अपने बाल धोए हैं—झक सफ़ेद सेमल की रुई जैसे हलके-फुलके बाल। गौर से देखने पर भी एक काला बाल नज़र नहीं आता। बिलकुल धुली-धुली सी लग रही हैं दादी। उनके सामने केले के कुछ पत्ते कतार में रखे हैं जिस पर तिल, मिट्ठा (गुड़), चावल आदि के छोटे-छोटे ढेर पड़े हुए हैं। हमें बारी-बारी से उन सभी चीज़ों को छूने और प्रणाम करने के लिए कहा गया। जब सबने ऐसा कर लिया तो उन सभी चीज़ों को एक जगह इकट्ठा करके दान दे दिया गया।

आज तो अप्पी दिदिया बुरी फँसी। उन्हें न तो चूड़ा-दही ही पसंद है और न ही खिचड़ी, पर आज तो फ़रमाइशी नाश्ता नहीं चलेगा। उन्हें दोनों ही चीज़ें खानी पड़ेंगी. .. आज खिचड़ी जो है! खिचड़ी खाने के बाद सभी ने 'गया' से आए तिल, गुड़ और

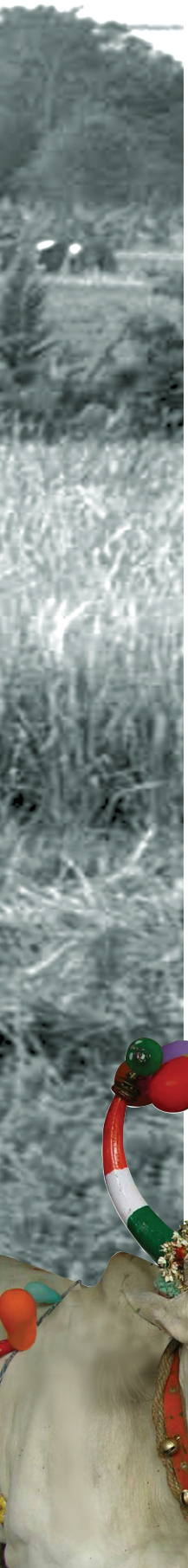

चीनी के तिलकुट को बड़े चाव से खाया। खाते-खाते मैं सोच रही थी कि कितनी अलग है न यह खिचड़ी जो अभी हम मना रहे हैं। स्कूल में हम जो खिचड़ी मनाते थे उसकी अलग ही मस्ती हुआ करती थी। छुट्टी का दिन, नाव में बैठकर गंगा नदी की सैर और फिर टापू पर बालू में दौड़ते हुए पतंग उड़ाना या उड़ाने की कोशिश करना। कितना मज़ा आता था। इधर हम पतंग उड़ाते थे और वहीं थोड़ी दूर पर गुरुजी, विमला दिद्दा, आनंद जी, झिलमिट भैया सब मिलकर ईंट से बने चूल्हे पर बड़े-बड़े कड़ाहों में खिचड़ी बनाते थे। हम भी बीच-बीच में अपनी पतंगों को सुस्ताने का मौका देते हुए मटर और प्याज छीलने बैठ जाते। वैसी खिचड़ी फिर दुबारा खाने को नहीं मिली। वाकई, ढंग कैसा भी हो, पर है ये खुशियों का त्योहार!

जनवरी माह के मध्य में भारत के लगभग सभी प्रांतों में फ़सलों से जुड़ा कोई-न-कोई त्योहार मनाया जाता है। कोई फ़सलों के तैयार हो जाने पर खुशी बाँटता है तो कुछ लोग इस उम्मीद में खुश होते हैं कि अब पाला कम होगा, सूरज की गर्मी बढ़ने से खेतों में खड़ी फ़सल तेज़ी से बढ़ेगी। सभी प्रांतों और इलाकों का अपना रंग और अपना ढंग नज़र आता है। इस दिन सब लोग अच्छी पैदावार की उम्मीद और फ़सलों के घर में आने की खुशी का इज़हार करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश में मकर संक्रांति या तिल संक्रांत, असम में बिहू, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब में लोहड़ी, झारखंड में सरहुल, गुजरात में पतंग का पर्व सभी खेती और फ़सलों से जुड़े त्योहार हैं। इन्हें जनवरी से मध्य अप्रैल तक अलग-अलग समय मनाया जाता है।

झारखंड में सरहुल बड़े जोशो-खरोश के साथ मनाया जाता है। चार दिनों तक इसका जश्न चलता रहता है।

अलग-अलग जनजातियाँ इसे अलग-अलग समय में मनाती हैं। संथाल लोग फरवरी-मार्च में, तो ऊराँव लोग इसे मार्च-अप्रैल में मनाते हैं। आदिवासी आमतौर पर प्रकृति की पूजा करते हैं। सरहुल के दिन विशेष रूप से 'साल' के पेड़ की पूजा की जाती है। यही समय है जब साल के पेड़ों में फूल आने लगते हैं और मौसम बहुत ही खुशनुमा हो जाता है। स्त्री-पुरुष दोनों ही ढोल-मंजीरे लेकर रात भर नाचते-गाते हैं। चारों ओर फैली हुई छोटी-छोटी घाटियाँ,







लंबे-लंबे साल के वृक्षों का जंगल और वहीं आस-पास बसे छोटे-छोटे गाँव। लिपे-पुते, करीने से बुहारे और सजाए गए अपने घरों के सामने लोग एक पंक्ति में कमर में बाँहें डालकर नृत्य करते हैं। अगले दिन वे नृत्य करते हुए घर-घर जाते हैं और फूलों के पौधे लगाते हैं। घर-घर से चंदा माँगने की भी प्रथा है। पर चंदे में मालूम है क्या माँगते हैं? मुर्गा, चावल और मिश्री। फिर चलता है खाने-पीने और खेलों का दौर। तीसरे दिन जाकर पूजा होती है जिसके बाद लोग अपने कानों में सरई का फूल पहनते हैं।

इसी दिन से वसंत ऋतु की शुरुआत मानी जाती है। धान की भी पूजा होती है। पूजा किया हुआ आशीर्वादी धान अगली फ़सल में बोया जाता है।

तमिलनाडु में मकर संक्रांति या फ़सलों से जुड़ा त्योहार 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन खरीफ़ की फ़सलें चावल, अरहर, मसूर आदि कटकर घरों में पहुँचती हैं और लोग नए धान कूटकर चावल निकालते हैं। हर घर में मिट्टी का नया मटका लाया जाता है जिसमें नए चावल, दूध और गुड़ डालकर उसे पकाने के लिए धूप में रख देते हैं। हल्दी शुभ मानी जाती है इसलिए साबुत हल्दी को मटके के मुँह के चारों ओर बाँध देते हैं। यह मटका दिन में साढ़े दस-बारह बजे तक धूप में रखा जाता है। जैसे ही दूध में उफान आता है और दूध-चावल मटके से बाहर गिरने लगता है तो "पोंगला-पोंगल, पोंगला-पोंगल" (खिचड़ी में उफान आ गया) के स्वर सुनाई देते हैं।



दूसरी ओर, गुजरात में पतंगों के बिना तो मकर संक्रांति का जश्न अधूरा ही माना जाएगा। इस दिन आसमान की ओर यदि नज़र उठाएँ तो शायद हर आकार और रंग-रूप की पतंगें आकाश में लहराती हुई मिलेंगी। प्रत्येक गुजराती चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या आयु का हो, पतंग उड़ाता है। हज़ारों-लाखों पतंगों से सूर्य भी ढँक-सा जाता है।





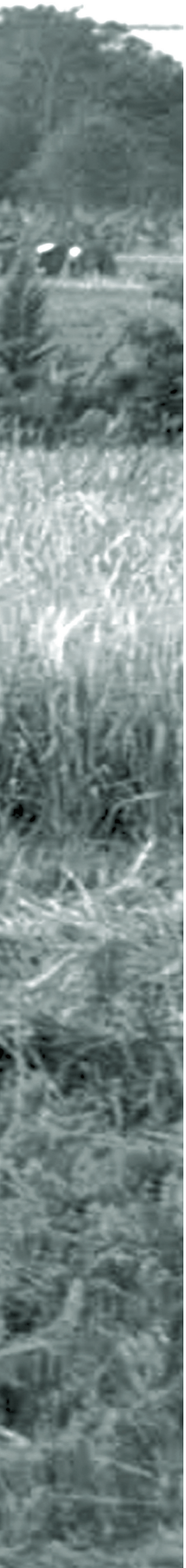



कुमाऊँ में मकर संक्रांति को घुघुतिया भी कहते हैं। इस दिन आटे और गुड़ को गूँधकर पकवान बनाए जाते हैं। इन पकवानों को तरह-तरह के आकार दिए जाते हैं जैसे-डमरू, तलवार, दाड़िम का फूल आदि। पकवान को तलने के बाद एक माला में पिरोया जाता है। माला के बीच में संतरा और गन्ने की गंडेरी पिरोई जाती है। यह काम बच्चे बहुत रुचि और उत्साह के साथ करते हैं। सुबह बच्चों को माला दी जाती है। बहुत ठंड के कारण पक्षी पहाड़ों से चले जाते हैं। उन्हें बुलाने के लिए बच्चे इस माला से पकवान तोड़-तोड़कर पक्षियों को खिलाते हैं और गाते हैं-



कौआ आओ
घुघूत आओ
ले कौआ बड़ौ
म कै दे जा सोने का घड़ौ
खा लै पूरी
म कै दे जा सोने की छुरी

इसके साथ ही जिस चीज़ की कामना हो, वह माँगते हैं।

है न कितने अलग-अलग अंदाज़ मकर संक्रांति को मनाने के। कहीं दूध, चावल और गुड़ की खीर बनती है तो कोई पाँच प्रकार के नए अनाज की खिचड़ी बनाता है। कहीं-कहीं लोगों का सैलाब नदी में स्नान के लिए उमड़ पड़ता है। लोग ठंड से ठिठुरते रहेंगे पर बर्फ़ीले पानी में कम-से-कम एक डुबकी तो ज़रूर लगाएँगे। हाल यह होता है कि इन जगहों पर तिल रखने की भी जगह नहीं होती। तिल से याद आया मकर संक्रांति के दिन पानी में तिल डालकर स्नान करना, तिल दान करना, आग में तिल डालना, तिल के पकवान बनाना विशेष महत्व रखता है। तुम्हारे घर या इलाके में इस त्योहार को कैसे मनाया जाता है? इसे खिचड़ी, पोंगल, मकर संक्रांति या कुछ और कहा जाता है? या तुम फ़सलों से जुड़े कोई और त्योहार मनाती हो? यदि तुम आपस में बात करो तो तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि कई बार एक ही इलाके में रहने वाले लोग भी इस त्योहार को अलग-अलग ढंग से मनाते हैं।



मौसम का अंदाज़

1. "खिचड़ी में अइसन जाड़ा हम पहिले कब्बो ना देखनीं।"
   यहाँ तुम 'खिचड़ी' से क्या मतलब निकाल रही हो?
2. क्या कभी ऐसा हो सकता है कि सूरज बिल्कुल ही न निकले?
   अगर ऐसा हो तो .....
   .....
   .....
   .....
   .....

   अपने साथियों के साथ बातचीत करके लिखो।
3. बाहर देखने से समय का अंदाज़ क्यों नहीं हो पा रहा था?
   जिनके पास घड़ी नहीं होती वे समय का अनुमान किस तरह से लगाते हैं?

तुम्हारी ज़ुबान

(क) "आज ई लोग के उठे के नईखे का?"
(ख) "जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?"
इन वाक्यों को अपने घर की भाषा में लिखो।

भारत तेरे रंग अनेक

1. विविधता हमारे देश की पहचान है। फ़सलों का त्योहार हमारे देश के विविध रंग-रूपों का एक उदाहरण है। नीचे विविधता के कुछ और उदाहरण दिए गए हैं। पाँच-पाँच बच्चों का समूह एक-एक उदाहरण लें और उस पर जानकारी इकट्ठी करे। (जानकारी चित्र, फ़ोटोग्राफ़, कहानी, कविता, सूचनापरक सामग्री के रूप में हो सकती है।) हर समूह इस जानकारी को कक्षा में प्रस्तुत करे।
   - भाषा
   - कपड़े
   - नया वर्ष
   - भोजन
   - लोक कला
   - लोक संगीत
2. तुम्हें कौन-सा त्योहार सबसे अच्छा लगता है और क्यों? इस दिन तुम्हारी दिनचर्या क्या रहती है?

अन्न के बारे में

(क) फ़सल के त्योहार पर 'तिल' का बहुत महत्व होता है। तिल का किन-किन रूपों में इस्तेमाल किया जाता है? पता करो।
(ख) तुम जानती हो कि तिल से तेल बनता है? और किन चीज़ों से तेल बनता है।

किसान और चीज़ों का सफ़र

किसान और खेती हममें से बहुत से लोगों की जानी-पहचानी दुनिया का हिस्सा नहीं है। विशेष रूप से शहर के ज़्यादातर लोगों को यह अहसास नहीं है कि हमारी ज़िंदगी किस हद तक इनसे जुड़ी हुई है। देश के कई हिस्सों में आज किसानों को ज़िंदा रहने के लिए बहुत मेहनत और संघर्ष करना पड़ रहा है। अगर यह जानने की कोशिश करें कि हम दिनभर जो चीज़ें खाते हैं वे कहाँ से आती हैं–तो किसानों की हमारी ज़िंदगी में भूमिका को हम समझ पाएँगे। **आलू की *पकौड़ी*, *बर्फ़ी*** और ***आइसक्रीम***– इन तीन चीज़ों के बारे में नीचे दिए गए बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए जानकारी इकट्ठी करो और 'मेरी कहानी' के रूप में उसे लिखो।

- किन चीज़ों से बनती है?
- हम तक पहुँचने का उनका सफ़र क्या है?
- किन-किन हाथों से होकर हम तक पहुँचती है?
- इस पूरे सफ़र में किन लोगों की कितनी मेहनत लगती है?

अगले वर्ष कक्षा छह में सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन के बारे में पढ़ोगी तो ऊपर लिखे सफ़र में शामिल लोगों की दिनचर्या पता करने का मौका भी मिलेगा।

खास पकवान

1. 'गया' शहर तिलकुट के लिए भी प्रसिद्ध है। हमारे देश में छोटी-बड़ी ऐसी कई जगहें हैं जो अपने खास पकवान के लिए मशहूर हैं। अपने परिवार के लोगों से पता करके उनके बारे में बताओ।
2. पिछले दो वर्षों में तुमने 'काम वाले शब्दों' के बारे में जाना। इन शब्दों को *क्रिया* भी कहते हैं क्योंकि क्रिया का संबंध कोई काम 'करने' से है। नीचे खिचड़ी बनाने की विधि दी गई है। इसमें बीच-बीच में कुछ क्रियाएँ छूट गई हैं। उचित क्रियाओं का प्रयोग करते हुए इसे पूरा करो।

छौंकना पीसना पकाना धोना परोसना भूनना

बंगाली 'खिचुरी' (5 व्यक्तियों के लिए)

सामग्री	मात्रा
अदरक	20 ग्राम
लहसुन	3 फाँके
इलायची के दाने	3 छोटी
दालचीनी	2½ से.मी. का 1 टुकड़ा
पानी	4 प्याले

मूँग दाल	½ प्याला
सरसों का तेल	3 बड़े चम्मच
तेज पत्ते	2
जीरा	½ छोटा चम्मच
प्याज़ बारीक कटा हुआ	1 मँझोला
चावल धुले हुए	1 प्याला
फूल गोभी बड़े-बड़े टुकड़ों में कटी हुई	200 ग्राम
आलू छीलकर चार-चार टुकड़ों में कटे हुए	2
मटर के दाने	½ प्याला
धनिया पिसा हुआ	1 बड़ा चम्मच
लाल मिर्च पिसी हुई	½ छोटा चम्मच
चीनी	1 छोटा चम्मच
घी	2 बड़े चम्मच
नमक और हल्दी	अंदाज़ से

विधि

इलायची, दालचीनी और लौंग में थोड़ा-थोड़ा पानी (एक छोटा चम्मच) डालते हुए .....लो। अदरक और लहसुन को इकट्ठा पीसकर पेस्ट बनाओ। दाल को कड़ाही में डालो और मध्यम आँच पर सुनहरी भूरी होने तक ..... लो। अब दाल निकाल कर ..... लो। तेल को कुकर में डालकर गरम करो। तेल गरम हो जाने पर तेजपत्ते और जीरा डालो। जीरा जब चटकने लगे तो प्याज़ डाल कर सुनहरा भूरा होने तक भूनो। अब अदरक-लहसुन का पेस्ट डालकर कुछ मिनट.....। धुली हुई दाल, चावल और सब्ज़ी डालो और अच्छी तरह मिलाओ। शेष पानी (चार प्याले) डालकर एक बार चलाओ। कुकर बंद करो। तेज़ आँच पर पूर्ण प्रेशर आने दो। अब आँच कम करके चार मिनट तक .....। भाप निकल जाने पर कुकर खोलो, मसालों का पेस्ट मिलाओ। खिचुरी पर घी, हींग, जीरा, साबुत लाल मिर्च से..... कर..... गरमागरम।

छुट्टी के दिन घर में ऐसी खिचड़ी बनाने में बड़ों की मदद करो।

खाने से जुड़ी कुछ अन्य क्रियाएँ भी सोचो।

शब्दार्थ

अचंभा- आश्चर्य
अजीब- अद्‌भुत, अनोखा
अकाल- कुसमय, अशुभ समय
अनूठा- अनोखा
अमराई- आम का बाग
अभिनय- नाटक खेलना, नकल, स्वांग
आपबीती- अपने साथ हुई घटना
आरंभ- शुरू
इज़हार- प्रकट करना, कहना
इंतज़ार- प्रतीक्षा
इम्तिहान- परीक्षा
उकेरना- पत्थर, काष्ठ आदि पर नक्काशी करना
ऊफान- उबाल ,जोश खाकर ऊपर आना
ऊलजलूल- ऊटपटांग, बेढंगा, बेसिरपैर का
कनकना- हल्की चोट से भी टूट जाने वाला, चिड़चिड़ा, तुनकमिज़ाज
कमाल- अद्‌भुत, चमत्कारिक कार्य
कशीदाकारी- कशीदे की कढ़ाई (बेल-बूटेदार)
कसूती- कर्नाटक की एक तरह की कढ़ाई
बाँस- एक लंबी घास जो शरद ऋतु में फूलती है।
कुँजड़िन- सब्ज़ी बेचने वाली
खिलाफ़- विरुद्ध, उलटा
गलियारा- सँकरा, गली जैसा रास्ता
गिड़गिड़ाना- दीन भाव से प्रार्थना करना, चिरौरी करना
गुहार- रक्षा के लिए पुकार, दुहाई
गँदला- गंदा, मैला-कुचैला
घूँस- एक तरह का बड़ा चूहा
चटकदार- शोख, चटकीला
चरवाहा- चराने का काम करने वाला
चुनौती- किसी के कथन या किए गए निर्णय आदि का औचित्य प्रमाणित करने के लिए विरोधी द्वारा दी गई ललकार
चैन- आराम
चाह- इच्छा, लालसा, प्रेम,
चाँपाकल- हैंडपंप, बरमा, बंबा
छीमी- फली, मटर की फली
जश्न- उन्माद, पागलपन
जोश-खरोश- उत्साह
ठान- करने का दृढ़ निश्चय, कार्य विशेष की तैयारी
तबाही- नाश, बरबादी
तरीका- उपाय
दस्तक- खटखटाहट,
दाखिला- प्रवेश
नईखे- नहीं है
धीरज- धैर्य
परामर्श- सलाह
परिधान- पहनने का कपड़ा
पार-नदी आदि का दूसरी ओर का किनारा
पिरोना- किसी बारीक छेद में कोई चीज डालना
बुहार- झाड़ना
बोझ- भार
बोरसी-अँगीठी
भोर- रात बीतने और सूर्य उदय होने के पहले
मुश्किल-कठिन
माहिर- कुशल
राह- मार्ग, रास्ता
राहत- आराम, सुख
रिसियाना- किसी पर बिगड़ना, क्रोध करना
लकदक- साफ़-सुथरा
लाचार- बेबस
वंश- खानदान
वक्त- समय
विख्यात- प्रसिद्ध
वाकई- सचमुच
शुक्रिया- धन्यवाद
सघन- घना, ठोस
सबूत- प्रमाण
सत्कार- आवभगत
समर्थन- साथ देना
सरासर- बिलकुल
सागर- समुद्र
साँझ- शाम
हक- अधिकार
हुक्म- आदेश
हाज़िरजवाबी- किसी बात का जवाब होशियारी के साथ तुरंत देना

किताब के सभी पाठ तुमने पढ़ लिए हैं। यहाँ एक शब्दजाल और उसके साथ पाठों के चित्र दिए जा रहे हैं। पाठों के नाम शब्द जाल में भरने हैं

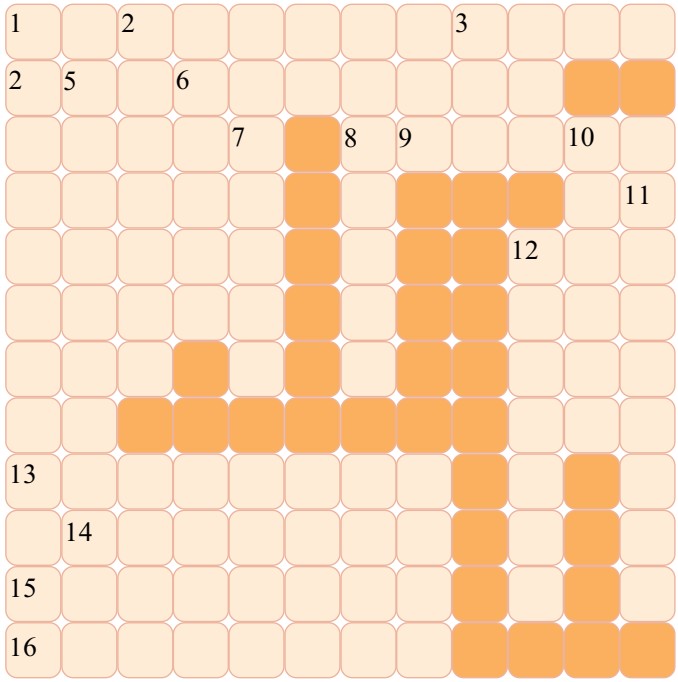

दाएँ से बाएँ

1. 
3. 
6. 
9. 
13. 
14. 
15. 
16. 

ऊपर से नीचे

2. 
4. 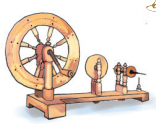
5. 
6. 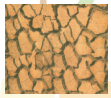
7. 
8. 
10. 
11. 
12. 

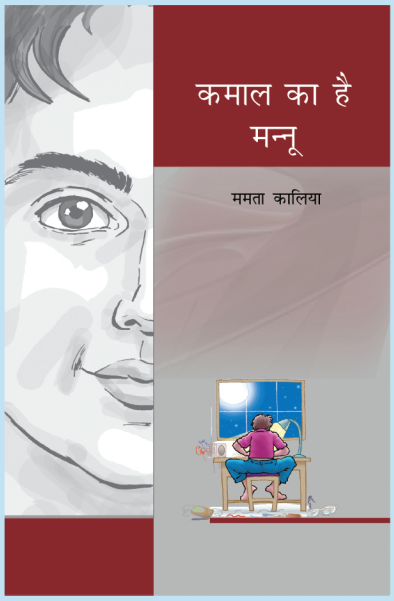

कमाल का है मन्नू

ममता कालिया

₹ 40.00 / पृष्ठ 66



घड़ियों की हड़ताल

रमेश थानवी

₹ 40.00 / पृष्ठ 62



अंडे ही अंडे

कालू राम शर्मा

₹0.00 / पृष्ठ 36

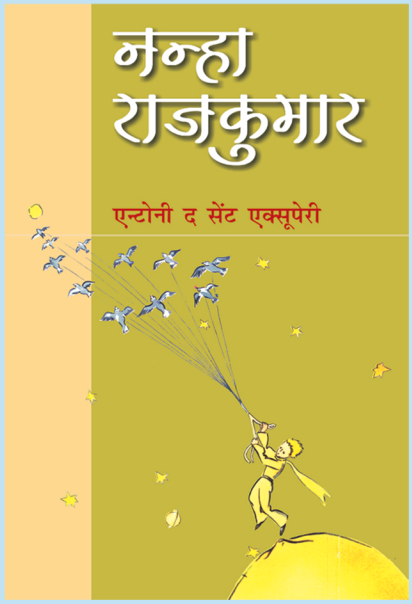

नन्हा राजकुमार

(द लिटल प्रिंस)

एन्टोनी द सेंट एक्सूपेरी

अनुवाद – देवी प्रसाद

65.00 ₹पृष्ठ 80

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।





23074
विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
ISBN 978-93-5007-212-7